

NOT FOR SALE

तांगोक्त साधना सिद्धि विशेषांक

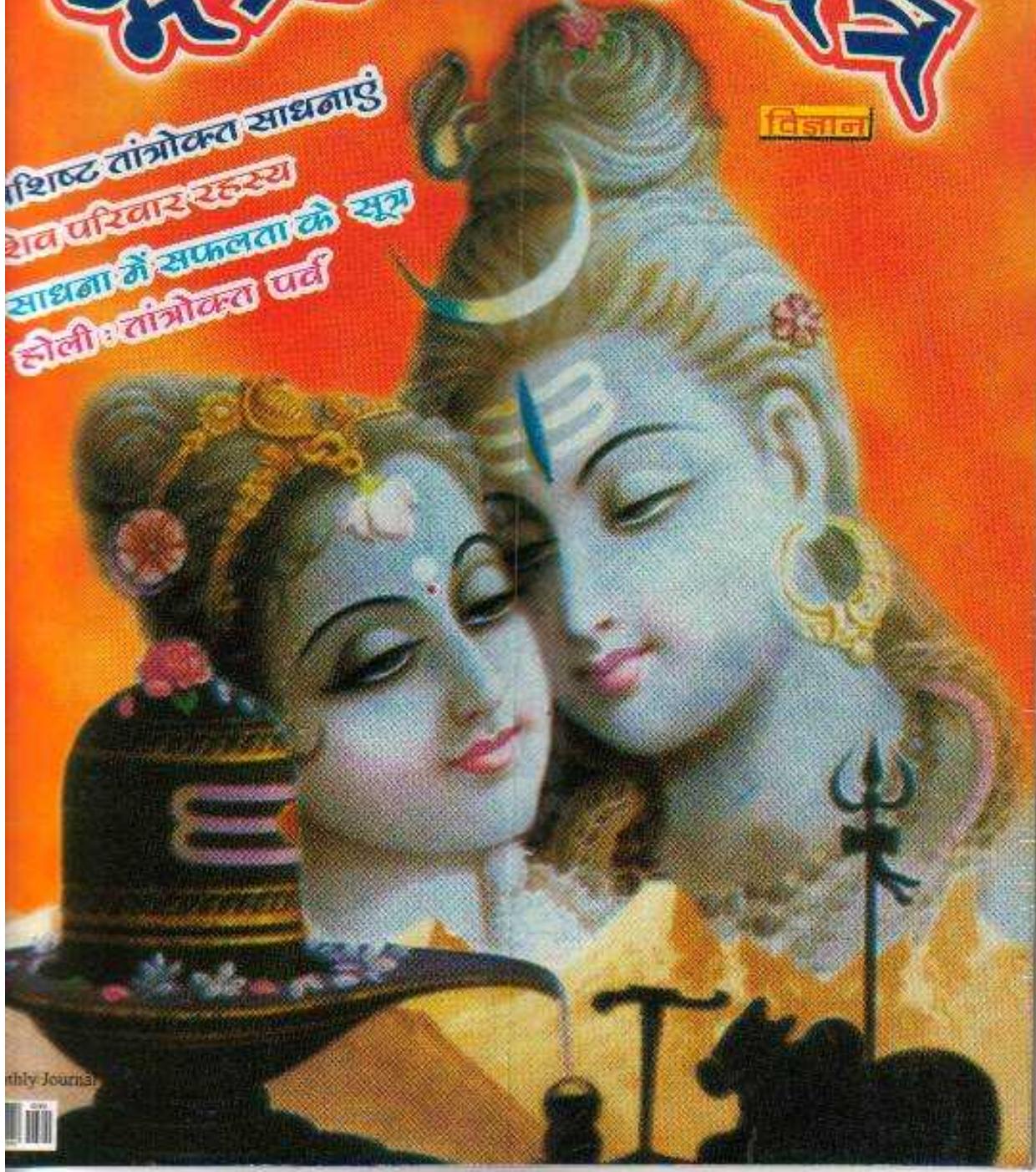
फरवरी 2002

मूल्य : 18/-

मंत्र-तंत्र-संग्रह

शिष्ट तांगोक्त साधनां
शब्द परिचार रहस्य
साधना में सफलता के सू
होली : तांगोक्त पर्व

प्रिया जल



Monthly Journal





COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

आनंद भट्टा जलाल बन्दु दिश्वरा
मानव जीवन की सर्वतोक्षीय तत्त्वति प्रगति और सामाजिक गृह विद्याओं से समर्पित वासिक गविल

श्री आद्य-प्रकाश

॥ ॐ पदम् तत्वाय नाभायणाय गुरुभ्या नमः ॥



साधना

विश्ववासिनी साधना	29
बासाही साधना	31
विशाला यक्षिणी साधना	31
बाणेशी साधना	32
बांसेशी साधना	33
फेटकारिणी साधना	34
भंगला साधना	37
साथर साधना	38
जगपति साधना	39
इन्द्रमान साधना	40
शिवगीरी साधना	41
नृथिंह साधना	46



सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन	5
गुरु वाणी	44
स्तान्म	
जिज्ञ धर्म	43
नक्षत्रों की वाणी	60
मैं समय हूँ	62
वराहमिहार	63
जीवन सरिता	64
इस मास दिनली में	80
साधक समझी	82
एक दृष्टि में	86

दर्ख 22 अंक 2
फरवरी 2002 पृष्ठ 83



विवेचन

शिव परिवार रहस्य	23
डोली महाकल्प	26
साधना और ध्यान	56



आयुर्वेद

श्वेत वाग निवारण	66
------------------	----

दीक्षा

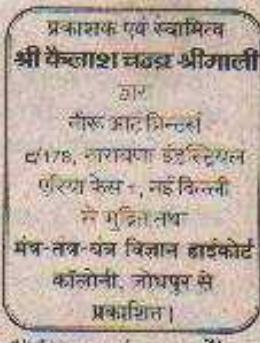
प्रत्यावर्ती दीक्षा	70
---------------------	----

स्तोत्र

शिव महिमन स्तोत्र	76
-------------------	----

विशेष

डोली आहवान	73
------------	----



प्रकाशक एवं स्वामित्व
श्री कैश्याश चतुर्भु श्रीगाली

दृश्य
लौल आदि विनाम
द/१७६, नारायण इंडिस्ट्रीज
पुल्ला केस - , नई दिल्ली
ने गुड्रो नाम
मंत्र-तत्र-यत्र विज्ञान डाउनलोड
कॉलेजी, जापपुर से
प्रकाशित।

मुख्य (आरत में)

सिर्फ ऑनलाइन 18/-

प्राप्ति ऑनलाइन 195/-

प्राप्ति ऑफलाइन 20/- 7-06730

प्राप्ति ऑफलाइन 091-432010

सिद्धाश्रम, ३३८ लाइट एन्ड वेन, दीलमुद, दिल्ली-१००३४, पान १११-२११२४८
मंत्र-तत्र-यत्र विज्ञान, डॉ श्रीगाली गार्ज, सिद्धाश्रम डीलमुद, दिल्ली-१००३४ (प्राप्ति)
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail address - siddhashram.org

नियम

पत्रिका में प्रकाशित गग्नी रघुवर्णी का अधिकार पत्रिका का है। इस 'संस्कृत-संस्कृत-वाच विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों में सम्पादक का महात्मा हेमा अविवार्ता नहीं है। तर्क-कुर्स के बारे वाले पाठ्य पत्रिका में प्रकाशित पूरी आमदारी को गव्य ग्रन्थों किसी नाम, स्मारक वा छट्टा का उल्लेख नहीं है। वहाँ कोई छट्टा, गव्य वा गव्य विल जाए, तो उसे अंदोज ग्रन्थों पत्रिका के लेखक पुस्तकहरू मात्र जोड़ दें। आज उनके पाठ के नाम में कुछ भी अन्य जानकारी देना ग्राहक नहीं होता। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख का सम्पादकी के बारे में, बाद विवाद वा तर्क ग्राहक नहीं होता। अब न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, तुक्का वा सम्पादक किसी भी ग्रन्थाद्वारा लोक किसी भी प्रकाशन का प्राविष्टिक नहीं होता। जाता। किसी भी प्रकाशन के बाद-विवाद में लोकपुन व्याख्याता दी गयी होता। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी आमदारी को ग्राहक वा पाठक की भी ग्राहक कम करने से पत्रिका काव्यलिख के निवारण पर हम अपनी निवारण को ग्राहणिक अनेक झटकों से घायली राय रखती थी। यह किस भी उनके बाद में, अभीली राय रखती के बारे में अपना प्रश्न उठाए थे। उसे यह के बारे में आमदारी जिसके बारे में होती थी। पाठक अपने विवाद का पर ही ऐसी आमदारी पत्रिका काव्यलिख में संगवार। गग्नी रघुवर्णी के धूम्य पर तर्क वा बाद-विवाद ग्राहक नहीं होता। पत्रिका नव वार्षिक शुल्क वरिष्ठन में 195/- है, पर यहाँ किसी विवाद एवं अपरिक्षिक क्रमों में पत्रिका को विवादिक वा बाद करना पड़े, तो जितने भी अक आपके पाप हो चुके हैं, उसी में वार्षिक ग्रन्थाद्वारा अथवा ही तर्क, तीव्र वर्त्त वा दंघवर्षीय भृष्टकर्ता को युग्म झटकों, इसमें किसी भी प्रकाश की आपनी वा आलोचना किसी भी नव गंभीरकान नहीं होती। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी ग्रन्थाद्वारा मानवता-अभिजनन, हित-लाभ की जिजीरायी ग्राहक वी नववं नी होनी तथा ग्राहक कोई भी उपासना, उप वा नेत्र प्रयोजन न कर्न, जो भौतिक, ग्रामादिक एवं नवदुर्दी किसी के विवादी हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक यानी वा सम्बादी लेखकों के विवाद ग्राह नहीं है, उन पर ग्राहक वा अभियान पत्रिका के अधिकारियों ने तरफ प्राप्त होता है। पाठकों की जांच पर इस अंक में पत्रिका के विवादों लेखों का भी ज्ञान की गई ग्राहक वी ग्राहक करने का गारीब रह गयी है, कि ग्राहक उसमें अभियान लाभ तुल्य ग्राप व्यं ग्राहक वी ग्राहक, वह तो किसी भी अपनी जाता प्रक्रिया है, अतः युग्म झटका और विवादों के ग्राहक ही द्वितीय ग्राप करने के कोई भी अपरिक्षिक वा अभियान ग्राहकर्ता नहीं होती। ग्राहक वा पत्रिका प्रविधान यह ग्रन्थ में किसी भी ग्राहक की जिजीरायी वह नहीं होती।

प्रार्थना

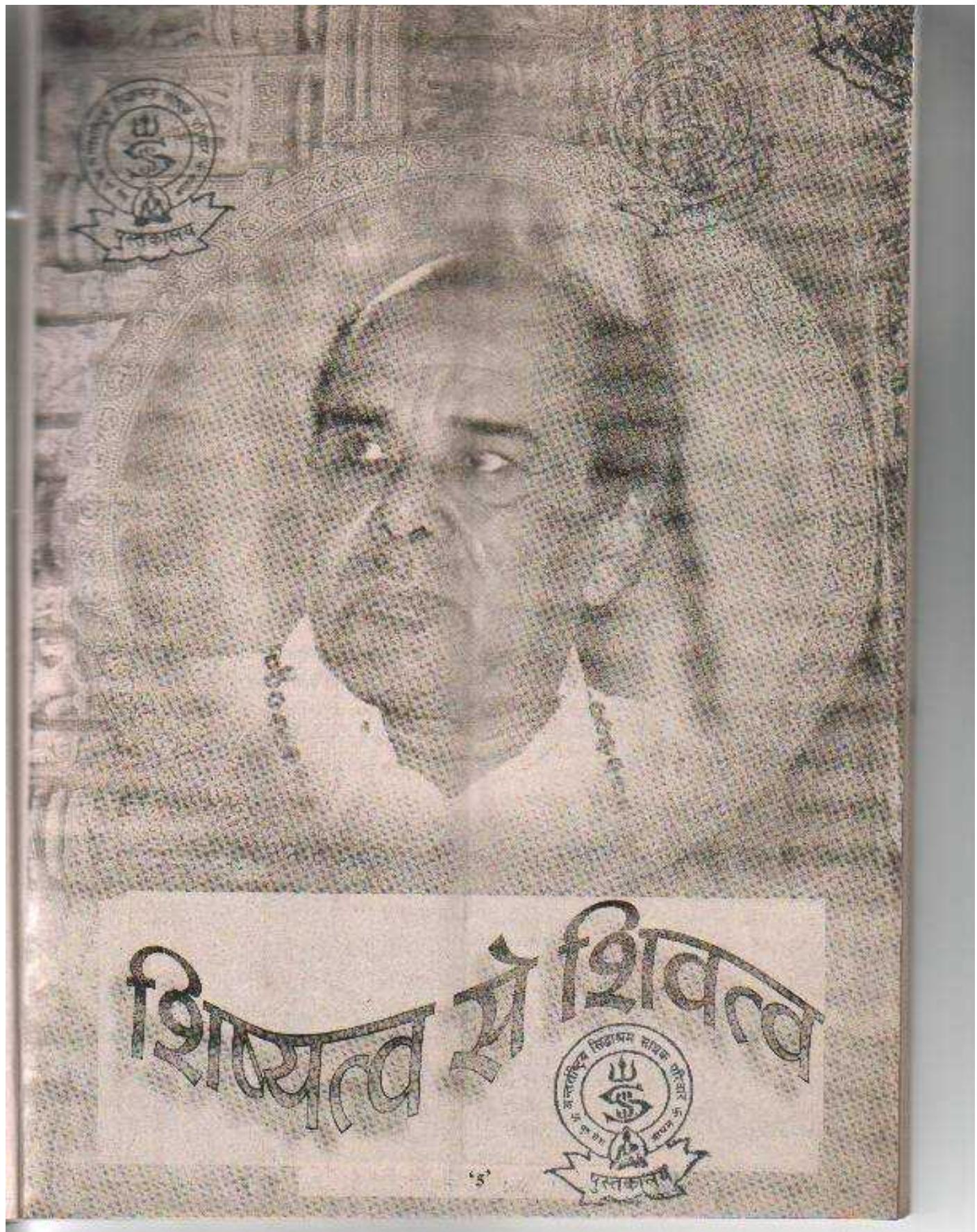
शान्त विद्यालयस्य ग्रामपरमुक्तं पश्चवक्त्रं विनेत्रं
गूलं ददं च चक्रं चरनुमभयदं वक्षमागे वहन्तम्।
नामं पात्रं च चक्रं त्रिलक्ष्मुत्तवहं साङ् कुशं वामभागे
नानांकर्तुकं स्फटिकमणिभं पार्वतीशं नमामि॥

"पद्मासन में शान्त और स्थिर विराजमान अपने मस्तक में चन्द्रमा का मुकुट धारण किए हुए, पौंच मुखों वाले नीन नेत्रों से दुःखदहिने हाथों में विशूल, वज्र, खदग, परजु तथा अभय मुद्रा धारण किए हुए। बाये हाथों में नाम, पद्मलक्ष्मी, घटा, प्रसवादि और अंकुश धारण किए हुए, लम्बे दिव्य अस्त्रों से विभूषित स्फटिक मणि के सदृश चमकते हुए चमकन भूत भावन जोकर को बारंबार में नमन करता हूँ।"

* नवोदिष्टादों से बचें *

एक रुक्ष है, उठाने पाने इत्येतिव उक्त व्यक्ति आया करता और ईश्वर के दर्शन लेने के उपर दृष्टा। सज्ज ठेष्ठा यह कहकर उत्त देखे कि सज्ज जाते ही बदाउता। एक बार व्यक्ति के दर्शन जाकर उक्त देखे यह दे बोले - "सज्जजे बहाह की जो ऊँची चोटी है वहाँ तक तुम लिए सह चलम लेकर चढो। तब मैं तुम्हें ईश्वर जापित का मर्त्त बहाउता।" व्यक्ति नाज जाय। सज्ज ने उसे अपन दीर्घ रुक्ष का संकेत किया। सिर पर पत्थर लेकर चढ़ता व्यक्ति वक चुका था। उसके कह - "भगवान्। अब और जहाँ चला जाता मैं यक दुका है।" सज्ज ने कहा 'ठीक है।' एक पत्थर लेकर दौड़ा जहा जब तक व्यक्ति के गिर से उहाँ पत्थर ले डिक्कदा दिया गाए। तब जाकर व्यक्ति ऊपर चोटी तक पहुँचने में सफल हो पाया।

चोटी पर पहुँचकर सज्ज ने उसे समझाया 'भाई।' जिस प्रकार तुम सिर पर भारी पत्थर लेकर चढ़ने में उसका रहे उसी प्रकार ऊँचवाल में पहुँच्या काम, कौप, लोभ, गोह, मद, मत्स्य जैसे गलोदिकारों का बोझ दीकर ईश्वर दर्शन नहीं कर पाता। ईश्वर-दर्शन हेतु हज जपी मनोदिकारों का बोझ उतारना उकियार्थ है।" उदाहरण से यह बात व्यक्ति की समझ में आ गई। *



सद्गुरु देव अपनी बात उके की बोट पर कहते थे, शिवरात्रि के अवसर पर
लिया गया उनका वह जरभून व्यवहन जीवन में परिवर्तन कर सकते के
व्यक्तित्व को निखार कर अद्वितीय बनाने का एक विशेष मार्ग है। यह
जीवन जीते हुए भी अद्वितीय व्यक्तित्व बन सकते हैं जिसे जी कर
आप स्वर्वं तो अपने जीवन में संतुष्ट होंगे ही, आने वाली
पीढ़िया भी यात करेंगी कि आपका व्यक्तित्व महान था।

शिव लक्ष्मण द्वारा के व्यतीता पृथग्दत्त थे, जिनके बात
शिव को गुरु बनाने के बाद गुलाब जी नरर महवते थे
और जले जलाने से मुख्य प्रबाहित होती थी, इसलिए
शिव ने स्वयं उनका नाम पृथग्दत्त रखा और उन्होंने
शिव लक्ष्मण द्वारा के बदना की उन झोड़ों में उन्होंने
मनवन शिव का एक जरभून लरीके से पर्ण किया

है।

उन्होंने कहा कि जीवन का प्रत्येक दाण याथकता
एवं जीवनका नियम होता है, प्रत्येक दाण उपयोगी होता
है, एक दाण जो डीन जाना है वह किर वाप्रय नहीं
आता। आज आपके जात नुस्खे तो आवश्यक नहीं कि
दापत ये दाण आ संकेत आप उनके पास हों या उनसे
दोषा दाण कर सके, या वह जान, प्राप्त कर सके, तिरके
द्वारा पाप नमाम होकर पुण्य का उदय होता है।

तो बेसर ही दाण बापम आ नहीं सकता। एक बार
एक मनुष्य की रक्षा हो गई, तो उसी आकृति के दूसरे
मनुष्य की रक्षा नहीं हो सकती। एक पिता के पार पुत्र
हैं तो चारों का सप, अकृति, स्वभाव, संरक्षक अलग-
अलग होते

के बहुत ज़्यादा भाव भी हैं।

इसलिए एक क्षण विशेष में किया गया कार्य तीव्रन को पूर्णता दे सकता है और तीव्रन की अपूर्णता इसलिए होती है क्योंकि हमारा मन अपने आप में आंदोलित या डंबलोडल होता है, जिससे नहीं कर पाता।

जब दिन समुद्र में उल्लंग नगाएँ, जिन जोरिये उठाएँ समुद्र को तीव्रन के पास नहीं किया जा सकता। जो तीव्रन में चलेंगे लेता है जो अपने आप में एक बलिदानी हो जाता है वही तीव्रन में कुछ प्राप्त कर सकता है।

जो घर जाए आपन.....

जो पहले अपना घर जलाता है, उपने अंदर के विकार जला देता है, अपने विधारे से लोभ, नालच, स्वार्य सोह रामाप कर देता है उसके लिए ही क्षण है क्षण का महान् है।

तीव्रन में तो लोभ नालच पैदा होगा ही, परन्तु एक क्षण ही गुरु के साथ तो वे मिट सकते हैं, मिर मिटे या नहीं कोई आवश्यक नहीं है क्योंकि किस वेसा क्षण आए था नहीं आए। कोई जस्ती नहीं है कि वही नक्षत्र, वही तिथि, वही मुहूर्त वापस रथापित हो ही।

भगवान शिव ने कहा है कि मैं क्षण-क्षण परिवर्तित हूँ और जो परिवर्तित है वह जीवित है, वही अद्वितीय है ऐसा है, पूर्ण है।

तीव्रन में गृहस्थ तीव्रन भी बहन अवश्यक है, मैं यह स्वीकार करता हूँ, मगर मैं इस बात को भी स्वीकार करता हूँ कि सन्यास तीव्रन हृष्टके भी ज्यादा महत्वपूर्ण है। और इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है कि व्याकि गृहस्थ में रहने दुएँ भी सन्यासी तीव्रन तीएँ- यह उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है।

घर बार छोड़ने को सन्यास नहीं कहते, और बस घर में रहने बाले को गृहस्थ नहीं कहते पन्नी साथ होने से ही गृहस्थ नहीं हो जाते, बटे पैदा होने से भी गृहस्थ नहीं हो जाते। भगवान कृष्ण को पूर्ण योगीराज कहा गया जो कि गोपियों से प्रेम करते थे, जो १६००० रानियों

के दर्शि हो। वे बोझीरान कहलाएँ।

इन्हें उद्भूत भन से उद्भूत है विचारों से उद्भूत है, आपके विचार उद्भूत विशेष में करनोर हो गए तो आप दूसरे नहीं, उम्म क्षण को गंवा देते। वह क्षण फिर बहस्त नहीं जा सकता। यह जो हृदय बार-बार परिवर्तन करता है, वह जो बार-बार मन में तक-ठिनके, संदेह, अज्ञ दिला देता है तो इसको कैसे दूर बरें, कैसे ये दूर हो?

इसीकि हर बार और हर क्षण ये तक तिनके देखा होने ही चाहते हैं। अच्छे में अच्छे योगी के ही और आपके भी।

यह सही है या नहीं यह आर्य करना उद्दिष्ट है या नहीं और जो इस प्रकार के विचार का सौदह रखता है वह एक मशु जीवन व्याप्तियों करता है और मर जाता है जो जीवन में इह विचार कर लेता है कि मुझे इस रास्ते पर ज़हरा है जोस सब छोड़ देना है सब कुछ हाथ में रखते हुए भी छोड़ देना है, १६००० रानियों के होने हुए भी मुझे अपने कार्य का संपर्क करना है, जिन्हीं वरस्तेलिटी को उच्चता प्रवान करनी है। वह व्यक्ति ज़क्किनोपत प्राप्त करता ही है, नि-अदेह करता है।

आपकी वरस्तेलिटी, आपका व्यक्तित्व और जागकी छलाजा, आपका चित्तन आपका कार्य केवल आपका महत्वपूर्ण होगा। आपके पिता के द्वारा आपका नाम बाद किया जाए कि किञ्चमलाल का पुत्र है तथे ऐसा पुत्र मन्ने के कान्चिल होना है, कोर जो चेड़ के नाम से पहचाना जाता है वह अधम होता है।

जो आपने कार्यों से, आपने व्यक्तित्व से लोक में विस्तरान होना है, वहो भर्तव विजयी होता है, इसलिये अपना व्यक्तित्व निखारना, आवश्यक है और इमारे जीवन में सेफडों उदाहरण है, हजारों उदाहरण हैं। राम का उदाहरण है कि उपर्युक्त की निखारने के लिए जगती में इसलिए गए कि उच्च कोटि की साधनाएँ समर्प कर दें, उम्म राखण को मारकर संसार में विरच्यान हो-

सके।

कृष्ण

बाप से

दिया।

मधुरा उ

उन्होंने

बनना है

लोगों ने

प्रेम

करना है

समाज।

मधुरा मे

नहीं है।

उच्च को

जाएगे।

यही

करके ल

है। उन्ह

यही कि

है और

जारी बे

मुसलम

बहों सा

मग

है, मेंगा

जीवन क

वेत

बता रहे

बाप का

इन लो

न्यीछार

गाँध

सकते ह

प्र०

कुछ ने कहा और कोई गमना है वही नहीं और अपने पूरे जीवन में उस भी बदल से केवल २२ दिन मिले, वासुदेव और देवकी को, जिन्होंने उनको जन्म दिया। अधिकतर समय उनका गोकुल में श्रीता नद और योद्धा के साथ। उन्होंने आए तो केवल २२ दिन रहे, २२ दिन में भी २ या ४ बार चिन्ते होंगे। उन्होंने कहा इनकी वजह में ऐसा नाम नहीं हो पाएगा। मुझे अनदि कुछ बचा है तो कुछ ऐसा करूँ कि अद्वितीय बन सकूँ, ऐसा कुछ करूँ मौजूदा ने नहीं किया।

प्रेम करना हेय समझा नो उन्होंने प्रेम करके दिखाया, जो कुछ करना है करे समाज, मैं राधा को लेकर धूमूँगा जो उसे करना है करे समाज। एक विद्रोह की भावना थी उनमें। उन्होंने कहा कि अगर उच्छव भी लिए स्ट्रेटल नहीं है, मेरे व्यक्तित्व को निखारने में जहाँ नहीं है तो मैं द्वारका में अपना राज्य स्थापित करूँगा और मैं वहाँ का उच्च कोटि का राजा बनूँगा। और महाभारत युद्ध में सैकड़ों हजारों मर जाएंगे मगर मैं अपने व्यक्तित्व को भवीच्छा प्रशान्त करूँगा।

वही काम युद्ध ने किया, एक राजकुमार हो कर के घर आर छोड़ करके बुद्धित्व को प्राप्त कर लिया और युद्ध का नाम वही आज भी याद है। उनके बेटों का या आप का नाम हमें याद है या नहीं है। महावीर ने भी यही किया। गांधी ने भी निश्चय कर लिया कि अपना व्यक्तित्व निखारना है और अपना व्यक्तित्व निखारने के लिए न कर्मरूपा की तरफ देखा, न वारों बेटों की तरफ देखा। वारों बेटों अपने आप में कुमारी ने दिखे। एक ने मुख्यमान धर्म ग्रहण कर लिया, एक बिलकुल गांधी जी जहाँ स्थाना खाते थे वहाँ सामने बैठ कर मास और मधिरा लेता था।

मगर गांधी जी ने ध्यान दिया ही नहीं। उन्होंने कहा कि पुत्र अपनी जन्म है, मेरा उनके प्रति कर्तव्य या वह मैंने पूरा कर दिया। अब उनके लिए मुझे जीवन बरबाद नहीं करना है, अपना व्यक्तित्व निखारना है।

वेत युग के उद्याहरण से लगाकर के आन के उद्याहरण में मैं आपको यह बता रहा था कि आपका व्यक्तित्व आपका है। आपकी पहली का या आपके बाप का और आपकी मां का या भाई का व्यक्तित्व आपके काम नहीं आएगा और इन लोगों ने जो निश्चय किया कि व्यक्तित्व निखारना है तो उन्होंने सब न्योछावर कर दिया और उनका अद्वितीय व्यक्तित्व बन गया।

गांधी जी भी वक़ील थे, भाराम से रोटियां खा सकते थे, बकालत कर सकते थे, उनको कौन रोक रहा था, नवाहर लाल नेस्व भी भोतीलाल के



भी
व्य
हम
न
का
व
क
हम
का
ह
का
ह
का
ह
का
ह
का
ह
का

बेटे थे और उस समय भी कम से कम २० हजार रुपये मोरीलाल
एक मुकदमे को लड़ने के लिए थे। तब भी उनका पूत्र जेल गया,
लाठिया खाई उसने कहा कि मुझे अपना व्यक्तित्व निखारना
है शक्ति सब कुछ बेकार है। न मेरी बेटी काम आएगी न
पिता काम आएगे मुझे अपने व्यक्तित्व को बचाव दिया जाए
करनी है और पुण्यदंत भी यही कह रहा है, भगवान
शिव भी यही कह रहे हैं कि आपको अपना व्यक्तित्व
निखारना है तो घम को छोड़ना पड़ेगा, संदेह को
छोड़ना पड़ेगा और संदेह केवल दीक्षा के माध्यम से
समाप्त हो सकते हैं, और कोई रास्ता नहीं है, अंदर
कोई मरीन भी नहीं है।

दीक्षा का जर्ह है अंदर उन विचारों को पैदा करना
जिनसे आपका व्यक्तित्व निखर सके, आपसे एक
धारजा शक्ति मनवृत्त हो सके। यदि दीक्षा के विषय
में मैं बार-बार कहता हूं तो अवश्य कुछ तर्ज है।

सिंह नमन सत पुरुष चन

कवली फले एक बार....

उच्च कोटि का व्यक्ति एक बार भी कहता है तो
सामने बाला शेष व्यक्ति उसे हठय में उतार नहींता है वही
मर्हु व्यक्ति को दस हजार बार कहे तो भी नहीं उतार
सकता और अगर वेतनावान व्यक्ति है तो एक बार ढोकर

मैं बहुत हूँ।

या तो आपके जीवन के जितने भी साल बचे हैं, बीस, पचास तस्वीर, तो या तो आप उन २०-२५ सालों में अपने अविकल्प को १०-१२ दुकड़ों में बंट करके कि इसका बाप हूँ, इसका पति हूँ, यह मेरा नीकर है, यह मेरा धर है। इस अविकल्प २० दुकड़ों में बंट कर मर जाऊँ चिता पर लेट जाऊँ। या फिर वो अपनी जगह पर है आप अपनी जगह पर है यो अपना काम करते रहें कपूत होंगे तो कपूत होंगे, मास खा रहा है तो मास खा रहा है, शादी कर ली तो कर ली।

गांधी जी अपने लड़कों को कहा तक समझते और समझते से होता था क्या? उनका तो निश्चय बस एक था।

उस करोड़पति बाप के बेटे नेहरू के घर में अभाव क्या था, उनके पेरिस में कपड़े धून कर आते थे क्या कमी थी? क्यों लाडिया खाई, क्यों अंगूजों का अन्याचार बनने किया?

क्योंकि एक एक व्यक्तित्व को निखारने की चाह थी और इसलिए आज जवाहर नान का नाम हमने सामने है और अगले ५०० साल तक रहेगा।

शास्त्र भी यही कह रहा है कि इस मामले में हमें केवल एक निश्चय कर लेना है कि यह सब कुछ तो चलता रहेगा, उसके लिए आप कुछी मत लेडें। बुखार आ गया तो फेशान मत लेडें, खोपड़ी पकड़ कर मत बैठिए, बेटे अगर नहीं पढ़ रहे हैं तो नहीं पढ़ रहे, आपके कहने से तो फलट कलास आएगे नहीं। आप उसे मार रहे हैं, उसके पीछे पूम रहे हैं और अपने व्यक्तित्व के दुकड़े-दुकड़े कर रहे हैं, पिंडगी, आदी से ज्यादा ऐसे बिता दी आपने और बाकी आधी भी ऐसे ही चिताएंगे। मेरे कहने से कुछ फ़क्के नहीं पड़ेगा।

इसलिए नहीं पड़ेगा क्योंकि एक बार माचिय नहीं लगती है तो दूसरी बार फिर छिसते हैं तीसरी बार फिर छिसते हैं, चौथी बार छिसते हैं, तो पांचवीं बार माचिय जगेगी ही लगेगी। एक बार दीहा से नहीं होगा तो दूसरी, तीसरी, चौथी या पांचवीं बार ढृढ़ संकल्प आएगा।

कि मुझे दरना उत्ता जीवन को उठा देना है।

गुरु ने कहा तुम्हे सूर्य बनना है तो बेठे-बैठे तो सूर्य बनने नहीं। याप बनने अपने व्यक्तिगत्य की वजह से और इसके लिए व्यक्तिगत्य की टुकड़े-टुकड़े होने से बदला पड़ता। परन्तु आपसी तो बेठ जाएँगी, बेटे कहना मरनेगे तो मरनेगे, मैं काहे को चिंता करने। मेरा कर्तव्य या कि गृहस्व होना चाहिए, परन्तु होने चाहिए, पुरुष होने चाहिए। वह चलेगा तो चलेगा, नहीं चलेगा तो चिंता किस बात की?

कबीर का कीम सा वश चल रहा है, मोरा का कौन सा बंधा है? यश आवश्यक नहीं है। मुझे अपना व्यक्तिगत निखारना है, अपना जल पेश करना है, ऐसे मरने के ३००० माल बाद भी मेरा नाम आकाश में इन्द्रधनुष के रंगों से लिखा होना चाहिए, यह जीवन में नहीं है।

मेरे गुरु ने भी
ए क

यहाँ मुझे कहा था। उन्होंने कहा था कि तुम काम करो, तुम्हें केवल अपना व्यक्तिगत निखारना है, और उसके लिए तुम्हें बहत परिश्रम करना। पढ़ेगा, छिमलाय के चर्चे-चर्चे को छानना पड़ेगा, भूखों मरना पड़ेगा, तकलीफ उखनी पड़ेगी, और तुम उसके नकलीक देखी में आशावाद रेता हूँ कि तुम्हारे, उपर विपनियों आए बहुत तकलीफ आए, कठिनाइयां आए, लहून लघव आए तभी तुम निखर सकोगे। मगर गाथ साथ एवं काम और करो, धोती के किनारे पर एक गाड़ लगाओ, हर बार धोती बढ़ने तो यह गाढ़ लगाए रखना, गाठ धाय में आएगी तो याद कर्गा कि मुझ अपना व्यक्तिगत निखारना है, नहीं तो तुम मूल जाजीओ।

और जब उक मैं गंगायो रहा
गाठ बांधे रहा, गुरु जी ने कहा था

यह क
रिष्टाए
आ
काय है
का गा
आपस
एक घ
पाते थे
उन
मुझे स्म
योग के
लिए ब
महान व
क्या
करो
सो जो उ
गणिया
सुनी। उ
गाली उ
आप।

आप
बराबर ह
कैसे खि
रहता है
जीर
जण है इ
कुर्जे नो
वह क्षण
के दृष्टी

जब बाहर जाना है, इस रास्ते को भी देख लेना है, हिमालय को भी देख लेना है,
निष्ठावान् जो भी देख लेना है।

जब मेरी कोई वास्तु नहीं है, कृष्ण के भी दो हाथ ये सौर जापके भी दो
हाथ हैं। कृष्ण मेरी और राम मेरी और जाप मेरी काँइ अंतर ही ही नहीं। जाइकटाइन
मेरी जाहिं और जापका माइंड बराबर है, नेहरू जी का माइंड कोई
जापन चौनुना नहीं था और गांधी जी तो केवल ५२ किलो के थे।
जब जापका दो चार फुट दूर थिए। और जिना लाडी के चल नहीं
जाए थे। परन्तु व्यक्तित्व अपने आपमें अस्तित्व था।

उनमे एक चिन्नन था, कि मुझे अपनी परस्परजिता बनानी है
मुझ स्वयं बनाना है और उम्मेके निए गांधी जी ने कर्म योग की क्रिया
जान की, कृष्णलिंगी जागरण की बीशा ली और सहसार भेदन के
लिए बराबर प्रयत्न करते रहे कि कोई गुरु मिले मृत जो नहवार
जान जाए। उनकी जीवनी पढ़ें जाप!

इन्हीं गेसा था?

क्योंकि इन्हीं प्रकार जर्वोचता ग्राम हो नकला है और ये
जो जो काम करता है उसे गतियां मिलनी ही है और लोग
गतियां दें तभ मुर्जे, आनन्द आए ये दो नहीं गतियां और
नहीं। मगवान ने दो कान दिए ही इमलिए हैं कि इधर से
जली आए और उधर से निकले, नीचे से रखिए हों नहीं
आए।

आप न उत्संजित होइए, और न बात करिए। काम
बराबर एक ही चिन्न एक ही लक्ष्य रखिए कि व्यक्तित्व
कसे निवारे। शरक, विकून एक ही तरफ देखता
रहता है कि कब पन्नी की बूढ़ काढ़ और मुह में डेंगे।

और पुष्पदंत ने भी कहा है कि जो श्री महाविष्णु
क्षण है उसका मुझे प्रयोग कर लेना है और नहीं
कर्मोंने जीवन में और बहन क्षण तो आएंगे पर
वह क्षण नहीं आएंगे। कोई जसरा नहीं कि आज
के आजी में युन साथ हों या दोष।

मैं च
नहीं पाव
क्या?
दो ब
कम हैं र
निमातुं
मुह मरन
शिव
निलामी
बिल्कुल
और।
मे है। पाव
और वेल
फिर र
खला, वा
गले मे है
शिव
तो चाली
मी....

शमशा
शिव क
पर की त्
उद्दीपि
जौर आप
लड़का कह
आप उ
इसलिए पु
तब तक दी
अवर न्याय
पांडिया मेर
और उर
स्तोत्र के पु
लिखा जा स
आप का
एक व्यक्तित्व
नहीं बर पा
और शरीर

है।

ओर मैंने कहा कि अगर एक बार दीक्षा लेने से आ जाती है मिथिलात तो बहुत है नहीं आए तो दूसरी बार तो तीसरी बार ले। कोई जल्दी नहीं कि एक बार दीक्षा लेते ही आप एकदम में समाप्त भर्ते से पूर्णता प्राप्त कर ले।

दण्डिय ने २५वार दीक्षा ली। राम ने दो बार दीक्षा ली। विश्विष से जन्म नहीं, विष्वामित्र से अलग नहीं। कृष्ण ने सांदीपन से दीक्षा नी और आठ गुरुओं थे और ली। एक ही गुरु से १०८ बार दीक्षा ली।

प्रश्न कहा जह नहीं है, प्रश्न है कि कब ऐसा घिन्टन आता है, दृढ़ निश्चिन्ता आती है। शिव महिमन स्तोत्र का भाव ही यह है कि हम दृढ़ निश्चय करे। यों तो आप निश्चय करें तो कल भूल जाएंगे, भूल इसलिए जाएंगे कि आपके हृदय में वह आश पैदा नहीं हो रही है। वह ज्ञाना वेदा ही और निश्चय कर ले।

कर्तव्य तो चलेंगे ही उनसे बचें नहीं, मेरी डयटी पुत्र को केवल रोटी देना है और आपने लक्ष्य की ओर चलते रहना है। कोई हन्ता पकड़कर खिलाने में बेटा आपका पैर पकड़ने वाला होगा ऐसा नहीं है। वह तो कफून हो जाएगा, जिसना लाठ करेंगे उतनी ही मड़बड़ हो जाएगा।

पत्नी को कह— क्या तकलीफ है? वह कहेंगे— गर वर्दि है।

आप कहें ठीक है सिर उर्द है तो सो जा, मैं अपना काम करता हूँ।

फिर सिर उर्द होगा ही नहीं, उसकी जिंदगी में वापस।

मैं ऐसा नहीं कह रहा हूँ कि आप कर्तव्य से भाग जाइए, मैं ऐसा भी नहीं कह रहा हूँ कि आप गृहस्थ से भाग जाइए। घर में रहते हुए अन्यायों रहिए, न किसी के प्रति मोह, न किसी के प्रति आसक्ति न किसी के प्रति कोध, न किसी के प्रति चृणा।

भगवान शिव के समान इम बने, और शिव बने ऐसा जीवन में जल्दी है। शिव जैसा व्यक्ति तो है ही नहीं ब्रह्म के बाद सब देवता बने और उन्होंने अपनी परस्नेलिटी निखारी सभी ने। शिव ने अपनी परस्नेलिटी अलग, ढंग से बनाई, ब्रह्म ने अलग ढंग से बनाई।

शिव ने पहले सती से शादी की, उनकी मृत्यु हो गई वक्ष के गज में तो पांचती से शादी की। वे कुछ कमाए नहीं नौकरी करें नहीं शिव, आपार उनके बम की बात नहीं, बल शमशान में बैठे रहें।

घर गृहस्थी वहां और बैठे रहें शमशान में।

मैं जापकी नुस्खा कर रहा हूँ उनसे। मकान उनके रहने के लिए
नहीं बचते कहे कमा के लाजो कुछ, मैं शाम को बच्चों को बिन्दुज
बढ़ा।

वे बच्चे हैं एक गणपति हैं, गजाधन हैं, तप्योदय हैं, जितना छिलाए
कम है अद्योक्ति वेट बहुत बड़ा है उनका। किंतु रोटियाँ उनको
निकलते। दूसरा कार्तिकिय आपने पैदा किया जिसके छँ मुँह। एक
मृग जनने की बहुत भारी है, छँछँ मुँह भरने पड़ते हैं।

शिव कहते हैं- बस अपन शमशान में बैठे हैं, खिलाना हो तो
निकलते नहीं खिलाना हो तो मत खिलाओ। हम तो बैठे हैं शमशान में
खिलून निश्चिन्त।

और जितना लडाई झगड़ा आपके घर में नहीं है उतना शिव के घर
नहीं है। पर्वती का बाहन है वो शेर है, और शिव का बाहन बैल है। शर
जीव बैल का झगड़ा हो तो वो उधर बैल पकड़े उधर वो शेर को पकड़।

जिन गणपति का बाहन है चूहा और इनके पास सांप। सांप चूहे को
खाए, वो चूहे को बचाए। और कार्तिकिय का बाहन है मोर और इनके
जल में है सर्प जिसको मोर नुरंत खा जाना है।

शिव न कमाए न रोटियाँ खिला सके, वो बच्चे पैदा किए तो महान
जो चालोस चालोस खा जाए, घर में लडाई झगड़े अलग, उसके बाद
भी....

शमशान्यां वासां भवतुं।

शिव कहते हैं- मैं तो शमशान में बैठा हूँ, तेरों नर्जी हो तो गिल लेना
जर की तू जाने, तेरे लड़के जाने, मुझे कोई चिंता नहीं है।

उन्होंने अपना परसनेलिटी निवारी और भगवान शिव कहनाए
और आप बेकार टैशान भुगतते रहते हैं कि पत्नी को सिर दबं है,
लड़का कहना नहीं मानता॥

आप उन्हें रहने दें, आपने व्यक्तित्व की बेखिर, आप हैं तो निकटी है
इसलिए पुष्परंत ने भगवान शिव से प्रार्थना की मुझे आप एक बार नहीं
तब तक दीक्षा देते रहिए जब तक मेरे मन के विचार समाप्त नहीं हो जाए,
जब तक ज्ञाना पैदा हो जाए कि मैं ऐसे स्नोव की रचना करूँ कि आने वाली
गोहियाँ मेरे व्यक्तित्व को बाद रख सकें।

और इस प्रकार की अद्वितीयता को प्राप्त कर उन्होंने शिव महिमा
स्नोव के ४० श्लोक लिखे जिसके एक-एक श्लोक पर एक-एक राज्य
निखारा जा सकता है और इस प्रकार उन्होंने अपने व्यक्तित्व को निखारा।

आप अपने मुग में मण्डशन करना चाहे तो तब कर पाएंगे जब आपका
एक व्यक्तित्व बनेगा। कृष्णनाम से आप नहीं कर पाएंगे, छल और छातु से
नहीं कर पाएंगे, अभिवाद से नहीं कर पाएंगे, आपने सत्यता, ईमानदारी
और शरीर में फौलाव दीना चाहिए।

ओर यह दीक्षा से ही हो सकता है। दीक्षा का अर्थ है नुस्खा का विषय के अद्वर स्थापन होना। तभी उपके अधिकार का निश्चाल हो सकता है और इस अधिकारता का प्राप्त करने के लिए उम्म बाधक नहीं है। दीक्षा ग्राह आप भए तो भी नमद नहीं है और वीरगति भी तब भी कुछ कर मुश्किल को बहुत है।

अभिमन्यु दीलह साल की उम्म में मर गया और अर्जुन ८० साल की उम्म में मरा। दोनों विजयी हुए पर अभिमन्यु जैसी रूपी अर्जुन नहीं प्राप्त कर पाया। अभिमन्यु जैसा साड़म वह नहीं कर पाया। अभिमन्यु जैसा तीव्र वह नहीं कर पाया। अभिमन्यु श्रेष्ठ बना क्योंकि वह जूझा, उसने संखर्ष किया, वह बैठा नहीं।

और गीता में कुछ ही नहीं। एक लाइन में गीता को कहे तो गीता का शतलब है उर्जुन तु उठ और कर, बाकी में उपन आप संभाल लेगा। तु रुद्धा दो ना पैगे पर।

मैं भी वापर गीता नमझा रहा हूँ कि आप खड़े हो जाओ एक बार नुक तम्हारे, पीछे खड़ा है।

संकल्प करना है तो इसी धृष्ट आपको रख, उप करना चाहेगा। हृषि निरचय करना पढ़ना कि मुझे क्या करनी है। आपमें नेहरू मैं, आरंगटाइन मैं, निकन मैं, इन्हा भगीरथ मैं और बहा, विष्णु महेश मैं, कोई भंतर नहीं है। अतेर है तो हृषि संकल्प शक्ति का उत्तर है। चुनौति आए, और मैं कहत हूँ योग द्वारा आए, हम चुनौतियों का सम्मना करेंगे।

बत पढ़े रह, रोटी खाव आफिस गए अफिस की दिढ़की सुनो, आकर पत्नी को भना दो, रोटी खाड़ और सो गए। दूपर तिन भां बड़ी काम उसमें चुनौती है ही क्या उम्म तीव्रता में आपसे किया भी क्या?

इत्यन्ति भ्रादान शिव की तरह बने, जिनके गुणों का वर्णन ही नहीं किया जा सकता। इन्होंने अद्विरोपना है उसके ल्यकात्मक में। ऐसे आप में नुण हो, हृषि निरचयता हो, नुक के लाभों वे उप आपसे गत का घिस और आप उद्वितीय जने दीक्षाओं के भव्यतम से, गांधीजी के माध्यम से यहाँ मेंत करना है।

और कोई रासना है ही नहीं, उन्हें बालों पैदियों के लिए उच्छव लक्ष्य कोई रासना होगा जो नहीं। गांधीयों का रासना गहरा उनके पास। वहीं आपके पास शक्ति का रासना होगा, लक्ष्य का रासना होगा, दीक्षा वीर शायामा का रासना होगा, दृश्य के मन को परिवर्तित करने का रासना होगा, विज्ञान का सम्मोहन का रासना होगा, जैतनवता और जान जो रोसना होगा।

एक बार पूर्वी ने कहा कि आजे बाले युग में लोग बहुत प्रेजान और दुखी होंगे। एक काला होगा कि यह उर्ज

जगदान ये क्षमा, जग प्रधान युग द्वोगा और आज से सो डेढ़ सी
जल जलने लगें यह अहृत ज्यान दिया जाता था कि जिम्मेदार
मन कुछ है तब उसके कुछ है। जिसके पास, विद्या है वह
मन कुछ है और इस से मालों ने बह धारणा बढ़ाने गई
जैसे वह समझा जाने लगा कि जिसके पास थन है वह
मन कुछ है। यह भी सही है।

जीवन के पार उग झपन आप में 'युग्म' होने चाहिए।
जन्मायी को भी मोरन करना जरूरी होता है,
जन्मान शिख ने भी शादी की तो पार्वती जगी लड़भी
के अवतार से शादी की, भगवान विष्णु ने भी
शादी की तो भागर मर्याद के बाद माहिनी लड़ी
जहाँसे शादी की, और वे विवशाली बने।

भगवान शिव इगदान में रहने हए, भी
कुबेरपति बना। इगदिए युग के अनुसार धर्म
अर्थ काम और मोदा ये और पुरुषार्थ आद्यमी
के जीवन के बताए हैं कि चारों हाथे जरूरी
हैं। धर्म याति कि अदर एक धारणा शक्ति
होनी चाहिए, धर्म का अर्थ यह नहीं कि हिन्दू
या गुरुलम्बल या नवय को धार्य डालना।
धर्म का मानसिक है जो गुरु कहे उसे धारण
कर ले।

धारणि स धर्म

जो गुरु जहे उसके अनुसार करे। और
गुरु कोई धोखा दे, छुन, करे अपने स्वार्थ
के लिए कुछ करे तो आप उसकी आज्ञा मत
मानिये, वह गुरु हो ही नहीं सकता।

गुरु लगायी तो
तजो ज्ञान अलसेता



विना ज्ञानीतजो

तजो मालवक वेटा

अगर मिल ज्ञानी है तो उसे भी छोड़ देना चाहिए, पुत्र
मालवक हो तो उसे भी छोड़ देना चाहिए, शुभ जालची हो
या विष्व जालसी हो तो छोड़ देना चाहिए। धर्म का अर्थ
यह है और उसके बाद दूसरा पुस्त्रार्थ अर्थ बता दिया।

ज्ञान का मतनब है धन, बाहन, धर, सुख जुविभारं।

ऐसा न हो कि लोग आपको कहें कि आप नो गुरु से
मिलकर आए हैं और आप सुद मृत्यु मर रहे हैं कि
आपके पास रहने को मकान भी नहीं है। हो सकता
है जापके पाप मकान नहीं है मगर आप शुरुआत
करेंगे तो मकान बन जाएगा कहीं न कहीं तो शुरु
करना पड़ेगा।

काम का अर्थ है शादी करना पुर, संतान पैदा
करना और आपने जीवन में पूर्ण गृहस्थ का पालन
करना। गृहस्थ का मगर अर्थ है गृहस्थ में रहने द्वार
पूर्ण सन्यासी रहना कि जो हो रहा है हो रहा है।
आप दुखी मत होइए। कर्त्तव्य जल्दी है मगर चिंता
मत करिये। मैं स्वयं आपके सामने उदाहरण हूं।

और मोक्ष का अर्थ है मुक्त अर्थात् सभी
सम्बन्धों से मुक्त हो जाएं त कोई तमाख न
जावज्यकता न अनिवार्यता भी जन मिल गया तो
मिल गया नहीं मिला तो नहीं मिला, पैसा हो
तो ठीक नहीं हो तो ठीक उसे मोक्ष कहते हैं।

और जीवन में ये चारों अंग आवश्यक हैं।
धर्म तब होगा जब आप रोग मुक्त होंग। आप
रोगी होकर आप धर्म नहीं कर सकते, मंत्र
जप नहीं कर सकते, दीक्षा नहीं ले सकते
और जीवन का आनन्द नहीं ले सकते। जीवन
एक आनन्द की चीज है।

अगर मृत्यु श्रंगार की चीज है मृत्यु तो
ऐसी है जैसे आदमी का श्रंगार किया जाता
है, जीवन ऐसा हो जो आनन्द दायक हो।

अगर मगवान ने सकल पदार्थ बनाए तो
ऐसा हो कि हम उसका प्रयोग करें। हमने पैठ
बनाए, खाने के लिए फल बनाए। धूमने के लिए
स्थान बनाए, वस्त्र बनाए तो हम उसका आनन्द
ते।

जैसे तुम भी क्या काम का कि शिष्य गरीब हो, दुर्खी हो तोह मैंगलियां उठाएं।
तुम तो तुम भी बेकार है, उस गुरु पर भी लोछन लगेगा।

जब आनन्द ले, धन कमाएं मगर आप लक्ष्मी के दास मत
बनावे, लक्ष्मी पति बनाये। आप मगर हो जाने हैं लक्ष्मी के दास
कि लक्ष्मी मिली और निजोरी में बंद कर दी। अब उसके बाद
लक्ष्मी आपका चेहरा देखे नहीं आप उसका चेहरा देखे नहीं।
जल इकड़े करते रहें, आप भर जाएंगे और बेटे उसको उड़ा
दें।

आप धन का प्रयोग करें, आनन्द ले, जो आया खुच कर
लिया, नवाना होते समय, कहें ले बेटा सदा सुपदा, मौज कर।

कमाओ तुम और मौज करे बेटे करना ही नहीं ऐसा। आप
नुद साड़ए, पीजिए, अपने परिवार को बुझाने ले जाड़ए, पर
ज्ञान सचय, करके रख दिए कि मरने के बाद बेटों को दो-दो
नाच सपये दिए, तुम्हारे क्या काम आए?

और इकट्ठा करने में आनन्द ही नहीं है आज १५ लाख
लघवे हैं तो कल १६ लाख छोड़े वही रोटी वही सब्जी बस
मन में इतना होगा कि एक लाख बढ़ गए। ऐसा धन नहीं
चाहिए।

दोनों हाथ उल्लिखिए। जो आए उसे आप उड़ाए, खत्म
करें, मगर सही तरीके से होना चाहिए। होटलों में ढांस
करने से, डिस्को करने से कुछ लाभ नहीं। मैं यह नहीं
कहता आप होटल में मत जाएं, डिस्को मत करिये,
मगर एक संन्यासी की तरह जाइए, पैट पहने हुए भी
संन्यासी हो, कोई संन्यासी का तेका नहीं है कि लंगोट
लपेटे हुए ही संन्यासी हो। मैं यह परिभाषा भी बदल
रहा हूँ। केवल लंगोट लगाने वाले को संन्यासी नहीं
कहते।

अब संन्यासी बनने का मेरा योग है ही नहीं मगर
संन्यासी बना तो पैट टाई पहन कर संन्यासी बनूँगा।
लोग कहेंगे तो कहेंगे। मैं नुद चाहता हूँ कि आपको
एक बार टाई पैट पहन कर दीक्षा दूँ। देखना हूँ आपकी
आंखों में कितना विकार आता है वेश लेना चाहता हूँ।
आप नटस्थ रहें, आपकी आंख में एक शालीनता हो,
आंख में एक गंदगी न हो यह आवश्यक है।

पांचीती ने कहा कि आने वाले पीढ़ियों में रोग होगा।
हर व्यक्ति को कोई न कोई रोग होगा चाहे मानसिक हो
चाहे शारीरिक हो, चाहे तनाव हो, चाहे मन में क्रोध हो।
और यह कहा कि लोग अर्थात् से प्रीडित होंगे।

सोलह सवये किनो जज होगा सो लोध पीडित होंगे ही होंगे। पैकड़ो
टेकन लेने जाने होंगे तो अबानाव होगा ही होगा।

बहुत अच्छे पक जपियां हैं ब्लॉकटर वो पर में सोफा रखते हैं,
नया सोफा खरीदते हैं, उम पर पेंच लगाते हैं फिर बैठते हैं उस पर।
मैंने पूछा-नया सोफा लाए उम पर यह पैबंद।

उसने कहा-आप समझते नहीं हैं, कई लोग आते हैं गुरु जी, देखने
हैं, आज कल मेरे ऊपर इकलायरी हो जाएगी गुरुजी इसलिए पेंचदी नगाया
है। लाया नया है, पर ऐसा कर दिया है।

अब वह पैसा क्या काम का उनका। आप बस निषिद्धते रहे कोई आशगा
तो देखा जाएगा। योके पर बैठते हैं, तो बैठते हैं, निखु ले सोफा है मेरे पास,
कहीं से गुरुजी ने मुझे मेट दिया था, गुरुनी से पूछ जाकर। कोई आशगा मैं
जवाब दे दूँगा।

व्याप्ति दो तरीके से दुखी होगा मगर भगवान शिव उनके लिए किर
बया किया जाएगा जाने वाली पौदियां बहुत दुखी होंगी।

और आप देख ले आज देसा ही हो रहा है आजकी विचारधारा में
और आज से कुछ बड़े पहले की विचारधारा में जीवन आसमान का
जंतर है। आपके बच्चे समझाने पर भी समझते ही नहीं, दोनों में एक जीप
है। उनकी धारणा अलग है आपकी धारणा अलग है। दोनों में एकनेस्टमेट
हो ही नहीं सकता, संभव ही नहीं है। फिर आप फालतु दुखी हों कि नहीं
बेटा ऐसा करना चाहिए। तो उसमें कुछ नहीं होगा।

जो कर्तव्य है नृहस्त्र का उसका पालन करिए समझाइए, मगर आप
उसमें इनवाल्व मत होइए और इसके लिए शिव भगवान ने कहा इसका
समाधान के लिए केवल शिवरात्रि पर्व पर ही मैं स्वयं गुरु मैं स्थापित हो कर
दूर करूँगा, पार्ती, तुम चिंता मत करो।

और शिवरात्रि के दिन गुरु स्वयं शिवमय होकर के दीशा प्रदान करता है
और यह मैं शास्त्र वचन कह रहा हूँ कोई व्यक्तिसंगत बात नहीं कह रहा।
क्योंकि शास्त्र में कहा है।

गुरु उम्मा गुरुविष्णु गुरु हेवो महेशवरः
जैन यह जाज से दस दूनार साल पहले का इलोक है कल का
जनोक तो है नहीं।

व: गुरु स: शिवः प्रोक्तः
व: शिवः स: गुरु स्मृतः
स याति नरकाभ यति
जो शिव है वही गुरु है, जो गुरु है वही शिव है। इन दोनों में जो
बेद समझता है वह नरक यानि दुख, पीड़ा में जाता है।
और नब गुरु से दीक्षा प्राप्त होगी तो स्वयं ही जीवन के सब
विकार समाप्त होंगे ही, धनाभाव, रोग, चिंता सब यमाप
होंगे।

जैसा मैंने कहा पहले कि आपका स्वयं का व्यक्तित्व बनना
चाहिए। और मैंने कहा कि आप क्या हैं, यह जल्दी है चाहे
पुरुष है या है स्त्री है। और व्यक्तित्व का अर्थ है ते नयुक हों,
ओजस्वी हों।

यह छोटी बात नहीं होगी, ये सब चीजें मिल नहीं सकती
जापको। युनिवर सिटी ने नहीं पढ़ाई जाती। आपको यह विद्यालय
में नहीं बताया जाना कि आपका व्यक्तित्व बनाना चाहिए।
व्यक्तित्व बनेगा तो आप उन्नता तक पहुंच पाएंगे।

और मैंने उदाहरण दिया। सत्युग से लगाकर आज तक का
कि नियम जादमी ने अपने व्यक्तित्व के निर्माण का चिंतन किया वही
व्यक्ति हमें आज स्मरण है। राम उनके पिता दशरथ, दशरथ के
पिता आज से आगे?

चौथी पीढ़ी क्या है पता ही नहीं उनका नाम ही याद नहीं, क्योंकि
उन्होंने खुद के व्यक्तित्व का निर्माण किया ही नहीं। और जो व्यक्तित्व
का निर्माण करेगा वह तो विद्रोही बनेगा ही।

आपमें भी विद्रोह पैदा हो आप दीक्षा ले सकें। साधनाएं कर
सकें ऐसा ही मैं आशिर्वाद देता हूँ।

•सद्गुरु हेव परमहंस निश्चिलेऽवानन्द जी

मंत्र-तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिज्ञ अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र

विज्ञान की

वार्षिक सदस्यता

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

बिलिंगले श्वशाबन्द स्तवन विशिष्ट वरात्मद चैतव्य माला

‘बिलिंगले श्वशाबन्द स्तवन’ ग्रन्थ मात्र भलिक काव्य या दीला स्वरूप बण्डवंड ही बही, अपितु ब्रह्माण्ड की दैत्यों के विशेष संयोजन से उद्भूत हुआ है। इसका एक-एक श्लोक मंत्रज्ञाय है जो उत्तम प्रशस्त व्रतकारी है। यह स्तवन तो सद्गुरुदेव विशिष्टलेखवालबन्द जी को प्रसन्न करने की ही मात्रिक प्रक्रिया है, लभी चित्तिका स्वतः ही साधक को थीरे-थीरे प्राप्त होने लगती है। यह स्तवन स्वयं में इतना जटिल है, कि इसके पाठ मात्र ही वातवरण में दिव्यता-व पवित्रता आ जाती है, मनोवालित कार्य सफलत हो जाते हैं, किन्तु स्तवन पाठ के अवलित लाभों का साधक होने का कम ही अनुभव किया है।

साक्षात् वातावरण द्वेष, भूगि-द्वेष, पूर्व जन्म द्वेष आदि भलिक काव्य से सम्बन्धित हुए विशेष दिव्य ‘बिलिंगले श्वशाबन्द वैतान्य माला’ को लेगाय किया जाया है। बिलिंगले स्तवन के नवीन स्वरूप में वी हुई विशेष गुरु पूजन विधि के अनुसार पूजन कर तथा इस माला को धारण कर विद्वान् दो सप्ताह तक पाठ किया जाए, तो साधक को आवश्यक उपलक्ष्य होती है। इस माला को धारण करने के बाद आपके हारा किया जाया पूजन, स्तवन विशिष्ट स्वयं से पूज्यपाद श्वशुलदेव तक पहुंचता ही है और साधक को उल्का आवश्यक प्राप्त होता ही है। यह माला गुरु साधकों में पूर्ण सफलता के लिए भी आवश्यक है। गुरु मंत्र माला, गुरु विद्वान् जावित आवश्यक वित्य पूजन सामग्री की तरह ही यह माला भी प्रत्येक साधक के पाठ से होता अलेक दुष्टियों से शुभ है। यह माला पूज्यपाद श्वशुलदेव की ओर से आशीर्वदि है। साधक जब भी गुरु साधका सम्पन्न करें अथवा गुरु द्वाव करें, गुरु पूजन करें, स्तवन पाठ करें, तो इस माला को गले में धारण करने का विशेष महत्व है।

विधि—इस माला को गले में धारण कर नियमित रूप से विशिष्टलेखवालबन्द स्तवन के नवीन स्वरूप में लिख गए पूजन का सम्पन्न कर भी नमाज नक अनुधान रूप में स्तवन पाठ करने पर मनोवालित सकलित्य काम पूर्ण होते हैं।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपले किलो मिन्ट, ऐटेंटेयर रह रखने को लालाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। लदि आप पत्रिका के सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी लदस्य तरकार रह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित प्रोटोकॉर्ड नं ४ का दपष्ट उक्तों में भरकार हमारे पास में है, तो उपहार हम उठाएं करेंगे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क—195/- डाक खर्च अतिरिक्त 40/-

सम्पर्क :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राज.)

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राज.)

फोन: ०२९३-४३२२०५, फैक्टरी - ०२९३-४३२२०१०

‘अ. एक्स्प्रेस’ 2002 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान ‘22’ ८



शिव प्रातिवर्ष उत्सव

भगवान शिव के मंदिर जिनके लिखालय कहा जाता है
उसमें नठडी, कच्छप, बणपति, छनुमान, जलधारा, वर्प,
लिखालिंग इत्यादि विभिन्न मूर्तियां विघ्मान रहती हैं।
इनका अंगीक अर्थ है और उस अर्थ को समझ कर पूजा
जीवन बद्धि समझा जाता है।

भगवान शिव जगत के कल्याणकारी देव कहे गये हैं जिनके स्मरण मात्र में मनुष्य को मान और आनन्द की प्राप्ति होती है, लदाशिव शब्द बड़ा, ओकार स्वरूप है। इसी लिए ॐ की प्रिय का स्वरूप ब्रह्म उक्तर माना गया है। शिव साधना तो प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण आनन्द एवं रम की प्राप्ति के लिए करता ही है लेकिन शिव मंदिर में भगवान शिव के अतिरिक्त अन्य मूर्तियों का स्थापित करने का क्या रहग्य है इसे समझना अत्यंत आवश्यक है जिना सोचे समझे केवल तिलक पूजन करने ने साधना नहीं होता है?

आइए एक कर विवरन करते हैं कि शिवालय में स्थित इन विभिन्न मूर्तियों का क्या रहग्य है।

शिव मंदिर में जाने ही सर्वप्रथम नन्दी के उत्तर होते हैं और यह नन्दी भगवान शिव का वाहन भी है। यह नन्दी मनुष्य की जीवन में आत्मा का वाहन शरीर का कार्य का स्वरूप है और कार्य से ही कर्म की उत्पत्ति होती है। जिस प्रकार शिव नन्दी पर विराजमान है उसी प्रकार भवेत् मनुष्य का मन और आत्मा काम पर पूर्ण अधिकार से विराजित होता चाहिए, भगवान शिव की ओर गतिशील हो उसी प्रकार मनुष्य का मन आत्मा शिव नन्दी के अधीन नहीं है। उन्होंने भगवान शिव का

अधिकार है उसी प्रकार काम पर और शरीर पर मनुष्य का अधिकार होना चाहिए। भगवान शिव आत्मा के स्वरूप है और नन्दी ब्रह्मवर्य का स्वरूप है और नन्दी की दृष्टि सदैव शिव की ओर ही रहती है। इसी प्रकार मनुष्य के शरीर का त्वक्य भी आन्मा है, अपने आत्मा में शिवतत्व को प्रकट करने की साधना को ही शिव पूजा करा जा सकता है और उसके लिए सर्वप्रथम आत्मा के वाहन शरीर को साधना भावशयक है। शरीर नन्दी की तरह शिव भाव में ओत प्रोत रहे देह अर्थात् शरीर तप और ब्रह्मवर्य की साधना करे खिंच और दृढ़ रहे यही महात्मपूर्ण सकेत और शिला नन्दी के माध्यम से वीर गई है।

कच्छप कच्छप का तात्पर्य है कछुआ को कि धीर-धीर जागे बहता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो कच्छप शिव की ओर गतिमान है जिस प्रकार नन्दी व्यक्ति के ल्प्यूर शरीर के लिए प्रेरक मार्ग वर्षक है तो कछुआ सुखम शरीर जर्ति मन का मार्ग वर्षक करता है। मनुष्य का मन कछुए की माति और से कठोर, भीतर से कोमल होना चाहिए। जिस प्रकार कच्छप भी शिव मध्य बने, तथा नरेव संगमी भी इथित प्रज रहे।



कछुआ कभी नन्दी की ओर नहीं जाता शिव की ओर ही जाता हुआ बनाया जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि हमारा मन देह, शरीर की ओर आत प्रोत न होकर आत्मा की ओर गतिशील रहे। नन्दी और कच्छप दोनों की शिव की ओर बढ़ रहे हैं अथात मनुष्य का शारीरिक कर्म और मानसिक चिंतन दोनों आत्मा की ओर गतिशील हैं और इस बात को परखने के लिए मगवान शिव के मंदिर में द्वार पर ही दो मूर्तियाँ विद्यमान रहती हैं। ये दो महानदेव हैं गणपति और हनुमान।

गणपति : गणेश बुद्धि के देवता माने गये हैं। लेकिन उनकी सूंड दशायी गई है। आज तक कहीं भी, किसी भी आदमी की सूंड नहीं देखी गई। आखिर क्या है यह सूंड? सूंड हाथी का 'हाथ' माना गया है। हाथ बाला जानकर होने से ही उसे 'हाथी' कहते हैं। हाथी की सूंड उसके दिमाग से भी जुड़ी होती है।

गणेश भी बुद्धि और हाथ के समन्वय के देवता है। गणेश की तरह हमारे हाथ भी दिमाग से जुड़े होने चाहिए। ऐसा नहीं कि बुद्धि तो एक ओर जाए और हाथ दूसरी ओर। इससे राष्ट्र-

के तु समाज चलेगा। एक ऐसा समाज, जिसमें एक जोर सिफे घड़ ही घड़ होंगे और दूसरी ओर सिर्फ सिर ही सिर।

हमारे हाथ से होने वाला हर कार्य बुद्धिपूर्वक हो और हर बुद्धिमान के हाथों में काम हो, यही गणेश का संदेश है।

गणेश का बाह्य चूजा है। गणेश गणतत्व के नायक है। नायक पति और चूजा-एक अकेले आदमी का प्रतीक है। एक अकेले आदमी की पीठ पर ही गणतत्व सबार होता है। विसके नीचे एक अकेला आदमी अपने-उपको मुरादित महसूस करे, वही मध्या नायक है, और वे ही सही अर्थों में गणनायक गणेश हैं।

मगवान गणपति का आवश्यक बुद्धि और समुद्दि का सदुग्रहोग करना क्योंकि वे कविता और सिद्धि के न्यायी हैं। ये आवश्यक गुण गणपति के हाथों में स्थित प्रतीकों द्वारा स्पष्ट किये गये हैं। उनके हाथ में अंकुर, संयम और आत्म नियंत्रण का प्रतीक है, बगल पवित्रता और शिरेपता का प्रतीक है, दुस्तक उच्च विचार एवं ज्ञान का प्रतीक है तथा मोहक मधु स्वभाव का प्रतीक है। इस प्रकार के

गुणों को अपनाने वाला व्यक्ति ही पूर्णतः शिवत्व भाव का अधिकारी होता है।

हनुमान : शिव मंदिर में ही हनुमान की मूर्ति आम विद्यमान होती है। हनुमान का तात्पर्य है, आदर्श, सेवा और संयम उसके नाय वृत्तचर्य जीवन का मूल सिद्धांत है हनुमान शिष्य भाव के सर्वोच्च व्यवस्थ हैं जो व्यक्ति जीवन में हनुमान की भाँति शिव भाव रखता है, अपने आदर्श राम के कार्यों में महयोगी रहे हैं। कृष्ण युग में अर्जुन के रथ पर विराजमान रहे हैं। ऐसा आदर्श अपनाने वाला व्यक्ति ही शिवतत्व और आत्म दर्शन की पात्रता प्राप्त कर सकता है।

शिव द्वार : व्यक्ति में नव नन्दी, कच्छप, गणपति, हनुमान का आदर्श आ जाता है तो वह साधक शिव रूप आत्मा को प्राप्त कर सकता है। शिवत्व भाव अपने जीवन में तो सकता है किंतु उसके साथ ही जो व्यक्ति अपने जीवन में ये सारे भाव प्राप्त कर लेता है तो उसमें निश्चय ही कुछ न कुछ अहंकार अवश्य आ जाता है और नव अहंकार आ जाता है तो सारी

समाप्त हो जाता है। क्योंकि नहीं शिवन्द है वह अधिकार का अधिकार नहीं हो सकता है। इसी बात को निष्ठाक का व्यवरण करने के लिए शिवालय के मंदिर का प्रबन्ध द्वारा भूमि से कुछ ऊपर ही रखा जाता है और द्वार भी कुछ ऊपर ही होता है। अर्थात् शिव द्वार में प्रवेश करते हुए अत्यन्त बिन्द्रना और सावधानी रखनी पड़ती है तथा यिर द्वाकान ही छठता है। मिर द्वाकाने का नाम पर्ण है समर्पण और समर्पण की अधिकार का समाप्त कर सकता है और जब यह अधिकार समाप्त हो जाता है कि मैं कुछ हूं तो उसे भीतर-बाहर शिवन्द के दर्शन होने नगते हैं सब कुछ मंगलमय लगने लगता है। आत्म जान का प्रकाश उदय होता है जब साधक भीतर की ओर प्रवेश करता है तो स्थूल जगत बाहर छृट जाता है और आत्म ज्योति उसे पूर्ण शिवन्द की ओर ले जाती है।

शिवलिंग और शिव मूर्ति : शिव मंदिर में जो शिवलिंग है उसे परम आत्मा ही कहा जा सकता है। हिमालय ना पान महान अमरान सा सुप्रसान शिवरूप आत्मा ही भयंकर शत्रुओं के बीच रह सकता है। शिव के गते में और शिवलिंग पर सर्प निपटा हुआ रहता है यह सर्प काल रूपी मृत्यु का स्वरूप है जो मृत्यु की भी अपना भिन्न बना सकता है वही माडाकाल कहला सकता है। जान और वैराज्य की भारण कर सकता है। यह काला नाम, कालातीत चिर समाधि भाव का प्रतीक है।

इसी प्रकार भगवान शिव द्वारा भारत किये जाने वाले कपाल कमण्डल और पवार्थ सतोरी नपस्ती अपरिग्रह ही जीवन साधन के प्रतीक हैं। चिता भूमि का लेपन जान वैराज्य और इस विनाश शीत विश्व में अविनाशी तत्व के सूत्र सकेत हैं। क्योंकि मनुष्य वेही समाप्त होने पर केवल चिता भूमि ही रह जाती है और जिसपने चिता भूमि ध्वारण कर ली वह जीवन में मृत्यु अमृत्यु से पर होकर आनन्द से रह सकता है क्योंकि उसे यह जान ही जाता है कि जीवन का सार केवल यह चिता भूमि ही है। बाकी सब कुछ अस्थायी है। हाथ में उमर आत्मा की आनन्द और आनन्द की अनुभूति के प्रतीक हैं, ये अंगु उमर भी तरी अनादन नाद के सकेत हैं जिसे नाव ब्रह्म कहा गया है शिव में चारों ओर कोलाहल ही कोलाहल है इन भव से परे हटकर स्वर्य के संजीत में ही मन रहना, आत्मस्थ रहना शिव युक्त होने का संदेश है। कमण्डल, कपाल, सर्प चिता भूमि होते हुए भी जीवन में निरंतर संगीतमय आत्मनन्द रखा जा सकता है। ये संगीत आनन्द का संगीत बाद है जो आत्मा को आनन्द से भर देता है।

शिवल: शिवल पत्र, तीन नेत्र, त्रिपुणि, त्रिशूल इत्यादि तीलमुण, रजोगुण और तमोगुण को सम करने का सकेत देते हैं। व्यक्ति के जीवन में ये तीनों गुण होने चाहिए। लेकिन समभाव में होने चाहिए, कोई भी भाव दूसरे भाव पर हावी नहीं होना चाहिए। इसी प्रकार ये तीन भाव विकाल से परे होने का निर्देश देते हैं और मनुष्य के भीतर में जो जावेश युक्त भाव उठते हैं उन भावावेशों को शान्त करने के लिए विनेश का उपयन अर्थात् ललाट पर भ्रकुटी में ध्यान केंद्रित किया जाता है, यह आज्ञा चक्र शिव स्थान है। यह तीनरा नेत्र विवेक और बुद्धिमत्ती माना गया है जो भविष्यत्वान्, आत्मरक्षा और कामदहन जैसी क्षमताओं का केंद्र माना गया है। विद्येव अर्थात् इस विष्णु महेश इन सभी को वियुक्त प्रतीकों से स्पष्ट किया गया है।

जल धारा: शिव पर अविरल टप्पकरने वाली जल धारा जटा में स्थित गंगा का प्रतीक है। यह जान गंगा है, जान का नाम पर्ण यह है कि प्रजा, दिव्य बुद्धि, गणवी, विकाल संध्या जिसे ब्रह्म विष्णु महेश भी उपासते हैं। शिवालय की जल धारा उत्तर दिशा की ओर बहती है। उत्तर दिशा में स्थित ध्रुवतारा, उच्च स्थिर लक्ष्य का प्रतीक है। शिवमय आत्म जान का प्रवाह जटेव उच्च स्थिर लक्ष्य की ओर ही गति करता है। जिस प्रकार उत्तर दिशा में ध्रुवतारा स्थिर है। उसी प्रकार साधक का लक्ष्य भी जटेव उच्च और स्थिर हो होना चाहिए। शिव पर अविरल बहने वाली जल धारा रस धारा है, इसका तारपर्य है कि जीव सदैव रस से ओत प्रोत होना चाहिए जीवन में कभी भी शुष्कता नहीं आए, ईश्वर कृपा की यह रस धारा जीवन में आनन्द ही रसधारा जान की रसधारा निरंतर प्रदाहित होती रहनी चाहिए।

शिव एवं पार्वती: शिवलिंग शिवमय आत्मा है और उनके साथ छाया की तरह स्थित पार्वती उस आत्मा की शक्ति है। इसका तारपर्य यह है कि कल्याणमय, शिवमय आत्मा की आत्मशक्ति भी छाया की तरह उपका अनुसरण करती है। और उसकी प्रेरणा तथा सहयोगी बनी रहती है।

शिव और गति को मिश्र-भिन्न करके नहीं देखा जा सकता है जहाँ शिव है तो वहाँ गति अवश्य है और जहाँ शक्ति है वहाँ शिव अवश्य है। जो साधक भगवान शिव के मंदिर में स्थित हैं उन सभी किश्तियों के प्रतीकों को भलीभांति यमद्वकर अपने जीवन में उतारता है वही वास्तविक स्वरूप से शिव साधना करता है भी जीवन में पूर्णत्व, शिवत्व को प्राप्त करता है।

तंत्र साधनाओं का सिद्ध पर्व

होली मठाफ़ैष

दिव इक्ष्युमि में प्रकृति औं साधक के अनुकूल हो उड़की इच्छा-पूर्ति में सहायक
बने, वही भण सिद्ध मुहूर्त हो जाता है....

अवधा साधक का सारा परिश्रम प्रकृति के बिच्छु ही तो होता है, होली और
इच्छा-मुहूर्त का सम्बन्ध बताता इह विवेचन

यह सम्पादन निष्ठ व्यापक में लगातार का एक संयोजन मात्र है। विष्वका इन्द्रेन का दूसरे कान में उड़ा है और इंधर के सामने से सम्पूर्ण ब्रह्मण ने तात्त्वमय दूसरा है, यह पूरे विश्व में बहुत पर्याप्त ब्रह्मण होती है तो साधक साधक को वह सम्पूर्ण व्यापक करती है और इसे ही जल के बहाने में सिद्धि का बहाना है। चमत्कार माना जाता है इनमें विविधता जैसी कोई बात नहीं। यह स्थिति तो साधन के व्याप्ति-में कोई भी व्याप्ति बहुत ही नकारा है। अतएव जलना होता है कि उह साधन का सिद्धि साधक प्रत्येक साधक का बहाना जापता है। और जड़-कुनक छोड़कर अपने गुरु के बहाने देने से साधना वे गतिशील रहता है, वहीं आम व्यक्ति जलना अधिकांश समय और उन्हीं जातीं जलना तब मर्देह में गवाए देते हैं। जलनाविक साधक जलना है कि उसे किस शण कीन सी साधना करना चाहिए और वह प्रकृति में ही रहे परिवर्तनों के प्रति जीवकी दृष्टि रखने हुए सम्मत्य साधनाओं की अपेक्षा तंत्र की साधनाओं को जलना देता है।

तंत्रोक्त साधनाएं ही वार्षिक में सफलता से अधिक संबंध रखती हैं, क्योंकि उसके पीछे व्यक्ति की जड़ने की प्रवृत्ति होती है, जिससे सफलता मिलने की सम्भावनाएँ जलती होती जाती

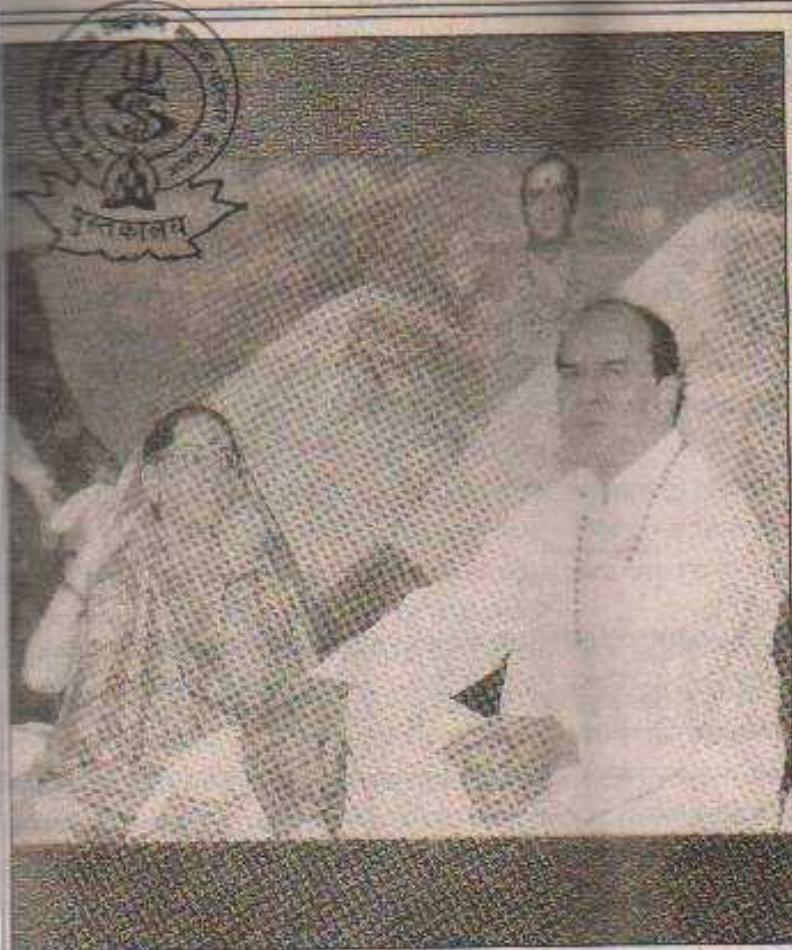
हैं। जलने सम्बन्ध व्यापक साधनों के बाद भी तंत्र की सर्वोच्चता निर्विकार करने में मद्दत होती है। वर्ष में कुछ दिवस ऐसे विशेष महात्म के द्वारा की जलनी का संतुलन, प्रकृति की रहस्यमय लीला, जल-जलनी द्वेष्टन होने के साथ इस प्रकार का वातावरण होता है जो साधक को उसके परिश्रम का सी गुना अधिक प्रभाव दे जाता है यह स्वयं कहे हो तो प्रकृति विशेष न करने के सामने पर साधक को जल मुहूर्त में सामने आती है। प्रकृति के प्रकट स्वयंपात्र हो जाने वाले इस उसे दो प्रकार की देखते हैं या तो शौकिल जह जलना या उच्च प्रचण्ड तृफान के ब्रह्मन्दर, खेतों को सौकर्ण बला नहीं कर जल और वहीं जाढ़ की उफनती नदी के जल के गोद निलम्बने वाला रीढ़ प्रबाह....

लोकों का जालनाव की जड़ी एक और सौम्य है, वहीं अपने प्रबाह में छटके से जिलाल दूल को भी उखाड़ कर निरा देने की समझ से दूसरी है, और जिन विनाश के नव-निर्माण संभव भी हो जाते हैं। प्रकृति की यह उड़ता और तंत्र की प्रचण्डता के सही जलनेवाल का दिन ही कालगात्रि, दीपावली की राति या हालिका-दून की राति होता है। प्रकृति इस दिन सामान्य नियम से नहीं होती। इन विवरों में कण-कण पूरी क्षमता से कम्पनामय रहता है और साधक इन्हीं क्षणों को पकड़ने की

कला जानत

ओर पि
घटिन होने
है, महाशिव
का। शिव उ
कहा जाए ते
पर्व आता है
लहरियों का
की उत्पत्ति है
तो किसी भी
का पर्व पूरे व
सीभाज्य की।

प्रकृति में
किया जा सके
के पहले -क्षण



कला जानता है।

और फिर होली का पर्व..... दो महापर्यों के टीक मध्य घटित होने वाला पर्व होली से पहले दिन पूर्व ही सम्प्रत्र होता है, महाशिवरात्रि का पर्व और पन्द्रह दिन बाल चैत्र नवरात्रि का। शिव और शक्ति के टीक मध्य का पर्व और एक प्रकार से कहा जाए तो शिवलक के शक्ति से सम्पर्क के अवसर पर ही यह पर्व आता है। जहाँ शिव और शक्ति का मिलन है वही ऊनों की लहरियों का विस्फोट है और तेज का प्रावृद्धता है, क्योंकि तेज की उत्पत्ति ही शिव और शक्ति के मिलन से हुई- यह विशेषता तो किसी भी अन्य पर्व में सम्मय ही नहीं और इसी से होली का पर्व पूरे वर्ष का पर्व, साधना का मिश्र महूर्त, तांत्रिकों के सीभाग्य की घड़ी कहा गया है।

प्रकृति में हो रहे कंपनों का अनुभव सामान्य रूप में न किया जा सके लेकिन महाशिवरात्रि के बाहू ओर चैत्र नवरात्रि के पहले क्या वर्ष के सबसे अधिक माहक और अवान्निल दिन

नहीं होते?..... क्या इन्हीं दिनों में ऐसा नहीं लगता है कि दिन एक गुनगुनाहट का रूपर्थ देकर चुपके से चला गया है और सारी की सारी रात आंखों ही आंखों में थिता है... क्योंकि यह प्रकृति का रंग है, प्रकृति की मादकता, उसके द्वारा छिड़की गई जीवन की गुलाल है और रातरानी के खिले फूलों का नशीलापन है। पूरे साल भर में जीवन और अठखिलियों के पेसे मदमाते दिन और ऐसी अंगडाईयों से मरी रातें फिर कभी होती ही नहीं और हो भी कैसे सकती है...

तेज भी जोऽन की एक मस्ती ही है, जिसके सुरूप से आंखों ने गुलाबी झोरे उत्तर आने हैं, क्योंकि तेज का जानने वाला ही सही अर्थ में जीवन जीने की जल्द जानता है। वह उन रहस्यों को जानता है जिनमें जीवन की बागडोर उसके ही हाथ में रहती है और उसका जीवन धटनाओं या संघों पर अधारित न होकर उसके ही बश में होता है, उसके द्वारा ही गतिरोल होता है। तेज का साधक

ही अपने धीतर उफ़तों शक्ति की मायकता का यही मेल होली के मुहूर्त से बेता सकता है और उन साधनओं को सम्पन्न कर सकता है, जो न केवल उसके जीवन के संवार दे बल्कि इससे भी आयोग बढ़कर उसे उन्ने और उसे उठाने में सहायक हों।

इस वर्ष महाशिवरात्रि १२ नार्च २००२ को है और चैत्र नवरात्रि १३ अप्रैल २००२ को प्रारम्भ हो रही है। इसका तात्पर्य है कि विशेष तांत्रिक साधनाएं करने के लिए महाशिवरात्रि से नवरात्रि तक पूरे पक महीने में विशेष साधनाएं करने का समय है, जिसके जीवन में तेज नहीं है उसके लिए जीवन का कोई महत्व नहीं है।

तांत्रिक साधनाओं का यह तात्पर्य नहीं है कि वे साधनाएं केवल विशेषों को जानि पहुचाने के लिए अथवा जीवन में शक्ति प्राप्त कर उसका कुछ योग करने के लिए ही हों। वास्तव में तेज साधनों को तीन भागों में बांटा गया है जिसे आचार कहा गया है। यह तीन आचार हैं-

१. वामाचार २. दक्षिणाचार ३. दिव्याचार

वाम एवं दक्षिणाचार और तत्र पश्चिम एवं दक्षिण से भिन्न होते हुए भी एक ही लक्ष्य पर ले जाते हैं। केवल भेद इनमा है कि वामाचार प्रवृत्ति मूलक तथा दक्षिणाचार निवृत्ति मूलक है। प्रवृत्ति से निवृत्ति को ओर ते जाने वाले तत्वाचार को दक्षिणाचार कहते हैं। प्रवृत्ति तो प्रत्येक व्यक्ति जीव का सहज गुण है परन्तु निवृत्ति मठास्त्रवदायक होती है। यह दक्षिणाचार इन दोनों तत्वाचारों के विस्तृत नहीं है अपिन्द्र दोनों का संयोग ही है।

शास्त्रों के अनुसार साधक को अपने गुण का आजानुसार तत्वाचार का निर्धारण करना चाहिए नथा युक्त भी शिव की प्रवृत्ति अपिरुचि और शक्ति का विचार कर लाये एवं निष्ठाम साधना उपासनाओं का जान प्रदान करते हैं।

ये जीवन विभिन्न रूपों में भरा है और गृहस्थ व्यक्ति की स्वसार का सबसे बड़ा दोषी लक्ष्य तचित है क्योंकि वह संसार के सारे कारों को सम्प्रभु करता हुआ युक्त एवं ईश्वर में असाम लगाता हुआ अपने अभिष्ट लक्ष्य की ओर नियन्त्र अग्रसर रहता है।

इसी उद्देश्य से इव आर शिवरात्रि से नवरात्रि तक के महाकल्प के लिए ज्यारह विशेष साधनाएं दी गई हैं, जिन्हें प्रत्येक मन्त्री पुरुष साधक सम्पन्न वर सवता है क्योंकि साधना विधान में कहीं भी स्थी पुरुष का भेद नहीं है, जो साधना करते हों वही साधक कहलाना है जिसमें आजनाओं का कर्तव्य ला सकें देता है वही साधक है।

अगले पृष्ठों में साधकों की आवश्यकताओं को देखते हुए जो ११ विशेष साधनाएं दो जा रही हैं वे निम्न हैं-

कार्यसिद्धि विद्ययासिनी साधना-

वाधा नाशक वाराही साधना-

रेश नाशक विशालायक्षिणी साधना-

मनोकामना पूर्ति वाणी साधना-

सम्पोहन सिद्धि कामेशी साधना-

पूर्वजन्म कृता पापशमन केन्त्रारिणी साधना-

संतान प्राप्ति मंगला साधना-

संकट मोचन-भैरव साकर साधना-

विजय प्राप्ति गणपति साधना-

अधोर पीड़ा नाशक हनुमन्त साधना-

गृहस्थ सुख प्राप्ति शिव गौरी साधना-

इस साल यह पर्व २८ दि. २००२ को सम्पन्न हो रहा है। जो भी अपने जीवन को और अपने जीवन से भी आगे बढ़कर समाज व देश को संवारने की इच्छा रखते हैं, लाखों-लाख लोगों का हित करने, उन्हें प्रमाणित करने की शीली अपनाना चाहते हैं, उनके लिए तो यही पक्ष सही अवसर है। इस कल्प में लोही भी

साधना सम्पर्क की जा सकती है। तांत्रीक साधनाएं ही नहीं बल महाविद्या साधनाएं, अप्सरा या यशोगांी साधना या विर वेताल, भैरव जैसा उप साधन भी सम्पन्न की जाए तो सम्मता एक प्रकार से सामने हाथ बांध लड़ी हो जाती है। जिन साधनाओं में पूरे वर्ष भर सफलता में मिल पाई हो, उन्हें भी एक बार फिर इसी अवसर पर दोहरा लेना ही चाहिए।

होली पर क्या करें ?

इस वर्ष २८ मार्च को आगे बाली होली के लिए आप विशेष तेयारी कर से कम १५ दिन पहले शिवरात्रि से ही प्रारम्भ कर दें। मैं यहाँ पर वह समष्ट कर देना चाहता हूँ कि होली पर्व घर के दुस दरियों स्थीर कूड़े को जीवन से निकाल बाहर फेंक देने का पर्व है, बीबाली में होली तक आपने क्या-क्या करते चिन्ह हैं, अपने जीवन में क्या-क्या लक्ष्य स्थापित किया है और उस लक्ष्य की पूर्ति के लिए आपने अपनी कार्य धमाता में कितना विकास किया है। यह सब अपने मन ही मन समझ जर अपनी गलतियों पर विचार कर उन्हें पुनः नहीं दोहराने का संकल्प बिक्रम है।

यदि प्रहलाद एक ग्राहक के घर उत्पन्न होकर अपने-आप को इसना मठान भूल बरा सकता है कि उसने भगवान नृसिंह को आकाश कर दिया और स्वसार में पुनः कषेमुनियों की प्रतिष्ठा स्थापित की। यह ठीक है कि आप भी राडे-गले नगाज में पैदा हुए हैं जहाँ आपको एवियर का महायोग नहीं है, आप कुछ भी कार्य करने से पहले आवश्यकता से अधिक धबशत है लोकेन साथ ही यह याद रखें कि आपके पास सक्षम मुक्त है, श्रेष्ठ माध्यमाएं हैं और आप स्वयं तंत्र क्रिया द्वारा अपने जीवन तंत्र को उत्तम बना सकते हैं।

जिस दिन आपने साधना के क्षेत्र में पहला कदम उठा दिया तो निर्देश ही बृसरा कवम आगे बढ़ेगा। अपने इस जन्म के दोषों को तो दूर कर ही देंगे पिछले जन्म के दोषों को भी दूर कर अपना भाव्य स्वयं निखलने में समर्थ हो सकेंगे।

केवल यह एक दूसरे के ऊपर फेंकने से, अप शब्द इत्यादि बोलकर मन के विकाल देने से होली नहीं मनाई जा सकती है। वास्तविक होली तो यह है कि आपके आनंदरिक जीव में सप्तरी दंदनेष्व स्थापित हो और आप जीवन के सभी रोगों का निरंतर अनुभव करते हुए आनन्दपुर जीवन जी सकें।

होली शुभ अवसरा पर गृह परिवार के ओर से हादिक आशीर्वाद अभिनन्दन

तत्र
जिसने
उसके उ
आपिरुल
कर देता
चेहरे क
जाती है
आवश्यक
घी उम्रन
उवलूद
अपना उ
चिस्टि र
चिन्ताए
विनि
विनियोग
उ०
अनुष्टुप
विनियोग
जल

महाशिवरात्रि से नवरात्रि के बीच सम्पन्न करें ये अद्वितीय साधनाएं



बोली महाकला की ११ दिन साधनाएं

कार्यसिद्धि विन्ध्यवासिनी साधना

तंत्र विद्या के जानकार यह अच्छी तरह से जानते हैं कि जिसने अपने जीवन में विन्ध्यवासिनी साधना सम्पन्न कर ली उसके जीवन में कोई भी कार्य रुकता नहीं है, वह अपना जीवन जविश्ल गति से चलाता हुआ अपने आप में शक्ति की स्थापित कर देता है और जहाँ शक्ति स्थापित हो जाती है यहाँ साधक के चहरे का ओज, चिचारों की प्रकृति और बायशीली ही बदल जाती है। इन साधनों में किसी भी प्रकार से दरने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह रात्रिकलीन साधना होते हुए भी उग्रता प्रदान करने वाली साधना है, जब जीवन के कार्य अवरुद्ध होते हैं तो मनुष्य में हताशा निराशा आती है और उसे अपना जीवन रखनी लगते हैं। लगता है कि जीवन बिन्ट रहा है, इसका कोई अर्थ नहीं है। इन सब मानसिक चिन्ताओं को पूर्ण रूप से हटाने के लिए साधक की विन्ध्यवासिनी साधना अवश्य ही सम्पूर्ण करनी चाहिए-

विनियोग : दाढ़िने हाथ से जल लेकर निम्न प्रयोग का विनियोग करें -

ॐ अस्य विन्ध्यवासिनी मंत्रस्य, विश्रवा ऋषि, अनुष्टुप्पछन्दः, विन्ध्यवासिनी देवता मम अर्थात्प्रियदर्ये यज्ञे विनियोगः।

जल भूमि में छोड़ दें।

न्यास

निम्न नियंत्रण अंगों को छाहिने हाथ से रूपर्शी करें।
ॐ विश्रव ऋषये नमः शिरसि - सिर का रूपर्शी करें
अनुष्टुप्पछन्दसे नमः मुखे - मुख का रूपर्शी करें
विन्ध्यवासिनी देवताये नमः हृदि - हृदय का रूपर्शी करें
विनियोगाय नमः स्वागे - सभी अंगों को रूपर्शी करें

करन्यास

एहि एहि अंगुष्ठाभ्यां नमः।
थक्षि यथि तर्जनीभ्यां नमः।
महायक्षि मध्यमाभ्यां नमः।
बटवृक्षनियासिनी अनामिकाभ्यां नमः।
शीघ्र में सर्वस्पौत्र्य कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
कुरु कुरु स्वाद्य कन्तलकर्युज्ज्वलाभ्यां नमः।

द्यान

दोनों हाथ जोड़ करके निम्न मंत्र का उच्चारण करें।
अरुण चन्द्रनवश्च विभूषितां सजल तोयद रूप रुद्रहाम् ।
स्वर कुरु सदृशं विन्ध्यवासिनी क्रमुकता गलतावलपुष्कराम् ॥

साधना विधि

किसी भी शानेवार को रात्रि को साधना आरम्भ करें।
साधक रसान करके शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने रसाने चीकी



पर लाल वस्त्र बिछुकर नांवे की प्लेट में विन्ध्यवासिनी यंत्र स्थापित करें। उसके सामने ७ चावल की हड्डी बनाकर रात सुपरी स्थापित करें। साधना काल तक तेल का दीपक जलते रहना आहिए तथा सुगन्धित अगरबत्ती जलाएं। सबसे पहले बोनों हाथ जोड़ कर गुरु प्रार्थना करें -

गुरुब्रह्मा गुरुविष्णुः गुरुदेवो महेश्वरः।

गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

इसके बाद यंत्र तथा ७ नूपरियों का पंचोपचार से पूजन करके निम्न मंत्र

बोलते हुए भुजारियों पर अकाल और कुंकुम मिलाकर चढ़ावें।

ॐ कामदायै नमः

ॐ नक्षत्रायै नमः

ॐ मधुरामनायै नमः

ॐ भोगदायै नमः

ॐ मानदायै नमः

ॐ मधुरायै नमः

ॐ नमदायै नमः

मंत्र

ॐ ही यशि आगच्छ मम मनोवाञ्छितं सीख्यं देहि देहि स्त्राणा ।

यह सात दिन की साधना है। इस साधना को गति १० बजे ग्रामपंच करें, प्रतिदिन तीन माला शक्तिमाला से मंत्र जाप करना आवश्यक है। मंत्र जप के बाद एक माला गुरुभूषण अवश्य जप करें। अनुष्ठान अमावस्या के बात्र घण्टी सामग्री को लाल वस्त्र में बांधकर जल प्रवाह कर देया होतिका में दृष्टि करें।

आप अपने हो मित्रों को पत्रिका बदलने का टार्फ ५ पर अपने दोनों मित्र का पता लिखकर भेजेकाढ़ मिलने पर रु. ४००/- की ओरी दी दी जाएगी आपको इस साधना की मंत्र विद्या प्राप्त प्रतिष्ठानमंत्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक लियमिलत रूप से पत्रिका भेजी जावगी।

बाधा नाशक वाराही साधना

यह ठीक है कि जीवन है तो बाधा है आती ही रहती है और मनुष्य अपनी शक्ति से उन बाधाओं का नामना करता है लेकिन यह भिरल्लर एक के बाद दूसरी बाधा आ जाती है जियह बाधाओं का हल प्राप्त नहीं डाता है तो मनुष्य क्या कर सकता है? ऐसी स्थिति में मनुष्य को देवी शक्तियों का उपयोग ज्ञानश्च हो करना चाहिए। वेव, वेवता, वेविया मनुष्य की मातृप्रिण शक्ति का ही बायुमण्डल में विस्तार है जो व्यक्ति इन देवी शक्तियों को अपने भीतर की शक्ति से भिलन बरबाद करता है वह जीवन में प्रत्येक बाधा को रसरलता पूर्वक बार कर लेता है और जीवन सरस हो जाता है। वाराही शक्ति अपने आप में आत्म उद्धति की मातृ शक्ति साधना है।

विनियोग

ॐ अस्य विष्णु नाशक मंत्रस्य, कपिल ऋषि, अनुष्टुप् छन्दः, वाराहीविष्टा आत्मनोऽसर्वाष्ट सिद्धयर्थं विनियोगः।

घड्गन्ध्यास तिथि

ॐ ऐ भली हृदयाय नमः।

ॐ ठं शिरसे स्वाहा।

ॐ ठं शिखायै वषट्।

ॐ ठं कवचाय ह्म।

ॐ हूँ नेत्रवत्याय वीषट्।

स्वाहा अस्याय फट्।

संकल्प

वाहिनो हृषि में जल लेकर संकल्प करें।

ॐ अस्य अमुक मासे (महीने के नाम) अमुक पक्ष (पक्ष का नाम) अमुक तिथि (तिथि का नाम) अमुक गोत्रः (अपना गोत्र) अमुक नाम (अपना नाम) मम सर्वं बाधा नाशय संत्रज्य करिष्ये।

ध्यान

दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें
विद्वदोचिर्विमनपदमेवधाना पाशं शक्ति मुदशरं वायुक्षं च।
नश्रोद्भूतेवौतिहोत्रिश्चनेत्रा वाराही नः शत्रुवर्गं क्षिणेतु॥

साधना विधि: किसी भी मेघलवार वा शुक्रलवार को दक्षिण दिशा की ओर मुङ्ख करके लाल आसन पर शत्रु वस बैठे साधना के लिए बैठें। सामने किसी पाव में वाराही यंत्र को अप्प छिप करके स्नान, निलक, धूप दीप एवं पुष्प से पूजन करें। उसके बाद काली हकीक माला से निमा मंड का पांच माला मंत्र जागाएं।

मंत्र

ॐ मलीं ठं ठं ठं हूँ स्वाहा।

यह ११ विन की साधना है। मंत्र अत्यंत तोशण और प्रभाव कारी है अस्ति शूद्रता का अवश्य ध्यान रखें। शुद्र भोजन एवं ब्रह्मदर्श का यालन अवश्य करें। साधना समाप्ति पर अभी सामग्री को जल में प्रवाह कर दें या होलिका अग्नि में भर्तीन कर दें। इसके बाद किसी छोटी कन्धा की भोजन कराके उचित दक्षिणा प्रदान करें।

साधना सामग्री- ३२०/-

रोग नाशक विशालायक्षिणी साधना

रोगों को हरने वाले देव तो महादेव हैं, जिसकी साधना करने से अकाल मृत्यु का भय तो नमान होता ही है, साथ ही साथ जीवन में रोग भी दूर होते हैं। सदाचित्र महादेव की यस्ति स्वरूप विशालायक्षिणी की साधना रोग नाश की साधना है। रोग छोड़ द्योगा हो भयवा बड़ा यह देव इर्षर को तो पीड़ा देने वाला होता ही है, उसके साथ ही साथ मन भी रोग के प्रभाव से बिचलित हो जाता है। इस कारण किसी भी कार्य में मन नहीं लगता है, न ही अपने आप को एकाण्डित्वा कर जाता है। यह साधना देव की बोनारी रो गरुन व्यक्ति स्वयं के लिए कर सकता है, इसके अलावा इसमें विशेष बात यह है कि परिवर का कोई अन्य समृद्ध भी किसी पीड़ा बीमारी में युक्त हो तो

उसके नाम का संकल्प लेकर यह साधना सम्पन्न की जा सकती है। साधना समाप्त होने के एक महीने भीतर-भीतर ही रोग जड़ से समाप्त होने लगता है और चेहरे की कांति पुनः उभर आती है। यक्षिणी नीं स्वयं सीनदर्श का स्वरूप है। इस प्रकार यह साधना एक प्रकार से सीनदर्श प्राप्ति की भी साधना है।

विनियोग

वाहिने हाथ में जल लेकर निन्न चंद्रम का उत्तराण करें।
ॐ अस्य रोगनाशक मंत्रस्य, कपिल ऋषि, अनुष्टुप् छन्दः,
विशालायक्षिणी देव्यै आत्मनोऽसर्वाष्ट सिद्धयर्थं विनियोगः।

ॐ हृदयाय नमः।

संकल्प

दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें।

ॐ अमृक गोत्रः (अपना गोत्र) अमृक शमार्तहम् (अपना नाम) अद्य मम भयरन रोग शब्द विनाशाय मंत्र नपम अहं करिष्ये। जल भूमि पर होड दीनिए।

ध्यान

जलमुदास वापोः शुभाशनि वभवेष्वर्वाहि स्मरोः।
नष्टवैर्विशेषेविभिरस्माकृशेषमहृ नाशवनु॥

अपने सामने गुरुचित्र रथाधित करके स्पृशित्वा गुरुपूजन एवं गणपति पूजन करके गुरु मंत्र का एक माला मंत्र नाप करें। उसके बाद किसी पात्र में कुकुम से स्वरित करके पंचापचार से पूजन करें। इसके बाद रोगनाशक कालीहकीक माला से निम्न मंत्र का ग्रन्तिदिन तीन माला मंत्र नाप करें।

मंत्र

ॐ ऐ विशाले हीं श्री कर्णी स्वाहा।

यह ऐ दिन की साधना है। साधना

करते समय धूप और तेल का शीपक जलते रहना चाहिए। साधना समाप्ति पर सभी स्मारणी को किसी भूमरसान जगह में जमीन पर गाड़ दें या जल प्रवाह कर दें। इसके बाद भी इस मंत्र का दस मिनट प्रतिदिन मंत्र जाप करें। जब तक पूर्णलिप से रोगनाश न हो जाए।

साधना समाप्ती- 150/-

ॐ ऐ शिरसे स्वाहा।
ॐ हो शिखाये वपद।
ॐ श्री कवचाय दुर।
ॐ कर्णी नेत्रत्रयाय वीषद।
ॐ स्वाहा अस्त्राय कद।

मनोकामना पूर्ति बाणेश्वी साधना

मनुष्य का जीवन ही दसोंलिए प्राप्त हुआ है कि वह आपने जीवन में कामनाएं अवश्य करे, कामना के बिना मनुष्य का जीवन पशु की भाँति है। कामनाएं मन से उत्पन्न होती हैं, उसीलिए ही मनोकामना कहा जाता है। केवल मनोकामना करने साथ ही कामनाएं सिद्ध नहीं हो जाती उन्हें कार्यालय में परिपूर्ण करना भी आवश्यक है।

बाणेश्वी देवी कामना पूर्क देवी गानी गई है। निसके ध्यान

में ही वे स्पष्ट होता है कि वे शिथित दलकर्णी ये विभूषित कामबाण से युक्त हैं। काम जीवन का एक अभिरुप भंग है और चतुर्वर्ग में इसे प्रमुख भ्यान दिया गया है। होली महाकल्प में वह साधना सम्पन्न करने में पहले जो कामना पूर्ण करना चाहती है वह यह ज्ञान और पूरी होने वाली होनी चाहिए क्योंकि जीवन में उद्दित की सोहिया एक-एक करके ही लक्ष्य पर पहुंचा जा सकता है। उसी प्रकार एक-एक कामना पूर्ण करके ही जीवन को पूर्ण

बनता जा रहा है, किसी भी मात्रा में अपनी शर्त से विनाश प्राप्त विनियोग उच्चारण करते ॐ अस्य वाणेश्वीवद वड्ड व्यास

सर्वाङ्गव्यास

द
द
ठ
ब
स

र

सम्मोहन का जाधिक मोड़क व सके। सम्मोहन व्यक्तित्व को उभा कल उद्योगात्मक निसके कारण उनका पढ़ना है जो समाप्त हो जाता है। पुराने आकृष्ण लगते हैं व्याप्ति जो आपके व्यक्तित्व के में भी बार-बार अपहन जो व्यक्ति व्यक्तिस्वरूप साधना होती है कि क्यों ज्ञाप्ति अ

संकल्प ना सकता है। ये कामनाएँ शरीर से सम्बन्धित हो सकती हैं, कार्य से सम्बन्धित हो सकती है अथवा जीवन के मुख्य भाग से सम्बन्धित हो सकती है जेकिन इसमें आप वो उपनी शक्ति का उपयोग कर आपनी सनोकामना पर पूर्णस्वयं व्यक्त करें।

विनियोग -दोहिने हाथ में जल लेकर निम्न संबंध का व्यवहार करने हुए विनियोग करें।

ॐ अस्य बाणेशी मन्त्रस्य सम्मोहन ऋषिमात्रीछन्दः

बाणेशीडेवता ममाऽभीष्टसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

उड़डु न्यास

सः हृवद्याय नमः,
अलू शिरसे स्वाहा,
अली शिखाये वषट्,
द्रीं कवचाय हुम्,
द्रो नेत्रवद्याय वौषट्
शो द्रीं बलीं लूं सः अम्बाय फट्।

सर्वाङ्गिन्यास

द्रां द्राविष्ये तमः मृदिनं,
दीं थोभिष्ये नमः वावयोः,
अली वशीकरिष्ये नमः मुख्ये,
अलू आकरिष्ये नमः नृथ्ये,
सः सम्मोहिन्ये नमः हृदि ॥

संकल्प - दोहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें।

जाज में निश्चितांगोत्राय आपनी मनोकामना पूर्ति करनिए निम्नमन्त्र का पाठ माला में जप वर रहा हूं जन्म घृणि पर छोड़ दें।

ध्यान -दोनों हाथ जोड़ कर बाणेशी देवी का ध्यान करें- उच्चद्वास्त्रवत्सन्निधा रक्तवर्णा नानारस्नालंकृताङ्गी वहन्ती। हल्ले पाणि चालुओं चापबाणी बाणेशी नः कामपूर्ति विष्वसाम्॥

इस साधना के लिए दक्षिण निशा अवधित है। लाल आसन विलापन लाल ३, व नवर ३ १ ग्रन्ति पर आगमन द्वारा बढ़ते। नामने चाकी पर लाल वरद बिलाकर मूर्ख व्यापित करें तथा अन्यन्त श्रद्धा और प्रेम पूर्वक ग्राहना करने हुए साधना की पूर्णता के लिए गुरुभूजन आवश्यक है। पूर्ण धूप दीप तथा निशेष चढ़ावें। उसके बाद गुरु छित्र के सामने बाणेशी यंत्र को स्थापित करके यंत्र के सामने तीन चावल की देरी बन कर तीन रुद्राश ऊंच पर रखें। द्विर पंचोपचार से सरी का पूजन करें। निम्न मंत्र का तीन माला जप करें।

मंत्र

द्रो द्रीं बलीं लूं सः।

यह ७ दिन की साधना है। सोमवार की साधना आरम्भ करने से पहले अपनी तीन एवं कामनाओं को कामज पर निष्कर्ष गुरुचित्र के नीचे रख दें। द्वेष द्विर भग्नी सामग्री की लाल ऊंच में बोधकर सादर नदी या समुद्र में प्रवाहित कर दें।

साधना समाप्ति- २१०/-

सम्मोहन सिद्धि कामेशी साधना

सम्मोहन का तात्पर्य है अपने व्यक्तिगत को उभार कर देना अधिक प्रोहक बना लेना कि वह व्यक्ति आपके अनुकूल हो सके। सम्मोहन की क्रिया व्यक्तिगत नहीं है, सम्मोहन में व्यक्तित्व को उभार कर उच्चाता पर ले जाने की क्रिया है। आज कल ज्यादातर व्यक्ति एक आकर्षक प्रशास्त्र से रिकॉर्ड डोसे हैं, जिसके कारण उन्हें जीवन में दार-बार अपमान का सामना करना पड़ता है और यह अपमान का जीवन जीत-जीते जीवन समाप्त हो जाता है। यदि व्यक्तिगत में सम्मोहन है, एक चुम्लकीय अल्पांश है तो सभी कार्य सरलता पूर्वक पूरे होने लगते हैं व्यक्तिकि जो कार्य आप सम्पन्न करना रुक्त हो ये कार्य आपके व्यक्तित्व के प्रभाव से अपने आप होने लगते हैं। कार्यालय में भी दार-बार अपमान जनक स्थिति का सामना नहीं करना पड़ता जो व्यक्ति व्यवसाय में रह है उन्हें लिए तो यह वरदान रुक्लप साधना हो देता है, कभी आपने इस बात पर विचार किया है कि क्यों आपको अपने व्यापार में पूर्ण उत्तरिति प्राप्त नहीं हो रही।

है जबकि दूसरे व्यक्ति को वोडे प्रशास्त्र द्वारा ही व्यापार में पूर्णता प्राप्त हो जाती है। यह सम्मोहन का ही प्रभाव है।

होली महकल्प पर अपने व्यक्तित्व की सम्मोहन युक्त बनाने के द्वारा वह दिव्य कामेशी साधना अवश्य सम्पन्न करें।

विनियोग-

ॐ अस्य श्रीकामेशी मन्त्रस्य सम्मोहनऋषि गायत्रीछन्दः कामेशीडेवता ममाऽभीष्टसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

उड़डु न्यास :

ॐ अलीं हृवद्याय नमः,
अलू शिरसे स्वाहा,
ॐ एं शिखाये वषट्,
अलीं नेत्रवद्याय वौषट्,
ॐ कलीं कवचाय हुम्,
ॐ हीं कलीं ऐ अलूं

संकल्प : दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न सदर्ग का उच्चारण करने हुए संकल्प करें।

आन में अपना नाम अमृक गोत्र पर्ण सम्मोहन रिषिङ के लिए अभुक व्यक्ति की अपने अनुकूल बनाने के लिए यह कामेशी मंत्र का जप कर रहा है। जल भूमि पर छोड़ दें-

ध्यान : दोनों हाथ जोड़ करके प्राथमा करें-

पाशां कु शाविक्षु शरासवाणी
करेवहन्तीमरणांशुकाद्वाम् ।
उच्चरथतं शाखिरुचि मनोज्ञा
कामेश्वरी श्लन्विनां प्रणीमि ॥

आपने जीकी पर इवेत वस्त्र विछाकर गुरु चित्र स्थापित करें फिर धूप, धोष तथा पूज्य आदि से विधि पूर्वक गुरु पूजन करके प्राथमा करें-

हे गुरुदेव मेरी साधना में जो बृद्धि ही उसे क्षमा करने हुए सप्तलाला प्रदान करे जिससे मेरे जीवन में अनुकूलता प्राप्त हो।

चित्र के सामने किसी प्लेट पर कामेशी वंश की स्थापित करें। फिर जल में यज्ञ को स्थान करावें, कुकुम से यज्ञ के बारे दिशाओं में घास छिन्नी लगावें। मध्य में भी एक छिन्नी लगाकर अपने ललाट पर उसी कुकुम से तिळक करें। उपर्युक्त धूप, धोष और पूज्य से यज्ञ का पूजन करके अपना मनोकामना का भन में उच्चारण करने हुए यज्ञ के ऊपर २१ शलाक की पंखुडियाँ छड़ावें।

मंत्र :

‘हीं कलीं दे ब्लू स्ट्रीं’ ।

इस मंत्र का प्रतिदिन २१ माला सम्मोहन माला से मंत्र नाप करें। इस साधना को रात्रि ५ बजे के बाद प्रारम्भ करे किसी भी सोमवार से इस साधना को आरंभ कर सकते हैं। यह ५ दिन की साधना है। साधना पूर्ण होने पर सम्मोहन माला को २१ दिन तक एक घटा प्रतिदिन गले में पहनना चाहिए। यंत्र को पूजा कल में स्थापित रखें। २१ दिन के बाद सभी सामग्री का जल में प्रवाहित कर दें।

साधना लामगी- ३३०/-

पूर्वजन्म कृत पाप शमन फेल्कारिणी साधना

यह तो भूवरस्त्व है कि व्यक्ति का पुर्वजन्म होता है अपने इस जन्म में किए गए श्रेष्ठ अवश्यक कार्यों का भार अगले जीवन में ले जाता ही होता है। कई बार जन्म में बचपन से मन्दबुर्धि बालक अथवा किसी अन्य पीढ़ी से युक्त व्यक्तियों को लेखना हूं अथवा ऐसे व्यक्तियों को देखना हूं जो जीवन में प्रयत्न करने पर भी सफल नहीं होते हैं उसका कारण पूर्वजन्म कृत दोष ही है। जो आज किया उसका कल कल भूगतना ही है, तो किसी प्रकार पूर्वजन्म में किए गए दोषों का परिणाम इस जन्म में प्राप्त होता है। उसी प्रकार पूर्व जन्म में किए गए श्रेष्ठ कार्यों का सौभाग्य फल भी इस जीवन में प्राप्त होता है। मैं यह नहीं कहता कि आपने पूर्व जन्म में केवल दोष युक्त कार्य ही किए हैं लेकिन यदि इस जीवन में भार-बार बाधाएं आ रही हैं तो निश्चय ही इसका स्रोत पूर्व जन्म में ही है जिसकी आपको जानकारी नहीं है। उन पूर्वजन्म कृत दोषों का शमन व्यक्ति रखने कर सकता है यदि उसके पास श्रेष्ठ गुरु हैं, स्वयं का ज्ञान है और साधना करने की क्षमता है। आप में ये दोनों गुण विद्यमान हैं तो अवश्य सम्पन्न करे पूर्वजन्म कृत पाप शमन फेल्कारिणी साधना -

यह प्रयोग होली के दिन प्रातः आरंभ करें। स्नान अपने नित्य किया से लियून होकर पीला वस्त्र पहने तथा पीले आसन पर विश्व दिशा की ओर बैठें। सर्व प्रथम दोनों हाथ जोड़कर अपावान गणपति का स्मरण करे तब शब्द उच्चारण पूर्वक

आपने जीवनकामना परा करने के लिए तथा पारिवारिक सुख के लिए निषेद्धन करें। इसके पश्चात गुरु पूजन करके दो माला गुरु मंत्र का जप करें।

गुणपति पूजन कुकुम, पूज्य, अगरबत्ती, दीपक व प्रसाद आदि से करें, फिर आपने सामने साफ तांबे के प्लेट में फेल्कारिणी यंत्र का स्थापित करें। इस पर सिंदूर की ७ विन्दियाँ दाहिने हाथ की जानामिका से लगावें, और फिर इसका पूजन उस सामग्री एवं पूज्य से करें। इसके पश्चात दाहिने हाथ में जल लेकर भक्त्य देले कि मैं (अपना नाम) यह प्रयोग गणपति, गुरु की साक्षी में मैं घर पर या व्यापार पर किये गये प्रयोग या वैष्ण निवारण के लिए कर रहा हूं। वे दोष समाप्त हो जाएं और मेरी पुत्र उत्तम आरम हो। यह कष्टकर जल का भूमि पर छोड़ दें, भूमि माला से निम्नलिखित मंत्र की ११ गाला जप नित्य तीन किना तक बरे मंत्र-

ॐकली मम समस्त पूर्व दोषावन् निवारय वर्णी फट स्वाहा ।

मंत्र जप करने के पश्चात पुनः गुरु पूजन करें, और गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करें। तीन दिन के मंत्र का जप पूर्ण हो जाने पर फेल्कारिणी यंत्र को घर के बारे किसी सुनसान स्थान पर एक फीट का खुड़ा खोयकर उसमें गढ़ दें। साधना काल में एक समय शुद्ध एवं सामिक भोजन ले और बदर दर्द द्रवत का पालन करें। और भूमि पर श्रद्धन करें।

साधना लामगी- २७०/-

पर अपना सम्परी आदर लिखता है तो उसका जाता है अपने जीवन में वह आपको दी दी ये साधनों पर दें, धारापूर्ण जीवन भेजने की उम्मीद है।



1

हिन्दौर : करवरी 2002
 कुपाया मुझे साथना के लिए निम्न सामग्री
 भिजवा दे, वी.पी.पी. आने पर मे उसे छुड़ा लूंगा।
 पेरा नाम :
 ग्राम : फोटो :
 जिला : संख्या :
 समझो का नाम □

प्रिय सम्पादक जी,

दिनांक : फरवरी 2002

पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीनाली जी अद्वारा रचित निम्न अनमोल कृतिया गी। पी.पी. से भेजने की कृपा करें। पी.पी.पी. आने पर मैं बास्टैन को धनराशि दे कर छुड़ा लूँगा पुस्तकों के नाम -

मेरा नाम / पता :

नोट : 300/- से अधिक मूल्य का साहित्य एक साथ मंगाने पर 20% छूट प्रदान की जायेगी।

(पृष्ठ संख्या 55 पर प्रकाशित)

प्रिय सम्पादक जी,

मुझे उपहार स्वरूप अखण्ड सीधा व्यवस्था माला 390/- (300/- न्यौषादवर तथा डाक व्यय 90/-) की बी.पी.पी. से भेजने की कृपा करें। बी.पी.पी. आने पर मैं पोस्ट-मैन को धनराशि दे कर हुड़ा लूंगा। बी.पी.पी. घूटने पर मुझे 20 पत्रिकाएं नि:शुल्क भेजी जायेंगी।

मेरा नाम :

पृष्ठा पत्ता :

2

9

संतान प्राप्ति मंगला साधना

वृश वृद्धि के लिए संतान होना आवश्यक माना जाता है। संतान होने से परिवार भरा-पूरा लगता है और जीवन में पूर्णता की भी आभास होता है। मैंने यह अनुभव किया है कि जिन पति-पत्नियों की कुण्डली में मंगल दोष होता है उसीने दोनों से एक मंगली होता है तो पारिवारिक जीवन में तो सनात आना ही है साथ ही साथ या तो संतान होता ही नहीं है और यदि होता है तो विवाह के पश्चात बहुत आश्चर्य विलम्ब चढ़ता है।

इसके अलावा मंगल दोष के कारण गृहस्थ जीवन भी सम्मय, सुखमय नहीं हो पाता है। छोटी-छोटी बातों के कारण पति-पत्नी में वैचारिक मत-में उमर जाते हैं, साथ ही यीन जीवन भी पूर्ण रूप से श्रेष्ठ नहीं रहता है।

जीवन में किसी भी अभाव की पूर्ति के लिए शक्ति साधना सम्पन्न की जाए तो इसमें कोई दोष नहीं है। वैसे भी विवाह के पश्चात पति-पत्नी को एक युग्म के रूप में ही देखा जाता है। इस कारण हीली महाकल्प के शुभअवसर पर दोनों दो ही मिलकर वह साधना सम्पन्न करनी चाहिए, जिससे जीवन में जो दोष हैं वे दूर हो जाएं और गृहस्थ जीवन सुखमय बन जाए।

इस साधना को किसी भी माझ की गुणिमा या किसी भी शुद्धवार को संपन्न की जाती है। प्रातः ५, १२ वे ७, ३६ बजे के बीच रुक्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर वस्त्र पीले या सफेद धारण करें। उत्तर दिशा की ओर मुह कर बैठ जाएं। स्टील के ब्लैट में विशिष्ट मंगल यंत्र को स्थापित करें, उस पर गोल सुपारी एवं मौली रखें। किसी भी पति मैं पंचामृत बनावें। पत्नीन में दृथ, दृष्टि दी, शडू व शब्दर कर मिश्रण करें। फिर पत्नी अपने पति की वालिनी और बैठे एवं अपने बालों को खुला छोड़ दें।

फिर पति द्वारा रस्फटिक माला से १ माला निम्न मंत्र का जप करें और पत्नी एक मंगल यंत्र के ऊपर निरंतर पंचामृत चढ़ाते रहना चाहिए। यह इस प्रकार की गति से पंचामृत चढ़ावें कि १०८ बार मंत्र जप यानि एक माला पूरा जप होते होते यंत्र के ऊपर रखी सुपारी पंचामृत से फूट जाएं।

नमस्कार मंत्र

ॐ पौर्णेश्वराय योगाधिवलप्रकटायि पुत्र प्रदानव्य नमः ॥

फिर उक्त मंत्र का एक माला मंत्र जप होने के पश्चात दूसरे



चरण में पत्नी अपने पति की बांधी और बैठे। पति-पत्नी अपने गामों संतान प्राप्ति यंत्र रखकर दो पीली छक्की माला से मंत्र जप करना है। मंत्र जप काल में दो का हृषक जलावै। फिर दोनों ही तीन-तीन माला निम्न मंत्र का जप करें।

विशिष्ट मंत्र

ॐ पौर्णेश्वराय योगाधिवलप्रकटायि पुत्र प्रदानव्य नमः ॥

यदि नंत्र जप अलग-अलग समय पर समाप्त हो तो दोनों को मंत्र साधना की समाप्ति एक साथ ही करनी है। मंत्र जप की समाप्ति के पश्चात दोनों ही भक्तिमाव से गुरु यंत्र के सामने आश्रीत करें।

साधना काल के दूसरे दिन से सभी सामग्रियों को किसी वृक्ष, नहीं या पश्चिम नलाशय में विसर्जित कर दें। पीली छक्की मालाओं की अपने-अपने गले में धारण कर लें तथा प्रतिदिन एक दो दो घंटे तक प्रवित्रा पूर्वक अवश्य धारण किये रखें। साधना प्रारंभ करने से पूर्व गुरु पूजन एवं गुरु मंत्र जप अवश्य करें। इस प्रकार से माला को एक माह तक धारण किये रखें, और बाद में उसे भी जलाशय में विसर्जित कर दें।

साधना समाप्ति- ८३०/-

संकट मोचन-भैरव साबर साधना



साबर साधनाओं से भैरव साधना और महाकाली साधना प्रमुख साधना मानी गई है, तत्र के द्वारा मूल शैरवतनाथ द्वारा रचित ये साधनाएं तीव्र और नीक्षण प्रभाव देने वाली मानी गई हैं।

जीवन ऐसा नहीं है कि बाधाएं पूर्ण सूचनाएं ढेकर आपके सामने उपस्थित हों। जिन बाधाओं के बारे में जानकारी है उन बाधाओं का सामना करने के लिए तो व्यक्ति अपने आप को तैयार कर देना है लेकिन जो बाधाएं आकस्मिक रूप से आती हैं उनके लिए व्यक्ति तैयार नहीं रहता है और वे उसे एकदम गहरी पीड़ा देकर जीवन की थारा हो बदल देते हैं। कठ व्यक्तियों के जीवन में जो आकस्मिक उतार चढ़ाव देखे गए हैं वे इसी कारण होते हैं कि उनका शक्तिशल कम जोर होता है और संसार में घोड़ा बहुत पाप्त करने के पश्चात् गर्व से भर जाते हैं और इसी गर्व घमण्ड के कारण आकस्मिक बाधा आने पर अवनति भी तीव्र होती है।

ऐसी स्थिति में निश्चय ही साधक को साबर साधनाओं का

सहयोग लेना चाहिए जिसमें भैरव और काली की विशेष साधना की जाती है। महाकाली जहां महाकाल शिव की शक्तिशब्दस्पा है वहीं भैरव शिव के आरपाल है और जिस घर में जिस व्यक्ति के जीवन में भैरव और महाकाली समाहित हो जाए तो उसे संसार की बाधाओं से दरने की क्षमा आपश्वक्ता है।

साधना विधान

किसी भी शनिवार की रात्रि को स्नान कर गहरे नीले वस्त्र धारण कर नीले रंग के अस्त्र पर दक्षिण दिशा की ओर मुँह कर बैठ जाएं। अपने सामने तेल का वैष्णव जला दें और काली यत्र को अपने सामने किसी पात्र में स्थापित कर दें। काली यत्र के साथ गुरु चित्र भी स्थापित करें। फिर मूँह पूजन करके चार माला गुरु चित्र नप लाएं। यत्र का भी पंचोपचार से पूजन करें फिर कालीहकीक माला से निम्न की दो माला यत्र नप करें।

मंत्र

काली गत एक नरी, एक नरी, वीर सात समुद्र का जगमग तीर, कामाख्या रानी का गीरी पिण्डा, भैरवनाथा हरो सब पीरा, शब्द सांचा पिण्ड काचां कुरो मंत्र ईश्वरो तरी वाचा।

साधक अपने हाथ में जल ले और कुछ काले तिल के दाने, चालूल एवं शुष्प की पंखुडियों को लेकर संकल्प ले कि अमृत नाम शनिवार रात्रि में अपनों अमृत प्रकार की पीड़ा के निवारण के लिए काली साबर प्रथोग सम्प्रस कर रहा हूँ अतः लाभ शोध मिले।

ऐसा कहकर वह सभी सामग्री किसी ताद्द पात्र में भरे जल में डाल ले तथा प्रत्येक बार के मंत्र उच्चारण के साथ ही कुछ तिल के दाने उसी पात्र में डालता रहे।

साधना समाप्ति पर उस पात्र को स्वयं के पिर पर से धूम कर धर से कुछ दूर विद्युत दिशा में पात्र की सभी सामग्री फेंक दाएं। इसी प्रकार अन्य रोगी के लिए प्रथोग करें तो रोगी का नाम ले और अन्त में सभी सामग्री को रोगी के पिर पर से धूमाकर फेंक दें।

साधना समाप्ति के पश्चात् यत्र एवं माला को घर से दूर करीं फेंक दें।

साधना सामग्री- 290/-

विजय प्राप्ति गणपति साधना



कहा जाता है कि बीमारी, मुकदमा और गरीबी ये तीन शब्द हैं जो जीवन को दोषक को तरह खोखला कर देते वाले हैं। एक बार जब ये तीनों जीवन में घृस जाने हैं तो जीवन शनि-शनै खोखला होता रहता है, और ऐसा लगता है कि जीवन का कोई अर्थ ही नहीं है।

मनुष्य का ये कर्मण है कि उन तीन वादाओं से जीवन में जितनी जल्दी थी सके उतनी जल्दी भूक्ष प्राप्त कर ले। जीवन में शब्दों द्वारा किए गए चात-प्रतिकृत जो शिविन बनती है वह अत्यन्त पीड़ा व्याक्र होती है। तो रोज कोट कच्छरी के चक्कर लगान, सम्पत्ति पर दूसरों का कछना, परिवार में विमद, ये सारे विविलिय विनाशक होते हैं।

मनवान गणपति को विनाशनी, मनलकारी देव कहा गया है जो विद्यों का विनाश कर जीवन में पूर्ण विजय प्रदान करने हैं। इसी कारण देवताओं में भी प्रथम प्रौढ़ देव है। ऋति-सिद्धि के स्वामी तथा शुभ और लाप के पिला है।

प्रत्येक कार्य ले पहले गणपति की पूजा इसीलिए की जाती है कि वह कार्य बिना बाधा के पूर्ण हो जाए, धर के द्वार पर भी गणपति की सूने-चित्र स्थापित करने के लिए वही भावना है

कि नित्य उनके उर्जा होने रहे और जीवन में बाधाएं समाप्त हो जाए। यदि कोई व्यक्ति नित्य प्राप्ति गणपति विशेष का व्याप्त कर आजने कार्य के लिए जाता है तो उसका दिन निश्चिन रूप से अच्छा बीतता है।

साधना विधान

नित्य कर्म से प्राप्त निवृत्त होकर शुद्ध ग्रासन विछाकर पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके बैठे, यामने चौकी पर ज्वेन वस्त्र विछाकर पहले गुरु चित्र का हाथ जोड़कर प्रार्थना करें। हाँ गुरुदेव मरी यह साधना अपनी कृपा से सफल हो जिसमें मैं शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके सुखी जीवन परिवार के सहित निविच्छ रूप से बिता सकूँ। इसके बाद धूप, दौप, पुष्प आदि से प्रतोपचार पूजन करके संफलण करें। याहांने हाथ में जल लेकर निम्न वाक्य का उच्चारण करें।

निविच्छ गोवींथ मैं (अपना नाम लिले), मैं आज सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्ति के लिए इस साधना में सफलता प्राप्ति के लिए इस मंत्र का यथासंरूप लप्त करूँगा। विष के सामने ताप का लिट रखा कर उसमें कुंकुम से स्फूर्तिक बनाकर पारव गणपति को उसमें स्थापित कर दें। फिर यथा विधि भान, तिलक, अशत, पुष्प, धूप, दौप आदि से पूजन करके लड्डू का भोग लगाएं।

यह प्राप्ति कालीन पांच दिन की साधना है। मूर्ति में रिन्कूर का तिलक लगाए, इसके बाद लड्डू का भोग लगाकर २१ लाल फूल कर्म के चढ़ाएं यदि कनेर पुष्प न मिले तो इसी जय मंत्र को बोलते हुए २१ लींग चढ़ावें निन काठि के लिए वह प्रयोग कर रहे हों उसका निवेदन करें। पांच दिन तक नियम आदि का पालन करें।

पांच दिन के बाद पांच कल्पाओं का भीठा भोजन बन दक्षिणा सदित कराएं। जब तक सुकदमा पूरा न हो तब तक गणपति जो का पूजन नित्य करे तथा एक माला या पांच माला नित्य लप्त करते रहें। जब भी कोटि कच्छरी नाएं तब मंत्र का स्मरण करें। विजय प्राप्ति के लिए किसी प्रकार की असावधानी न करें। श्रद्धा न छोड़ें। ऐसा करने से विजय अवश्य मिलेगी।

मंत्र

ॐ कर वरयाय विजय गणपतये नमः

अधोर पीड़ा नाशक हनुमन्त साधना



शिष्यत्व का सर्वोच्च स्वरूप हो अथवा सेवक का सर्वोच्च स्वरूप हो, श्री हनुमन की तुलना कहीं भी नहीं हो सकती है। केसा भी कार्य हो, केसा भी लोकट हो हनुमन चालीसा का पाठ करने से भी काफी कुछ हद तक सकलता प्राप्त हो सकती है तो किरणि तातोक रूप से हनुमन साधना की जाए और वह भी उचित मुहूर्त में तो पूरी सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है।

हनुमन केवल शारीरिक बल, ओज वीर्य, तेज प्रदान करने वाले ही देव नहीं हैं ये तो सर्व पीड़ा नाशक देव हैं और पीड़ा को शारीरिक पीड़ा अथवा भानसिक पीड़ा या कार्य पीड़ा में लोटा नहीं जा सकता। जब भी पीड़ा आती है तो उसका प्रभाव असीर पर, मन पर और कार्य पर तीनों पर ही पड़ता है। इस कारण

प्रत्येक साधक को अपने जीवन में नित्य प्रति नहीं तो मंगलवार को हनुमन साधना अथवा हनुमान मंत्र जप अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

साधना विधान

किसी भी मंगलवार को प्रातः ६ बजे स्नान आदि से निकून होकर शुद्ध वस्त्र धारण करके उन्नर दिशा की ओर मुह करके आसन पर जाएं। अपने भाग्ने किसी पात्र में जल लें और उस जल में घोड़ा कुक्कुम और अदान मिला लें। किरणि हाथ में संकल्प लेकर उपना नदम तथा गोत्र और दिन का उच्चारण करके जल भूषि पर छोड़ दें।

इसके बाद २१ बार निम्न मंत्र का जप करें। इस प्रकार से नियमित ११ दिनों तक मंत्र जाप करें और किरणि गोत्र को गले में धारण कर लें या पूजा स्थान में स्थापित कर दें।

इसमें पहनने योज्य यंत्र का प्रयोग करें। गले या बाजू में अपनी इच्छानुसार पहन लें या बांध लें।

मंत्र

ॐ नमो भगवति ब्रह्म शृङ्गले हनुम भक्तु खाद्यतु भद्रो रक्ष विष-पित
नर वक्षाऽस्तिवस्तपेष्ट भस्माणि भस्म लिम शरीर वक्षाऽप्य ब्रह्म प्राक्षरा निविते
पूर्वी विज्ञ मुच्यतु वक्षिणां विज्ञ मुच्यतु परिचयां विज्ञ मंत्रतु उत्तरविज्ञ मुच्यतु
तामार्च धनवाहपति बंधतु नामपीतं बंधतु यक्षराक्षसं पिशाचान् बन्धतु प्रेत
भूतगदवाहिं ये ये केचिद उपत्वस्तेष्या रक्षतु उम्ये रक्षतु अप्ये रक्षतु वेष्य
मुच्यतु ज्वल महावले पहयेहि तु मोटी-मोटी यटावलि ब्रजाग्नि वरुप्राकारे

एं फट हीं हीं श्री फट हं फुं के फः सर्व ग्रहभ्यः सर्व व्याधिभ्यः

सर्वदुष्टोपह्रवद्वेष्यः हीं अशेषभ्यो मा रक्षतु॥

साधना समाप्ति के बाद यंत्र को घर ये बाहर दर्शाइ दिशा में जमीन पर गाह दें या होली के दिन अस्त्रि में विसर्जित कर दें।

साधना कामयो- 300/-

गृहस्थ सुख प्राप्ति शिव गौरी साधना

गृहस्थ जीवन का आदर्श स्वरूप
भगवान् भवादित्र और माता पार्वती ही हैं।
इत्यलिङ्ग प्रत्येक गृहस्थ शिव गौरी को
अपना अराध्य मानता है। निस प्रकार
भगवान् शिव का गृहस्थ जीवन सभी
कामनाओं से पूर्ण है। पूज के रूप में भगवान्
गणपति और कांतिकेव हैं और सौवत्र साथ
में गौरी रूपा पार्वती हैं। स्थान भी पूर्ण शांति
युक्त हिमालय है, जहाँ पूर्ण आनन्द से
विशिष्ट होते हैं।

गृहस्थ व्यक्तियों के लिये शिव और गौरी
आदर्श स्वरूप हैं क्योंकि शिव को रमेश्वर
कहा गया है और गौरी को रमेश्वरी कहा
गया है। वह शिव और शक्ति का संयुक्त
रूप है जो शिवलिंग के रूप में प्रतिलिपित
होता है।

जहाँ जीवन में गृहस्थी है तो उसके साथ
बाधाएं तो आएंगी ही लेकिन शिव गौरी
की साधना कर जीवन को रस से युक्त
बनाया ना सकता है। जीवन में नित्य प्रति
आनन्द रस की वर्षा होती रहे ऐसा अनुभव
हो कि हर सबह एक नई प्रसन्नता लेकर
जीवन में आयी है, तो वह जीवन अचूत ही
जीवन होता है, उसमें प्रसन्नता का रस ही रस भरा रहता है।

शिवरात्रि को तो शिव साधना सम्पन्न करना ही है, उसके
पश्चात वह शिवगीरी साधना भी होती महाकल्प पर अवश्य
मम्पत्ति करें।

साधना विधान

यह साधना किसी भी शक्तिवार को प्राप्तः बहु मुहूर्त में
आरम्भ करना चाहिए। इस दिन स्नान करके पीली धोती पहन
कर, पीले आसन पर उन्नर दिशा की ओर सुख करके बैठें।
सामने चौकी पर गणपति के विद्या मृति स्थापित करके
अङ्गेशाश नमः इस मंत्र का उच्चारण करते हुए पीले चाबल
१०८ बार चढ़ाएं और दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें - हे।
भगवान् गणपति गुद्धे गृहस्थ सुख के लिये मुझ पर कृपा करें।
इसके बाद गुरु चित्र का भी पंचोनवार पूजन करके किसी



प्लेट पर कुकुम से या बेशर गे स्वस्तिक चिन्ह बनाकर गौरी
शंकर स्वदाक्ष म्यापित करें। इसके बाद नीतीष्ठकीक माला को
गोल करके उसी गौरीशंकर को पहना दें। इसके बाद स्नान,
धूप, दौप, पूज्य आदि ये गौरी शंकर की पूजा करके निम्न मंत्र
का पांच माला जप करें।

मंत्र

ॐ भवानी गौरये पति सूख सोभास्य तेहि वेहि शिव शक्ती नमः।

यह ११ दिन की साधना है, उसके बाद भी जब तक कार्य
गिरिन हो तब नव विधिवत पूजन के साथ उसी माला से ?
माला मंत्र जाप करते रहें। इस साधना में शुद्धता तथा आचार-
विचार, खान-पान का अवश्य ध्यान रखें। शुद्ध शाळाहारी
भोजन लेना चाहिए तथा स्वरूप चिन्तन करना चाहिए।

साधना लाम्हडी- 230/-

दुबोली है उंगलिया मैंने, खूबेजिगर मैं गुरु !

वो ही ज़क्षर दुनिया में ऐसे हैं जो दिन का चौर, अन्धर पहुँचकर निशर को चाक-चाक कर देते हैं, विना गुरु के इस जिन्दगी का मतलब ही क्या? आप और हम जो जिन्दगी जी रहे हैं, उसमें कुछ सार है क्या? कोई अर्थ है इसका? ऐसी जिन्दगी तो लर इन्द्रान भी रहा है और जिन्दगी अपने पास रखने से नहीं बनती, उस खूब में 'या तो किसी के हां जाने हैं' या किसी को अपना बना लेते हैं.... और जब गुरु के आपना बना ही निया, या हम उसके ही ही गये तो किर हमारा बनव ही क्या रहा।

इन्द्रजार कर लेंगे तमाम उम हम
मगर अफसोस रहेगा, कि उम कम था।

और वह हम्सी जिसे हम 'गुरु' कहते हैं, गामूनी शर्खियत नहीं होतो एक आला जिन्दगी होती है, बाहिर से लड़कर उसे नहीं समझा जा सकता-

बाहिर से बेख कर तू, समझोगा किस तरह?
किन्तु जमों की भीड़ है इस आवाजी के साथ।

और हम तो ऐसी शर्खियत को गम के अनावा दे भी क्या, सकते हैं, जो कुछ द्यावेर गाया है, वहीं तो हम देंगे, हमारी तो जिन्दगी भर की कनाई सुठ, छल धोखा करेब और गम के अनावा रही ही क्या है-

गुरु हम से उत्ता है, हम तो एक रम कण ही नहीं। वह कुछ नहीं तो एक कलश तो है ही.... और ऐसा कतरा, जिसकी तलाश पर जमन्दर करता है-

मैं एक कलरा ही सही, मेरा अनग बजूद तो है।
हुआ करे जो समन्दर, मेरी तलाश में है।

मैंने उनकी तलाश की है, उसे पहिचाना है, रु-ब-रु हुआ है, एक जिस्म हुआ हूँ, क्योंकि वह मेरा गोर है, मेरा जब कुछ है-

धड़कने सेज हुई, रुक भी गई नवजे हथात।

आपने अपने होठों पर, मेरा नाम तो नहीं लिया?
लिया है, और खूब कर लिया है क्योंकि मैंने उसके आपे के निशां लेने हैं-

आज कोई बेगाना, आदाब चमत्र आया है,
मैंने कांटों पर भी होठों के निशां लेने हैं।

और ये निशान कलों पर नहीं, काटों पर बेख हैं, खुशगवाह पर नहीं, जल्मों पर देख हैं, क्योंकि मैं दून या हँसफौ 'गुरु' पर सब कुछ लुटा बेठा है।

जमाना याद तुम्हारी न छोन ले मुझसे।

मेरी तो जीवन भर की यही कमाई है।

और इकीकरण यह है कि आपके कदमों में मेरी छस्ती ही क्या है, एक नर्ज भर भी तो नहीं-

तुम्हारा नर है जो पड़ रहा चेहरे पर

बरना कौन मुझे देखता अधरे में।

पर मैं हिमात डालने वाना नहीं हूँ, नका नहीं हूँ, उम की रफतार ने भी नेज चल रहा हूँ,

देखता हूँ अब भी आप मिलते हैं, मृझे जिन्दगी में या नहीं कही गुना नेज चलता हूँ, मैं अपनी उम की रफतार से।

और जहर पी रहा हूँ, जिन्दगी ने तमाम उम मेरे साथ किया ही क्या है, वह तो मुझे आनंदारी ही रही है-

जहर मिलता रहा, जहर पीते रहे,

यू ही मरते रहे वू ही जीते रहे।

जिन्दगी भी हमें आनंदाती रही,

और हम भी उसे आनंदाते रहे।

पर पता नहीं जिन्दगी ने यह दामन क्यों छाटक दिया...

हमने तो कांटों और भी नर्जी-से चुआ है, लेकिन

लोग बेवर हैं, फूलों को भी मसल देते हैं।

और इस जमाने ने मुझे आप की सरह निकाल फेका, और आपकी गोद में आ गया, आपके कदमों पर लिर रख दिया, आपको यह खून तिगर सोंप दिया-

मृझे फूकने से पहले, तिल निकाल लेना।

यह खिली कहि है अनानन, कहीं साथ बल न जाए।

और मेरी स्वाधिय यही है, कि आपके कदमों पर मेरा दून निकले, जब जिन्दगी में 'गुरु' ही मिल गये तो पिर इस नारीज को कही ही क्या रही, मैं तो जो कुछ हूँ, जैसा हूँ, आपका हूँ, अगर मैं मिलायग्म आपके साथ न जा सका, तो अफसोस आपको रहेगा।

इब कर तूफां की दी, भी खुबर,

आप ही बेखबर हों तो मैं क्या करूँ?

शिष्य धर्म

शिष्य का और गुरु का संबंध जीवन में सबसे श्रेष्ठतम् संबंध माना गया है। इन सबंधों को संसार की किसी भी तराजू में तोला नहीं जा सकता एक श्रेष्ठ शिष्य में निम्न गुण अवश्य ही होने चाहिए। इन गुणों से ही विश्वास, निष्ठा बढ़ती है।

- शिष्य वह है जिसकी हर समय मन में इच्छा होती है कि ढौड़ कर गुरु के पास जाऊँ। गुरु से प्राणागत संबंध होना चाहिए, देहगत नहीं,
- गुरु जानता है शिष्य को जीवन की पगड़ंडी पर कहां और कब खड़ा करना है और जहां खड़ा करना है उसके लिए क्या आङ्का देनी है। इसलिए शिष्य को आङ्का पालन में विलंब नहीं करना चाहिए।
- शिष्य के पास जो भी चिंताएँ हैं दुख हैं, परेशानियां हैं, बाधाएँ हैं उन सबको गुरु चरणों में समर्पित कर देना है।
- कोई आवश्यक नहीं कि समस्या होने पर ही गुरु से मिला जाए। गुरु के दर्शन मात्र से ही शिष्य का सौभाग्य एवं पुण्य जाग्रत होते हैं। इसलिए शिष्य निरंतर गुरु से संपर्क बनाए रखें।
- गुरु देव की सेवा किए बिना जो शिष्य कुल धर्म का पालन करते हैं उनसे मंत्र तथा देवता कभी प्रसन्न नहीं होते। अतरवाणी, मन और शरीर तीनों से ही सदा गुरु कार्य में तत्पर रहें।
- शिष्य के पास केवल तीन रास्ते हैं जिनसे वह लोहे से कुँड़न बन सकता है - सेवा, समर्पण एवं श्रद्धा और इन सबका समन्वय है प्रेम। गुरु से प्रेम द्वारा ही शिष्य सब प्राप्त कर सकता है।
- गुरु ईश्वर का प्रतिबिंब है जिसे शिष्य साकार अपनी आंखों से देख सकता है। ईश्वर को शिष्य ने भले ही न देखा हो पर गुरु के माध्यम से ईश्वर के हृक्य में प्रेम की धारा हो, आंखों में प्रेम के अश्रु हों।
- जब आंखों से प्रेम के आंयू बढ़ने लगे तब शिष्य को समझना चाहिए कि गुरु के दर्शन कर लिए।

शुद्धवाची

* अणु से तिराट लगाने की क्रिया केवल गुरु जानता है, मनुष्य के देवता लगाने की क्रिया केवल गुरु जानता है, मूलाधार से दाहसार तक पहुंचाने की क्रिया केवल गुरु जानता है। हठोलिए जीवन का आधार केवल गुरु है।

* प्रेम भनवाना और स्वर का आंतरिक संबंध है, एक पूर्ण हृदय का हृदय से संबंध है, प्राणों का प्राणों से संबंध है, उसमें वास्तव नहीं है। गुरु या ईश्वर से एकाकरण होने के लिए मन में प्रेम का दीज बोला पड़ता है।

* क्षिण्य यदि सच्चे हृदय से पुकार करे तो ऐसा होता ही नहीं कि उसका स्वर सदगुरु तक न पहुंचे। उसकी आवाज गुरु तक पहुंचती ही है, इसमें कभी संदेह नहीं होना चाहिए।

* ध्यान लगाने से आत्मा परमात्मा में लीज नहीं हो सकती, मंत्र लप से श्री ऐसा संशय नहीं क्योंकि आत्मा का परमात्मा तक पहुंचने का यो रास्ता है वह वेदना का है, तड़फ़ का है विरह का है, प्रेम के सागर, मैं झूँझ लाने का है तो

लीयन में सब कुछ प्राप्त हो सकता है।

* ज्ञान, चेतना, सुख, सौभाग्य आनन्द, मस्ती
मौतिक सफलता, मगर तब भी यह जरूरी नहीं है कि प्रेम प्राप्त
हो।

* मैं तुम्हें समृद्धि में छलांग लगाने की
किया सिखा रहा हूँ। मैं तुम्हें वह किया सिखा
रहा हूँ कि तुम आज साक्षात्कार कर सको यही
प्रेम की पूर्णता है।

* यदि चारों ओरों का अर्द्ध स्पर्श करने तो चारों का साठभूत
तथ्य इक ही है कि जीवन का प्रादंभ प्रेम है और जीवन का ऊन
प्रेम है।

* प्रेम की अवधीरताएँ का अम्बा ही एक अवधीर
है, अम्बा ही एक अल्फैटिक सौर्य है। ज्यों ज्यों व्यक्ति
प्रेम में दूखा है। उसके देहों की तेजिका बढ़ती जाती
है।

* जिस क्षण गुरु यह निरचय कर लेता है कि
अब गुह्ये हज शिष्यों को उत्थान परम अवश्या तक
पहुँचा देना है तो फिर भले ही, शिष्य में कितने ही
ठिकार हो गुरु यीदी उसे द्यान के महासामान्य में उतार
देना है। परंतु हमके लिए आदर्शक है कि गुरु से पूर्ण
प्रेम हो।



**जीवन जीवा हैं तो वीरता से जीए
सम्पन्न करें तांडोक पर्व होली पर**

नृसिंह साधना

देव भूमि आर्यवर्त में प्रत्येक पर्व देव पर्व होता है जिसका एक विशेष महत्व रहता है। सभी पर किंतु नए कार्य का परिणाम सीधा और उचित प्राप्त होता है। जीवन जीवा है तो शेर के समान तेजस्वी वीर जीवन ही होना चाहिए और इसका एकमात्र उपाय है अग्रदान नृसिंह को अपना आदर्श बनाकर नृसिंह साधना होली के महापर्व पर सम्पन्न करने से-

यह तो धृष्टसत्य है कि जीवन केवल गति रूप से नहीं चल सकता, जीवन में नवरंग आश्रित दया, करुणा, मोह, मध्न, वीरता, तेजस्विता, आशेषव, वन, परात्म, ब्रह्म इत्यादि सभी गुण हीन व्याकुल नन्मी सामान्य जीवन नहीं होकर आश्रित जीवन बनता है, व्यक्ति नन्मी साधन में पहचान बनती है। लेखा व्यक्ति केवल अपने घर परिवार के भरण-पोषण तक ही सीमित नहीं रहता अपितु वेश के लिए और भगवान के लिए भी अद्भुत कुछ करने में स्पष्ट रहता है। अपने लिए तो पशु भी जीते हैं, कोटि पतंगों भी जीवन यापन करते हैं लक्ष्मि मनुष्य का जीवन इस धौलि चिताने के लिए ग्राप्त नहीं हुआ है। मनुष्य का जीवन तो बना ही छलपिणी है कि वह अपने जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करे और जीवन में धूम धूर्य काम मोक्ष वसुवर्ण से जीत हुआ परम तत्त्व को प्राप्त करे।

जिसके जीवन में हर है, भय है, आशंका है वह व्यक्ति अपने जीवन में कुछ भी नहीं कर सकता है, जिसने अपने जीवन में भय, डर और आशंका को हटा दिया है वही अपना जीवन उत्तम रूप जैसी सकता है। जिस प्रकार जीवानों के शुभ अवसर

पर लक्ष्मी की साधना का विशेष महत्व है, उसी प्रकार होली पर नृत्रोक्त साधनाओं के साथ नृसिंह साधना सम्पन्न करने का महान पर्व है, जिसमें वह प्रेरणा प्राप्त होती है कि वीर व्यक्ति के लिए संसार में कुछ भी असभव नहीं है और जिन्होंने भी नृसिंह साधना सम्पन्न किये हैं उनके लिए श्रमसाम साधनाएं, वीर साधनाएं, वेताल साधनाएं, महाविद्या साधनाएं सम्पन्न करना अन्यन्त अर्थले ही जाता है क्योंकि तीव्र साधनाएं करने में पहले आत्मबल का नाशज्ञ भी आवश्यक है और यह आत्मबल उत्ता है नृसिंह साधना करने से। अपने जीवन को नृसिंह बनाने से।

नृसिंह का नात्पर्य है जो नर आश्रित मनुष्यों में श्री सिंह की गतिशीलि, जिस प्रकार जपना तो सिंह लिना रोक-टोक, सिंघुर और गधे से विचरण करता है उसी प्रकार मनुष्य भी अपने जीवन की बाधाओं पर विजय ग्रान्त करता हुआ सिंह के समान जीवन जिये जिसे किसी भी प्रकार की आशंका, डर और भय नहीं हो।

नृसिंह के रूप को समझने में पहले जो पुराणों में इनकी

जवतार कथा आती है उसे
मन्महना भी अवश्यक है,
जिससे यह जान होता है कि
किस प्रकार विष्णु के अवतार
नृसिंह अपने भक्तों पर कृपा
कर उसे पूर्णता प्रदान करते
हैं।

मगवान् नृसिंह

बाराह अवतार के लूप में
पृथ्वी का उदाहरण होते
मगवान् बाराह ने हिरण्यकश
का वध किया था इत्तरा उसके
बड़े भाई हिरण्यकश्यप
अत्यंत दुर्बल हुआ और उसने
अनेक हेतु का सकलन्प लिया
भारी लपस्या कर भागी
सिद्धियां प्राप्त कर ली और
ब्रह्मा छारा उसे सारे वरदान
प्राप्त हुए।

नब देवत्यराज
हिरण्यकश्यप तपस्या में भै
तो उनकी पत्नी कयादू के गम्भ
में प्रह्लाद थे। देवताओं ने
देवतों पर आक्रमण किया उस
समय वेवर्षि नारद ने कयादू
को उपने जाश्रम में शरण दी
और असुर पत्नी कयादू भी
प्रह्लाद को भक्ति का उपदेश दिया।

तपस्या पूर्ण होने पर हिरण्यकश्यप ने सारे लोकों पर
आधिकार कर लिया अपने पाठ के वध के बदला ले लिया था
और साधना भिड़ि छारा यह वरदान था कि उसे काई भी मनुष्य,
यशु मार नहीं सकेगा, भूती अथवा आकाश में उत्तरा वध
नहीं ढो सकेगा। इसी हिरण्यकश्यप के चतुर्थ पूर्व प्रह्लाद को
शिक्षा के लिए आपार्य शुक्र के पुत्र षण्ठि और अपक के पास
भेजा। इन दोनों गुरुओं से प्रह्लाद ने शर्म, अर्थ, काम, की
शिक्षा प्राप्ति की। शिक्षा पूर्ण होने पर फिरा ने उसमें पूर्व तो
प्रह्लाद का उत्तर था कि श्रवण, कीर्तन, गमण, नानवयन,
अर्चन, वन्दन, दास्य, चरण और आत्मनिवेदन - ये नी



भक्तिभाव ही श्रेष्ठ है।

हिरण्यकश्यप ने उसने पुत्र को तो मार देना चाहा लेकिन
मगवत कृपा से प्रह्लाद का कुछ नहीं बिगड़ा। संत्र बल से
कृत्या रक्षिती उत्पत्त हुई लेकिन वह भी प्रह्लाद का अत नहीं
बर सकती जिरण्यकश्यप की आश्वर्य हुआ कि ऐसी क्या
शक्ति इस बालक में है जिसके कारण से यह अमर है जबकि
उमरना का वरदान तो मुझे प्राप्त है उन्होंने अपने पुत्र प्रह्लाद
को बुआ पहलाव ने उत्तर दिया कि मैं उस शक्ति का साधक हूं
जिसका बल समस्त चरोंवर उत्तम में है। व्यग्र से राधास ने
कहा कि क्या इस खम्ब ने भी मगवान है प्रह्लाद ने कहा कि
निश्चय है। देवत्यराज ने खम्ब को तोड़ा और उस खम्ब से

एक महान व्यक्ति गर्जना के साथ प्रकट हुआ जिसका समस्त शरीर मनुष्य या और मुँह सिंह का था उस आकृति को देखकर देव्य छपट लेकिन नृसिंह रूप में उत्पन्न भगवान विष्णु ने सबको प्रारंभित किया और द्विरप्यकरण्य को पकड़ लिया।

देव्य ने कहा कि मुझे ब्रह्मा का वरदान है कि मैं दिवस और रात्रि में नहीं मरूंगा, कोई देव, दैत्य, मानव, पशु मुझे नहीं मार सकेगा। भवन में भयवा भवन के बाहर मेरी मृत्यु नहीं हो सकेगी, समस्त शख्स भूमि पर व्यर्थ होंगे। भूमि, जल और गगन में भी मेरा वध नहीं हो सकेगा।

भगवान नृसिंह ने कहा कि यह संध्याकाल है तेरे द्वार की बेहती है जो न भवन के भीतर और न ही भवन के बाहर है, मेरे जरूर शख्स नहीं है और मेरी जंघा पर तु न भूमि पर है न जल पर और न ही गगन पर और दूसरे के साथ ही अपने तीक्ष्ण नर्तों से उसके वध को दीर्घ कर उसका अन्त कर दिया। तदोपरान्त प्रह्लाद का राजनीतिक कर उन्हें राजा बनाया। प्रह्लाद के कारण ही देवताओं और देवतों में पुनः सन्दिध हुई। नगर में पुनः भक्ति साधना पूजा स्थापित हुई जब जब पृथ्वी पर अन्याय बढ़ जाता है तो भगवान किसी न किसी रूप में प्रकट होकर उस अन्याय का अन्त करते हैं।

नृसिंह साधना वर्यों आवश्यक -

ये साधना जीवन में चतुर्वर्ण धर्म अर्थ काम मोक्ष प्राप्ति के लिए सर्वोत्कृष्ट साधन मानी गई है। जीवन में वीरता का समावेश होता है और अज्ञात भय की आशंका पूर्ण रूप से दूर हो जाती है। जब जीवन में भय नहीं रहता है तो नाथक अपनी शक्तियों से पूर्ण रूप से कार्य कर सकता है यह विदिवसोय साधन होली के तांत्रोक्त पवर पर प्रत्येक साधक आवश्यक ही सम्पर्क करें।

साधना विधान :

विनियोग : अस्य नृसिंह मन्त्रस्य ब्रह्मा श्रहितः। अनुष्टुप्छन्दः। सुरासुरनमस्त्रृत नृसिंहो देवता। सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

प्राप्यादिन्यास

ॐ ब्रह्मवर्ये नमः शिरसि ॥१॥

अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥२॥

श्रीनृसिंहदेवताये नमः हृदि ॥३॥

विनियोगाय नमः सर्वज्ञे ॥४॥

करन्यास :

ॐ उग्रवीरम अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥

महाविष्णुं तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥

ज्वलन्तं सर्वतोमुखं मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥

नृसिंहर्भीषणं अनाभिकाभ्यां नमः ॥४॥

भद्रं मृत्युं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥

नमाम्यहं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥

हृदयादिप्रद्वन्यास :

ॐ उग्रवीरं हृदयाय नमः ॥१॥

महाविष्णुं शिरसे स्वाहा ॥२॥

ज्वलन्तं सर्वतोमुखं शिखाये वषट् ॥३॥

नृसिंह भीषणं कवचाय हुं ॥४॥

भद्रं मृत्युं मृत्युं नेत्रवयाय वीषद् ॥५॥

नमाम्यहम् अस्त्राय फट् ॥६॥

मन्त्रदर्शन्यास :

ॐ उं नमः शिरसि ॥१॥

ॐ गं नमः ललाटे ॥२॥

ॐ वीं नमः नेत्रयोः ॥३॥

ॐ रं नमः मुखे ॥४॥

ॐ मं नमः वक्षिण-वाहूमूले ॥५॥

ॐ हां नमः वक्षिणवृपरि ॥६॥

ॐ विं नमः वक्षिणविक्षिवन्धे ॥७॥

ॐ षष्ठ्यं नमः वक्षिणविलिमूले ॥८॥

ॐ ज्वं नमः वक्षिणस्तांगुल्यये ॥९॥

ॐ लं नमः वामवाहूमूले ॥१०॥

ॐ तं नमः वामकृपरि ॥११॥

ॐ सं नमः वाममणिवन्धे ॥१२॥

ॐ वं नमः वामहस्तांशुनिमूले ॥१३॥

ॐ तो नमः वामहस्तांगुल्यये ॥१४॥

ॐ मुं नमः वक्षपादमूले ॥१५॥

ॐ खं नमः दक्षजानुनि ॥१६॥

ॐ नं नमः दक्षगूलफे ॥१७॥

ॐ षिं नमः वक्षपादांशुलिमूले ॥१८॥

ॐ हं नमः वक्षपादांगुल्यये ॥१९॥

ॐ भीं नमः वामपादमूले ॥२०॥

ॐ धं नमः वामजानुनि ॥२१॥

ॐ णं नमः वामगूलफे ॥२२॥

ॐ धं नमः वामपादांशुलिमूले ॥२३॥

ॐ त्रं नमः वामपादांगुल्यये ॥२४॥

ॐ मं नमः कटवाम् ॥२५॥

ॐ त्र्युं नमः कुक्षी ॥२६॥

ॐ मं नमः हृदये ॥२७॥



ॐ त्युं नमः कण्ठे ॥३८॥
ॐ न नमः दक्षिणपाठ्ये ॥३९॥
ॐ मां नमः वामपाठ्ये ॥३०॥
ॐ म्यं नमः लिङ्गे ॥३१॥
ॐ हं नमः ककुति ॥३२॥

अर्थ द्यानम्

माणिक्यादिसमप्रभं निजस्त्रा संवरस्तरशोगणं।
जानुन्यस्तकराम्बुनं त्रिनयनं रस्तोल्लसदभूषणम्॥
बाहुभ्यां धृतशङ्खचक्रमनिशंवद्दाशवक्त्रोल्लस-
ज्यालाजिह्ममुत्तयोकेशनिचयं वन्दे नृसिंहं विष्वम्॥

यह साधना ३ दिनों की है। साधक को चाहिए कि प्रातः ब्रह्मसुहृत्ते में लाल आसन लिठाकर दक्षिण दिशा और मुख करके बैठें। धूप तथा धो का दोप जलाकर पंचयात्र के जल से पवित्रीकरण करके तीन बार आचमन करें।

ॐ केशवाय नमः

ॐ माधवाय नमः

ॐ नारायणाय नमः

साधने चौको पर लाल वल लिठाकर गुरु पूजन करें। पहने गुरु चित्र को स्नान कराएं, फिर तिलक करें, उसके बाद धूप और धीप लिलाकर गुरुचित्र को डार पहना दें तथा दोनों हाथ लोड कर प्रार्थना करें।

गुरुबद्ध्या गुरु विष्णुः गुरु देवो महेश्वरः।

गुरुः साकात् पर ब्रह्म तस्मै गुरवे नमः।

इसके बाद साधने ताम्र पत्र पर कुक्म धा केशर से बद्धाण बनाकर उस पर माणप्रतिष्ठित नृसिंह यंत्र को स्थापित करें। साधना कल में धी का दोपक लगातार जलते रहना चाहिए। पहने यंत्र को शुद्ध जल से स्नान कराएं।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नमेद रिन्धु कावेरि स्नानार्थं प्रतिगृह्णानाम्।

इसके बाद यंत्र के चारों दिशाओं में चार तिलक लगाएं।

श्री खण्डचन्दनं दिव्यं गन्धादयं सुमनोहरं।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्णाताम्॥

अशतान, पुष्पमालां, धूप धीपं समर्पयामि नमः।

इस संक्षिप्त यंत्र पूजन के बाद पटकोणों में निम्न सामग्री को स्थापित करें।

अग्नि कोण

सिद्ध बीज स्थापित करें।

इसमें किसी भी शब्द को मर्यादित करके परास्त किया जा सकता है तथा विजय सिद्धि का प्रतीक है।

बैश्वर्य कोण

किसी भी दुर्दान्त शब्द को मर्दन करने के उद्देश्य से महिनी स्थापित करें।

पश्चिम दिशा

वीरवटी स्थापित करने का उद्देश्य साधक में वीरता का

समावेश हो सके।

वायव्य कोण

नागचक स्थापित इन्हिंलिए किया गया है कि इन्होंने को बड़ा मैं करके नाग पाण में बांधा जा सके।

ईकान कोण

सुन उष्टु की स्थापना शत्रु को बगीचूत करके उचित दण्ड देने का प्रथास किया जा सके।

पूर्व दिशा

शौरी स्थापन का उद्देश्य साधना के बाद साधक में निरन्तर शीघ्र और ब्रीहता बनी रहे। इसके बाद घटकोणों में स्थापित सभी सामग्री पर कुकम का लिलक करके एक एक पृष्ठ चढ़ाएं। लिलक बढ़ते समय निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

अग्निकोण

अग्निकोण ॐ उग्नीरं हृष्टाय नमः ॥१॥
निर्वह ते ॐ महाविष्णुं शिरसे स्वाहा ॥२॥
वायव्ये ॐ ज्वलन्त सर्वतोमुखं शिखाय वषट् ॥३॥
ऐशान्ये ॐ नृसिंह भीषणं कवचाय हुं ॥४॥
पूज्यकृतवलो-भैष्णो भद्रं मूल्य-मूर्त्यं नेत्रवाय वीषटा ॥५॥
तेवतापश्चिमे ॐ नमाम्यहं अस्त्राय कद ॥६॥
इसके बाद उक्त लोकुक्तुम से रुग्न कर निम्नभत्र त्रोमते हुए यंत्र पर चढ़ाएं।

प्राच्यां

ॐ गरुडविशराजाय नमः गरुडश्रीपादुकां पूजवामि तर्पयामि नमः ॥१॥
इति सर्वत्र दक्षिणे ॐ शङ्कराय नमः शङ्करश्रीपा ॥२॥
पश्चिमे ॐ शेषाय नमः शेषश्रीपा ॥३॥
उत्तरे ॐ बृहस्पते नमः बृहश्रीपा ॥४॥
अग्निकोण ॐ श्रिये नमः श्री श्री पा ॥५॥
नेत्रह ते ॐ हिये नमः हीश्रीपा ॥६॥
वायव्ये ॐ धृत्ये नमः धृतिश्रीपा ॥७॥
ऐशान्ये ॐ पृष्टव्ये नमः पृष्टिश्री पा ॥८॥
इसके बाद गुलाब गुण की कंसुडियों यंत्र पर चढ़ाते हुए निम्न मंत्रों का उच्चारण करें।
ॐ लं इन्द्राय नमः इन्द्रश्रीपा ॥९॥
ॐ रं अश्वेय नमः अश्वश्रीपा ॥१०॥
ॐ मं यमाय नमः यमश्रीपा ॥११॥
ॐ क्षं निर्वतये नमः निर्वति श्री पा ॥१२॥
ॐ वं वरुणाय नमः वरुणश्रीपा ॥१३॥
ॐ धं वायव्ये नमः वायु श्रीपा ॥१४॥

ॐ कु कुबेराय नमः कुबेरश्रीपा ॥१५॥

ॐ हं हंशानाय नमः हंशानश्रीपा ॥१६॥

इन्द्रायनगलये ॐ आङ्गुष्ठे नमः आङ्गुष्ठश्रीपा ॥१७॥

वस्त्रणिश्वेष्मेवे ॐ अनन्तसाय नमः अनन्तश्रीपादुकां पूजयामि ॥१८॥
फिर उसके बाद यंत्र पर एक-एक लौंग बढ़ाते हुए निम्न मंत्रों का उच्चारण करें-

ॐ वं वज्राय नमः ॥१९॥

ॐ शं शक्तये नमः ॥२०॥

ॐ दं दण्डाय नमः ॥२१॥

ॐ खं खङ्गाय नमः ॥२२॥

ॐ पं पाशाय नमः ॥२३॥

ॐ अं अकुण्डाय नमः ॥२४॥

ॐ गं गदाय नमः ॥२५॥

ॐ विं विशुलाय नमः ॥२६॥

ॐ पं पश्चाय नमः ॥२७॥

ॐ चं चक्राय नमः ॥२८॥

यह २ दिन की प्राप्ति कालीन साधना है। रक्ताभ माला रे निम्न मंत्र का पात्र माला मंत्र जाप करें।

मंत्र

ॐ उग्नीरं महाविष्णुं ज्वलन्त सर्वतोमुखं।

नृसिंह श्रीषणं भद्रं मूल्यं मूर्त्यं नमाम्यहम्।

इस प्रयोग वा वायव्य माला के शुक्ल यथा के श्वेतदशी से आजम्भ करके पूजामाला को पूर्ण करें। इसके बाद उसी दिन सभी सामग्री को लाल वर्ण में बांधकर होलिका में समर्पित कर दें।

लापता वायव्यी फैलेट-५०:-

विशेष

होली के शुक्ल अवसरे पर दृष्टिहृदयाद्याद्या अत्यन्त तिथिपूर्ण राघवा हैं जिसे साधक अपनी पापों में दूरित्व में अवश्य लिये हुए रहते हैं। इसी दृष्टिहृदय के शुक्ल वर्ण शरवता है। शाधला कला वैद्युताद्या तिक्ती शीपलट कला विद्युता वाही जाता जातिरूप जिससे शाधला खाली हो जाए। जो आपके होली साधनों विद्युतीय गुरुशुद्धि और पुरुष आपने उठाएं गुरुदेव के जातिरूप के अड्डे तिथिपूर्ण राघवा ही अपना कार्यपाद्धतालाली तथा शाद्य द्वे लक्षणोंपैत विशेष दृष्टिहृदयी श्री प्रद्युम्न वंश जाएंगी।



गौण रेखाएँ

कथा कहती है

हथेली में कई रेखाएँ ऐसी होती हैं, जिन्हे हम मुख्य रेखाएँ तो नहीं कहते, परन्तु उनका महत्व कियों भी पकार से कम नहीं कहा जा सकता। हन रेखाओं का अध्ययन मीं उपने अपना निष्ठित प्रभाव जीवन पर डालता है। आगे के पृष्ठों में मैं इन रेखाओं का संक्षेप में परिचय स्पष्ट कर रहा हूँ।

१. मंगल रेखा

ये रेखाएँ हथेली में निन मंगल रेख से या जीवन रेखाके प्रारंभिक भाग से निकलती हैं और शुरू पर्वत की ओर बढ़ती हैं। ऐसी रेखाएँ एक या एक से अधिक हो सकती हैं। ये रामी रेखाएँ पराली, मोटी, गड़ी या कमांजर हो सकती हैं। परन्तु यह स्पष्ट है कि इन का उद्दाम मंगल पर्वत ही होता है। इसीलिए हन्दे मंगल रेखाएँ कहा जाता है।

इनमें दो भव हैं। एक तो ऐसी रेखाएँ जीवन रेखा के साथ-साथ आगे बढ़ती हैं, अन् उन्हें जीवन रेखा की सहायत रेखा भी कह सकते हैं। कई बार ऐसी रेखाएँ जीवन रेखा की समाप्ति तक उपर साथ-साथ चलती हैं।

जिनकड़ा घेरेसी रेखाएँ होती हैं, वे व्यक्ति अत्यन्त प्रतिभाशाली एवं तीव्र बुद्धि के होते हैं। सो ये अपने समझने की जानि हनमें विशेष रूप देती हैं। जीवन में ये जो निष्ठा एक बार कर लेते हैं, उसे अन्त तक निभाने की सामर्थ्य रखते हैं। ऐसे व्यक्ति पूर्ण विश्वासपात्र अथवा सूर्य रेखा को कहती हैं, तो उसके जीवन में जरूरत से

कहे जाते हैं।

इस प्रकार के व्यक्ति जीवन में कोई एक उद्देश लेकर आगे बढ़ते हैं और जब तक उस उद्देश्य या लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो जाती, तब तक वे विश्वास नहीं लेते। जारीरिक दृष्टि से ये हष्ट-पुष्ट होते हैं तथा इनका व्यान्तिक्षय अपने साप में अत्यन्त प्रभावशाली होता है। और इनके जीवन में बहुत कम रहता है।

दूसरे प्रकार की मंगल रेखाएँ ये होती हैं, जो जीवन रेखा का साथ छोड़कर सीधे ही शुक्र पर्वत पर पहुँच जाती हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन में जापरवाह होते हैं। उनका रवभाव चिड़चिढ़ा होता है। आवेदन में वे व्यक्ति भव कुछ करने के लिए तेयर होते हैं। इनका साथ अत्यन्त निम्न लक्ष्य के व्यक्तियों से होता है।

दूसरे प्रकार की मंगल रेखा स कुछ रेखाएँ निकल कर ऊपर की ओर बढ़ रही हैं, तो उनके जीवन में बहुत आधिक इच्छाएँ होती हैं और उन इच्छाओं को पूरा करने का ये फोराय प्रयत्न चलते हैं। यदि ऐसी रेखाएँ नाम्यरेखा न निभानी हैं, तो व्यक्ति का जीप्रही भाग्योदय होता है। हजार वर्ष से निभाने पर व्यक्ति नस्तर से न्यदा भावुक तथा सहवय बन जाता है।

यदि हम प्रकार की मंगल रेखाएँ आगे चलकर भाग्य रेखा अथवा सूर्य रेखा को कहती हैं, तो उसके जीवन में जरूरत से

ज्यादा बाधाएं परं परेशानियों, रहती है। यदि इन रेखाओं का सम्पर्क अप्यरेखा से हो जाता है, तो वह भास्यहीन व्यक्ति कहलाता है। तथा यदि ये मणिल रखाएं विवाहरेखा को छुलती हैं, तो उसका गुह्यम् नीचन बर्बाद हो जाता है।

यदि मणिल रेखा प्रबल, पुष्ट हृदयी में धसी हुई तथा दोहरी हो, तो ऐसा व्यक्ति निष्ठ्या ही हृत्यारा अपवा डकू होता है। परंतु यदि ये रेखा नोहरी नहीं होती तो ऐसा व्यक्ति मिन्ट्री में मंजुर पर चुनने में स्वधाम होता है।

२. गुरुवलय

तर्जनी उल्लोक्ये धेरने वाली अर्धत जोभेडा अर्द्धवृत्ताकार बनती हुई गुरु पर्वत को धेरती है, जिसका एक सिर हथेली के बाहर की ओप तथा दूसरा सिर तर्जनी और मध्यमा के बीच में जाता है, तो ऐसे वलय को गुरु वलय कहते हैं। ऐसी रेखा बहुत ही कम हाथों में देखने के मिलती है।

ऐसा व्यक्ति के हाथ में ऐसी रेखा होती है, जो व्यक्ति जीवन में गंभीर तथा राहदग्दा होते हैं। उनकी इच्छाएं जन्मरत से ज्यादा बड़ी-चढ़ी होती है, विद्या के देश में वे अत्यन्त सफलता प्राप्त करते हैं। परंतु उन लोगों में यह कभी होती है कि ये अपने चारों ओर धन पूर्ण वातावरणा बनाये रखते हैं तथा व्यर्थ की शान औकत का प्रदर्शन करते रहते हैं। ये जीवन में कम मेहनत से ज्यादा लाभ उठाने की कोशिश में रहते हैं। परंतु उनके प्रयत्न ज्यादा सफल नहीं होते, जिसकी वजह से आगे चलकर इनके जीवन में निराशा आ जाती है।

३. शानिवलय

जब कोई अंगृही के समान रेखा शनि के पर्वत को धेरती है और जिसका एक सिरा तर्जनी और मध्यमा के बीच में तथा दूसरा सिर मध्यमा और अनामिका के बीच में जाता हो, तो उसे शनि वलय या शनि मुद्रा कहते हैं। माघानिक दृष्टि से ऐसा वलय शुभ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि जिस व्यक्ति के हाथ में ऐसी मुद्रा होती है, वह व्यक्ति बोट और ऊपर संन्दर्शी या एकान्त प्रिय होता है। ऐसा व्यक्ति इस संसार का बोह तथा सुख को छोड़कर परलोक को सुधारने की कोशिश में रहता है।

ऐसे व्यक्ति तत्त्व साधना तथा मन्त्र साधना के क्षेत्र में विशेष भफलता प्राप्त करते रहते गए हैं। यदि शनि वलय की कोइरेखा भास्यरेखा को स्पर्श नहीं करती तो वह व्यक्ति अपने उद्घोयों में सफलता प्राप्त कर लेता है। परंतु यदि शनि वलय की कोइरेखा भास्यरेखा को स्पर्श करती हो, तो वह व्यक्ति जीवन में कई बार गुह्यम् बनता है, और कई बार पुनः धर-बार छोड़कर संन्यासी बन जाता है। ऐसा व्यक्ति अपने किसी भी उद्घेष्य में सफलता प्राप्त नहीं करता। ऐसे व्यक्ति के

सभी कार्य अधूरे तथा अव्यवस्थित होते हैं, तथा एक प्रकार से इन्द्रियों के दास होते हैं, कई बार ऐसे व्यक्ति अपनी ही कृपाओं के कारण आत्म-हृत्या कर डालते हैं।

जिनके हाथों में इस प्रकार का वलय होता है, वे निराशा प्रधान व्यक्ति होते हैं। उनको जीवन में किसी प्रकार का कोई आनन्द नहीं मिलता। वे व्यक्ति जिन्ननशील, एकान्तप्रिय तथा बीतराजी होते हैं।

४. रविवलय

यदि कोइरेखा मध्यमा और अनामिका के बीच में सेनिकलकर सूर्य पर्वत को धेरती हुई अनामिका और कनिष्ठिका के बीच में जाकर समाप्त होती हो, तो ऐसी रेखा को रविवलय या रवि मुद्रा कहते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में रवि मुद्रा होती है, वह जीवन में बहुत ही सामान्य स्मर का व्यक्ति होता है, उसे अपने जीवन में बार-बार अग्रकलता का सामना करना पड़ता है। जन्मरत से ज्यादा परिश्रम करने पर भी उसे किसी प्रकार का कोई यश नहीं मिलता, अपितु यह ऐसा गया है कि जिनकी भी वह मलाई करता है या जिनको भी वह सहजेग देता है, उसी की तरफ से उसको अपवश मिलता है। ऐसा वलय होने पर रवि पर्वत से संबंधित सभी कल विपरीतता में बदल जाते हैं।

ऐसा व्यक्ति समझदार तथा सव्यरित होने पर भी उसको अपवश का सामना करना पड़ता है, और सामाजिक जीवन में उसे कर्त्तव्यिक होना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन से निशां दी रहते हैं।

५. शुक्रवलय

यदि कोई रेखा तर्जनी और मध्यमा से निकलकर शनि और सूर्य के पर्वतों को धेरती हुई अनामिका और कनिष्ठिका उंगली के बीच में समाप्त होती हो, तो ऐसी मुद्रा शुक्र मुद्रा या शुक्र वलय कहलाती है। जिनके हाथों में वह वलय होता है, उन्हें जीवन में कम जोर और परेशान ही देखा है। जिनके हाथों में ऐसी मुद्रा होती है, वे स्नाय सम्बन्धी रेखों से चिन्ह तथा अधिक से अधिक भौतिक वाक्य होते हैं। उनको जीवन में बार-बार मानसिक चिन्नाएं बनी रहती हैं और इनको जीवन में सुख या शानि नहीं लिया जाता।

यदि यह मुद्रा जन्मरत से ज्यादा लीडी हो, तो ऐसा व्यक्ति अपने पूर्वजों का संघित धन समाप्त कर डालता है। ऐसा व्यक्ति प्रेम में उतावली करने वाला तथा पर-स्त्री गर्नी होता है। जीवन में इसको कई बार बदलामियों का सामना करना पड़ता है।

यदि शुक्र वलय की रेखा पतली और स्पष्ट हो, तो ऐसा व्यक्ति समझदार एवं परिस्थितियों के अनुयार अपने आपको डालने वाला होता है। (जारी अगले अंक में...)

नि: शुद्ध उपहार



दिव्य उपहार !!

अखण्ड सौभाग्यवती माला

किंतु भी घर का वर्णन, घर की तटमी अथवा गृहिणी वाले घर को बाले परन्तु होती है। यह कार्य कुशल है, दरस्थ है, तुष्टिमान है, सूचितहार रामग्रह त सूर्योल है, कलाण से आपृति है, तो घर का अपने आप ही कल्याण होता है। घर की स्त्री ही परिवार का तह केवल होती है, जिसे अपनी उतनी चिन्ता तहीं रहती, जितना केवल अपने पति की, पुत्रों की, प्राप्तियों की एवं परिवार के बीच जलों की। भारतीय पृष्ठभूमि में घर की गृहिणी को अलेक्षणी तर करते हुए देखा जाता है, परंतु उसमें से अधिकांश तर वह अपने पाते, सब्लानों एवं कुटुम्ब मंगल के लिए ही करती है।

- घर में लकड़ी का स्थानी निवास,
- घर के सभी लदारचीं को स्वारंभर रक्षा,
- घर के सभी लदारचीं को चतुर्मुखी उत्तित रखना,
- घर के सदस्यों पर आले बाले विषवाऽं का पूर्ण विलापण
- घर पर सभी देवी-देवताओं की कृपा।

दूसी उद्देश्य से 'अखण्ड सौभाग्यवती माला' का निर्माण किया गया है, जो कि प्रत्येक घर में स्त्री के गले में होनी ही चाहिए। यह एक माला ही सम्पूर्ण कुटुम्ब मंगल के लिए अनुकूल है।

जीवन का साक्षिण्य वाल — "जान दान"
जान दान को नीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएँ प्राप्त कर मंदिरों में अस्पतालों में, स्मारकों में, मंगल कार्यों में, ब्राह्मणों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके नीवन को भी इस ब्रह्म जान के प्रकाश से आत्मोक्त कर सकते हैं, जो अभी तक इससे बचित है। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को अध्यनात्मक जान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक ब्रह्म पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप क्या करें?

आप केवल एक वर 'संनगन पेट्रोकाइ क्रांक 3) भेज दें, कि 'मैं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएँ भेजना चाहता हूँ। आप नि: शुल्क 'अखण्ड सौभाग्यवती माला' 390/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिका के 300/- + डाक व्यय 90/-) की बी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आपने पर में पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूँगा। वी. पी. पी. छुटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएँ रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें।' आपका वर आपने १८, ३००/- + डाक व्यय 90/- = 390/- की बी. पी. पी. से 'अखण्ड सौभाग्यवती माला' भिजवा दें, जिससे कि आपको यह कुलीय उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके। वा. पी. पी. छुटने पर आपको २० पत्रिकाएँ भेज दी जाएंगी।

सम्पर्क

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

गंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमानो मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342003, (राज.)

फोन - 0291-432209, फैक्स: 0291-432010

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shriguli Marg, High Court Colony, Jodhpur - 342001, (Raj.), India. Phone : 0291-432209

© 'फैक्टरी' 2002 मन्त्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '५५'

प्राप्ति
के आविष्कार
शास्त्र मन
जनि कि
तावर
साम सम
भव अप
पुंज ना
गे शा
न्य इन
दिन
को कर
सा प्रभ
वन वि
आ स
भव लि
विभिन्न
देव, वड

स्थाना

विज्ञान की एक सतत् प्रक्रिया है



मनुष्य का शरीर केवल मांस-हड्डियों-रक्त से बना हुआ पिण्ड ही नहीं है, उसमें नस्तिष्ठक तथा इन्द्रियों का जो समावेश है, उसके कारण उसमें सोचने की, अपने जीवन में कुछ प्राप्त करने की, इच्छाएं बननी रहती हैं।

वर्तमान समय में जीवन की वैधी गति है, उसके फलस्वरूप मूलभूत के मन में, शान्ति और सिवरता भवान रही हो गई है, इस कारण इर समय मन में अनियन्त्रित बनी रहती है और उसकी विचार-शक्ति कह दिशाओं में, कई धाराओं में घटकती रहती है, जीवन में जो भ्रष्ट, नवी समान प्रवाह होना चाहिए, वह नहीं हो पाता, क्योंकि इस शरीर के दो प्रधान भाग-ब्रान्थ भाग और अन्तः करण में जो तात्त्वमय होना चाहिए, वह नहीं बनता है, बाहर शरीर के उत्थान इन्द्रियों के विषयीत विचारों के कारण अन्तः करण खण्डित हो जाता है और मनुष्य रोग, शोक दुख आदि प्रभावों से धिर जाता है।

मन के दो ही स्वरूप-चेतन मन (कान्तिम) और अन्तर मन (इन्नर कान्शेंस) ही माने जाते हैं, वर्तमान दुग्ध में प्रत्येक व्यक्ति अपने चेतन मन से कार्य करता है, जो विख्यात है उसे ही सत्य मानता है और प्रत्येक बात पर विचार कर उसे तर्क की कल्पोटी पर करता है, जब तक विचार और संशय, नामन

अथवा चेतन मन को पूर्ण रूप से प्रभावित कर अपने प्रभाव में ले लेते हैं, तो आन्तरिक मन अर्थात् अचेतन मन निर्मल हो जाता है, जीवन में एकाएक विषों भी प्रकार का संकट आने पर उसका स्नायु तंत्र शरीर का नाश नहीं देता है, क्योंकि उसके चेतन मन को अन्तर मन की प्रधान शक्तियाँ प्रेम-शक्ति, आन्तरिकवास प्राप्त नहीं रहता, और यही कारण है कि आन कल नवीन बैक डाउन अथवा स्नायविक दुर्बलता बार-बार देखने को मिलती है, स्नायु तंत्र चेतन मन के पूर्ण प्रभाव के कारण इनमा अधिक कमज़ोर हो जाता है कि मनुष्य द्वार समय धय ग्रस्त, चिन्ना ग्रस्त यदि परेशान रहता है, उसके सामने बहुत कुछ होने हुए भी उसे प्राप्त नहीं कर पाता, यह यद्य अस्थिरता के ही तो लक्षण है।

अन्तर मन

इसी प्रकार वह जिहो लोग अपने अन्तर मन की प्रबल करने के लिए धैतन्य मन को छोड़ देते हैं, अन्तर मन की कामनाओं की पूर्ति के लिए हम समय साधना उपासना में सलझ हो जाते हैं और अपने कर्य में विचार शीलता का तत्व भूल जाते हैं, और जब साथक इस अन्तर मन के विशेष प्रभाव से बाह्य जगत की ओर आते हैं तो अपने कार्यों की योग,

ग्रामायाम, देवी साधना ये पूरा होने न देख कर एक उत्सवित
स्थिति में आ जाते हैं और यह बड़ा ही कष्टकारक होता है।

पश्चीमितियों से बचने के लिए और अपने ग्रीष्मन को साधना
के द्वारा सहज, स्वस्त, उत्तमिकारक स्वस्थप ढेने के लिए यह
आवश्यक है, कि साधक के वैतन्य मन और अन्तर मन में एक
विशेष समर्पण बना रहे, इस हेतु साधक के मानसिक चल
अर्थात् संकल्प प्रबला द्वेष अनिवार्य है, चेतन मन और अन्तर
मन दोनों ही नीत्र जनि वाले तत्त्व हैं, साधना के द्वारा ही उनकी
गति को नियंत्रित कर एक नहन रूप दिया जा सकता है, जिससे

कि साधक अपने भिण्डी रूप द्वारा सकता है, अपना मार्ग उम्मे

जात रहता है, मानसिक कृषि से दुर्बलता न

रहने से स्थिर वित्त से वह अपनी

भग्नी शक्तियों का उपर्योग कर

सकता है, प्रस्त्रक साधक

अपने भागमें एक शक्ति

पुन द्वेषा है, साधना

तो इस शक्ति पुन

में छिपा हुई

शक्तिवसी को

स्वालमान कर

इन शक्तियों का

दिवा एवं भृति

को नियंत्रण

करने का कर्त्त्व है।

इस विशेष

साधना तत्त्व के चार

प्रमुख भाग हैं, और

इनमें से प्रथमेतत्त्व पर

विशेष विचार करना

आवश्यक है।

एकाद्यता

साधक के लिए यह आवश्यक है कि उसके शरीर के सभी

गंगों का संचालन उसके वरा में रहे, शस्त्र-राम्यन्त्र बनने के

लिए यह आवश्यक है कि सज्जने पहले सीखें, कि किस प्रवाह

बिना किसी प्रबोधन के अपने शरीर का अंग संचालन न होने

दे, हाथ पैर हिलाना, ऊनलिया चढ़ाना, छिर खुलना,

पड़ी हुई दर्जों को उठा कर खेलना, कागज पर बिना बात

कलम से लाइन स्वीचना, ये सब व्यर्थ को कियां हैं, जिनसे
प्राण गति निर्बल ही होती है, अतः गन को एकाद्यता करना
सीखना, साधना का प्रथम तत्त्व है।

विचार, जो गन में बनता है, उसी विचार पर एकाद्यता
देना, अद्यता जो व्यार्थ कर रहे हैं, उसी पर अपनी समझत
शक्तियों को केन्द्रित कर लेना ही एकाद्यता की कुंजी है, जो
चौंक सामने है उस पर विशेषता ही सकते हैं जो चौंक दूर
है, उस पर भी एकाद्यता लाई जा सकती है, इस हेतु कोई भी
व्यार्थ करते नम्बू मन में व्यर्थ उठने वाले भावों विचारों को
रोकना आवश्यक है।

साधक का मन घड़ी के पेण्डुलम की तरह
हिलाना रहता है, इस मन को, अपने
विचार और भावनाओं द्वारा
नियंत्रित कर एकाद्यता लानी
आवश्यक है, संयत,
एकाद्यता मन से ही
साधक अपना
लक्ष्य तथा
साधना में पूर्णता
गापत कर सकता
है।

इच्छा-शक्ति

एतद्युक्ति

भावना, विचार

साधना के मन,

शरीर, काथ पर

आवश्यकी प्रभाव डालते

हैं और इन भावनाओं को

इच्छा-शक्ति के द्वारा नियंत्रित

किया जा सकता है, जिसकी जैसी

भावना होती है, उसे कैसी ही भिन्न प्राप्त बोती है

और यह कैसा ही बन जाना है, क्योंकि वह भावना वाले अच्छी

हो बुरी, उपने आपको बार बार दोहराते हुए विश्वास के रूप

में बदल जाती है और शरीर तथा भावों की गति कैसी ही हो

जाती है।

तब भावना का इतना

आधिक प्रभाव होता है, तो इन

भावनाओं में व्यर्थी भावी अच्छे विचार-तत्त्व, शक्ति-तत्त्व भे

जाय, यदि प्रतिदिन, प्रति समय साधक का यही चिन्तन रहे कि मेरी इच्छा-शक्ति श्रेष्ठ है, मैं जो कार्य करना चाहता हूँ उसे अवश्य ही सम्पन्न करूँगा, मेरे शरीर और मन पर मेरा पूरा अधिकार है, मेरे स्वभाव में स्थिरता ही रहेगी, ऐसी भावनाएँ प्रतिदिन प्रातः और रात्रि को सोने समय साधक को अवश्य ही करनी चाहिए, इस प्रकार बार-बार दोहराने से जो नियंत्रण प्राप्त होता है, वह इच्छा शक्ति का प्रबल भौत बन जाता है वह साधना का दूसरा लक्षण है, अपने अन्नरसन में आनन्द, सुख, आरोग्य, उत्पाद, श्रद्धा, शक्ति, लाम्फ्स की भावना ही निरंतर भरती चाहिए।

कल्पना

कल्पना के बिना जीवन का कोई आधार ही नहीं है, कल्पना ही आसे बढ़ने के लिए प्रेरणा देती है, और जब इस कल्पना शक्ति को मानसिक परिकल्पना के साथ जोड़ दिया जाता है तो उसका प्रभाव तुरंत देखने को मिलता है।

अपने क्रमबोर शरीर को प्रबल बनाने के लए, उसे थेष्ट बनाने के लिए, यदि प्रतिदिन एकान्त में श्रेष्ठ शरीर, रोग रहित शरीर की कल्पना की जाए, और यह विचार निरंतर किया जाए, कि मेरा यह रोग दूर हो रहा है, और मैं जिस प्रकार के नष्ट शरीर की कल्पना कर रहा हूँ, वैसा शरीर मुझे प्राप्त होगा, तो निश्चय ही धीरे-धीरे असाध्य से असाध्य रोग भी दूर होने लगता है।

इस मानसिक कल्पना में अपने मन को आत्मिक उत्तरि की कल्पनाओं से भरते रहना हाचाहिए, और जिस प्रकार की कल्पना करने हैं, उसके प्रत्येक तत्व पर बारीकी से एकाग्रता पर विचार अवश्य करें, यदि प्रातः किसी चित्र के सामने जो कि किसी छष्ट का हो सकता है, उस पर अपना ध्यान केंद्रित करें तो यह मनःशक्ति संजीवन हो कर साधक के स्मरण शक्ति को प्रबल बना देती है और जब उसे इच्छाशक्ति और एकाग्रता का रहस्योग मिलता है, तो साधक, साधना सम्पन्न कर पाने में अवश्य समर्थ रहता है।

साधना नियंत्रण सक्रिय ध्यान

ध्यान ही अन्तरक शक्ति को जगाने की प्रक्रिया है, इस शक्ति को छोड़ कर आन्तर शक्ति की तलाश करना ल्यर्ड है, जब तक यह शक्ति जागृत नहीं हो जाए, तब तक व्यक्ति का

प्रत्येक भावना, विचार-साधना

के मन, शरीर, कार्य पर अवश्य ही प्रभाव डालते हैं और इन भावनाओं को इच्छा-शक्ति के हासा नियंत्रित किया जा सकता है, जिसकी जैसी भावना होती है, उसे वैसी ही सिद्धि प्राप्त होती है और वह वैसा ही बन जाता है, क्योंकि वह भावना-चाहे अच्छी हो बुरी, अपने आपको बार-बार दोहराते हुए विश्वास के रूप में बदल जाती है और शरीर तथा कार्यों की गति वैसी ही हो जाती है।

आत्मविश्वास निर्बंज ही रहेगा, इस शक्ति को जागृत कर ही ल्यक्ति अपने जीवन में अर्थ को समझ सकता है, अपनी ऊँको, बेतना का विकास कर सकता है।

यदि ध्याने के बेग को, नदी के प्रवाह को रोक दिया जाय, तो वह किनारे तोड़ देता है, खड़ा हआ पानी सह जाता है, उसका मूल तत्व ही नमाप्त हो जाता है, अपने भीतर की शक्ति का भी रूप उत्तम हो जाता है, यदि शक्ति को जागृत नहीं किया, तो यह अन्तरिक शक्ति पूरे शरीर में जहर बनकर मानसिक विकास में ल्याधिता उत्पन्न कर देगी, इसीलिए तो ध्यान आवश्यक है, ऊँको के सोत का झरना खोन दो, बड़ती शक्ति के आनन्द से अपने आपको परिपूर्ण बनाओ।

ध्यान के लिए न तो जंगलों में जाने की जरूरत है, न ही तपस्या करने की आवश्यकता है, क्योंकि बन्द कियाह तो भीतर के खोलने हैं, यह ध्यान की प्रक्रिया-मन के तनाव, तन के रोग को बाहर करने की, अपने आपको भीतर और बाहर से शुद्ध करने की, कृष्णलिङ्मी जागरण की प्रक्रिया है और निश्चय ही यह अन्यन्त भरत है।

इस ध्यान योग के पाच चरण हैं और प्रत्येक चरण के बाल दरा-दस मिनट का है इस प्रकार केवल एक घण्टा प्रतिदिन व्यतीत कर आप अपने जीवन में चेतना का नया अध्ययन खोल

वेते हैं, एक ऐसे मार्ग की ओर ज़हले हैं- जिसमें आनन्द है, तेज़ है, शक्ति है, स्वस्थना है, एकाग्रता है, शान्ति है, सोचने की नई धुष्टि है, तुष्टि है।

यह व्याप्त योग प्राण स्नान कर, ढीले तथा कम बद्ध पहिन कर करना चाहिए, मन में पूर्ण भावना एकाग्रता तो होनी ही चाहिए, काम चाहे जो भी हो पूरी समर्पण के साथ ही करना चाहिए।

प्रथम चरण

इसमें आंखें बन्ध कर अथवा आंखों पर पट्टी लाभ कर पूरी शक्ति से तेज गहरे अवास लेना प्रारम्भ करें, श्वास लेते रहे और छोड़ते रहे, इसमें किसी प्रकार की रुकावट न हो, नाक से श्वास ले, जिसी तरीं में श्वास छोड़ो, उत्ती ही तेजी से अवास भीतर आयेगा और पूरी रूपी नगाएं बेवल अवास का आना और जाना ही रहे, बाकी सब भूल जाय, धूरे-धौरे एक सहज गति बन जायेगी।

द्वितीय चरण

मन में बन्धन हैं, और आप अपने मन के ग्रामों को रेकते हैं, इसे विमुक्त कर दें, दस मिनट तक रोना, हँसना, धीखना-चिल्लना प्रारम्भ कर दें, किसी एक को ले कर यह चरण दस मिनट करें, धूरे-धौर मन को इस कार्य में बाधक न बनाएं, आन्तरिक भाव दुख, आवेग, जिस रूप से भी प्रवण होना चाहते हैं, होने दें, श्वास की प्रक्रिया भी चालू रहें।

तृतीय चरण

इसमें अपने दोनों बाजू ऊपर उठा कर पंजों के बल पर खड़े हो जाय, और उसी स्थान पर एकाग्रता से कुछतो हुए, उठने से हुए 'हु' 'हु' 'हु' अन्तर मन से करें, शक्ति का प्रवाह प्रारम्भ होगा, तथा इसको और अधिक तीव्रता से, और अधिक तेजी से करते रहे, शरीर पर्सने से लक्ष-पथ ही जाय तो भी चिन्ना नहीं करनी है, शक्ति का जागरण, स्फुरण हो रहा है, इस कार्य में आनन्द का अनुभव करें।

चतुर्थ चरण

तत्काल सब आवाजें, सब क्रियाएं और गति बन्द कर दें, उसी स्थान पर शान्त, निश्चेष्ट होकर स्थिर कर लें, मानो शरीर में कुछ ही नहीं, अपने आपको व्यवस्थित करने का प्रयास न करें एक शून्यता, शान्ति जो भीतर समा रही है उसे अनुभव करने हैं, सोचना-विचारना बन्द कर दें, शून्य ही तो शक्ति का स्रोत बिन्दु है।

पाचम चरण

अब अपने भीतर जो शान्ति, मौन, आनन्द प्राप्त हुआ है, उसे प्रकट करने के लिए नाचे-गाएं उत्सव का अनुभव करें, रोम रोम में आनन्द को बहने हैं, अपने आप को नियन्त्रित न करें, बिल्कुल खुला छोड़ दें।

यदि कहीं पर छित्रीय चरण और तृतीय चरण की सुविधा न हो, तो हसे भीतर ही भीतर करते रहें, लेकिन क्रिया यही रहें, यह अभ्यास प्रारम्भ में ही सकता है पाठा दे, क्योंकि बन्धन और रुकावट जो भीतर की शक्ति को गेके हुए हैं, वह नहीं समान हैं, इन बन्धनों ने आपके शरीर को और मन को भी मशीन बना दिया है, लेकिन करते रहें, करते रहें।

जब ऊर्जा का भीतर प्रवाह जागृत हो जाता है तो नया जन्म होता है, यह ऊर्जा जो नीचे की ओर बढ़ रही है, उसरी ओर बहना प्रारम्भ करती है, इसके साथ ही गति अनुभव होता है, और जब यह ऊर्जा बढ़ावास्थ तक पहुंचती है, तो कुण्डलिया जागृत होती है, यहीं तो तुम्हारी शक्ति है, तभी तुम अपने जीवन को गति दे सकते हो।

साधना और समय

साधना के ऊपर लिखे चरणों को शेष बनाने हेतु कुछ विशेष समय का महत्व अवश्य है, और ये तीन समय प्रातःकाल की संधि, मध्याह्न काल की संधि और सायंकाल की संधि, विशेष प्रामाणशाली हैं, जब रात्रि को भोजन उठने के बाद शीघ्र एवं स्नान के पश्चात् गर्सिनिष्ट के सभी नन्तु, सभी नाड़ी केन्द्र अन्वन्त शृणशील अवस्था में होते हैं और उस समय जिस प्रकार के विचारों को अपने अन्दर प्रवाहित किया जाय, वे विचार प्रबल होकर जीवन को जाहिन कर देने हैं, इसीलिए इन संधि-कालों का विशेष महत्व है, इस संनिधि काल में एक विशेष लयबद्ध राग वायुप्रणल में व्याप्त रहता है, इसी कारण साधना के अभ्यास के समय शान्त मन से अपने प्रत्येक स्नायु को निर्बल करने हुए, सभी चिन्ताएं छोड़ते हुए, साधना के विचारों को अपने भीतर प्रवाहित करने हुए, कि मैं इस विशेष प्रवाह को ग्रहण कर रहा हूं, मैं भवय जीवन-तत्त्व से परिपूर्ण, चैतन्य स्वरूप हूं तथा मेरा भण्ड-अग्नि चैतन्य मान हो रहा है - तभी साधना में सिद्धि प्राप्त होती है। ऊर्जा प्रकार के विचार रात्रि सोसे समय करने में ही साधक मन, विचार इनादि से दूर हो कर अपने जीवन को भवय ये मार्गदर्शन दें सकता है, कि शक्ति उसमें पूर्ण रूप से समाहित हो जाती है। ■

फाल्गुन मास संवत् २०५८

लक्ष्मी की वापी

मेष

(बु. वे. चो. ली. लू. लो. आ.)
कारोबार में व्यस्त होंगे। विवाह हो जाने पर शूर्ण संयम स्वापित रहेंगे। मित्र एवं संबंधियों का सहयोग प्राप्त होगा। गृहस्थ सुख में बृद्धि होगी एवं भौतिक सुख भी प्राप्त होंगे। मांगलिक कार्यों में स्वच्छ रहेगी। बेरोजगार व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल है। सेतान घस्त भी अनुकूल रहेगा। यह समय महिलाओं एवं विद्यार्थियों के लिए भी सफलता का है। इस माह 'शूर्ण साधना' संपन्न करें। इस मास की शुभ तिथियाँ ३, ८, १०, १५, १७, १९, २२, और २० हैं।

वृष्ट

(है. ठ. दु. वा. ठी. दु. वे. वो.)
इस माह अध्यात्मिकता को भावना प्रबल रहेगी, साधनाओं की ओर शुक्रवार रहेगा। गृह धन की प्राप्ति के बोग है परंतु संयम एवं भूकूल दृष्टि के साथ खर्च करें। शत्रुओं से बचकर रहें, मित्र छिन्नसे वाले व्यक्ति भी धोखा दें सकते हैं एवं हानि पहुंचाने का प्रयत्न कर सकते हैं। विद्यार्थी वर्ग की दृष्टि समय पूरे मेहरबन के साथ पढ़ाई करनी चाहिए। समय व्यवहार न गंवाएं। वैदिक नीवन मधुर रहेगा। पूर्ण सफलता हेतु 'शिव साधना' संपन्न करें। इस मास की शुभ तिथियाँ ४, ५, ९, १८, २१, २४, और २६, ३० हैं।

मिश्रुन

(का. की. द्रु. द. छ. लो. हु.)
इस माह आपको द वा वर निकलना पड़ सकता है जो आपके लिए अनुकूल निष्ठ होगा। स्वास्थ्य ठंक-ठंक रहेगा, परंतु मानसिक परेशानियों का भी साधना करना पड़ सकता है। धन की कुछ कमी अनुभव हो सकती है परंतु यक्षरार नहीं आणे का समय व्यवसाय एवं धनाजग की दृष्टि से बहुत अनुकूल है। इस माह विद्यार्थियों को अपने परिश्रम का उत्तम फल प्राप्त होगा। सफलता हेतु 'भगवती कुर्मा' साधना करें। इस मास की शुभ तिथि ३, ८, १४, १९, २०, २३, २७ और २८, ३१ है।

कर्कि

(टी. दृ. ठे. आ. ठी. डे. आ.)
समय की उपयोगिता बहुपाल कर दी जायें करें। जलव्याजी न करें। जो कार्य कर रहे हैं उस पर ध्यान दें समय अपने पर पूरा लाभ होगा। नये कारोबार के लिए भी अच्छा समय है। परंतु बैते बिटाइ लाभ की कल्पना करें। उठ कर प्रयत्न करें। अधिकारियों एवं नहकर्मियों से मेल मिलाप बनाइ रहें। श्रमिक वर्ग के लिए समय लाभ करारी है। इस माह धूमावती साधना करें। इस मास की शुभ तिथियाँ- २, ३, ६, ११, १६, २०, २३ और २५, २८ हैं।

सिंह

(आ. भी. दू. ने. नो. ठा. ठी. द्र. व)

यह समय आपके लिए सुशाङ्काली लेकर आ रहा है, वर में नये मेहरबन के आने से प्रसरण का बातावरण रहेगा तथा तक्षणी भी आपि होगी। बहुत समय से रुका हुआ धन प्राप्त होगा। आपके पित्र ही आपके सबसे बड़े शत्रु हैं, इसलिए उनसे सावधान रहें, वे आपके साथ विश्वासघात कर सकते हैं। नीकरी में घोड़नि होनी तथा अधिकारी कार्य की सराहना होनें तथा गमाज में मान-भ्रमाज होगा। इस माह 'हनुमान साधना' करें। इस मास की शुभ तिथियाँ- ४, १०, १८, २१, २५ और २८ हैं।

कठिया

(ठो. घा. फी. पू. व. या. ठ. ठे. घो.)
आप अपने को धर पर नियंत्रण नहीं रख पाते हैं यही आपको नवसे बड़ी भूल है, हमेशा अपने को धर पर नियंत्रण रखें। इस समय आपके परिवार के लोगों को आपसे बहुत आशाएं हैं उनकी भ्राताओं लो समझने का प्रयास करें। सामाजिक मर्यादा एवं मान सम्मान को बनाए रखने का प्रयास करें। अदालती मुकदमों में अनुकूलना प्राप्त होगी। बेरोजगार व्यक्तियों को सकलता प्राप्त होगी। जीवन साथी एवं सेतान से भड़क्योग प्राप्त होगा। इस माह 'महालक्ष्मी साधना' करें। इस मास की शुभ तिथियाँ- ६, १२, १५, २३, २६, २७ और २९ हैं।

लर्वार्थ, अनुकूल, रवि, पुष्य, द्विपुष्य, सिंहि योग	9 मार्च
द्विपुष्यर योग	30 मार्च
गुरु पुष्य योग	24 मार्च
अमृतसिंहि योग	15 मार्च

कूला

(र. री. श. ता. ती. द्र. तो.)

यह समय आपके लिए साधारणी जीवन करने का है। अन्यथिक उत्साह आपके लिए हानिप्रद सिद्ध हो सकता है। समय का प्रदोष करना ही श्रेष्ठ होगा। इस समय आपना मन धार्मिक कार्य में लगाएं। दैवतस्थानी की ओर ये उपेक्षा प्राप्त होने से मन में उड़ासी हो सकती है। संतान प्रश्न की ओर से भी चिंता रहेगी। व्यर्थ धन व्यवहार न करें। अनुकूलता के लिए 'अणपति साधना' करें। इस मास की शुभ तिथियाँ ३, ७, १०, १६, २५ और २८ हैं।

वृष्टिचक

(तो. वा. वी. वृ. ने. लो. या. यी. द्र.)

समय का पूर्ण प्रयोग करें, आपके लिए अनुकूल है, बहुत समय भे सोचे गए कार्य पूर्ण होने को है। परंतु खयाल रखें, अन्यथिक उत्तरवलेपन से काम छिपाएँ भी सकते हैं। रिश्तेदारों से मेल मिलाप रहेगा तथा शुभ समाचार प्राप्त होगे। संतान की ओर से जाप चिनित रहेगा। यात्रा के भी योग प्रस्तुत होंगे परंतु रसायन का ध्यान रखें। इस मास 'विष्णु साधना' अवश्य करें। अनुकूल तिथियाँ २, ४, ७, ९, १३, १६, २१, और २४ हैं।

ध्यू

(दे. वो. आ. वी. ध्या. का. दा. वी.)

जीवन में मधुरता इस मास विशेष रहेगी, आप धीरे धीरे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जा रहे हैं और आपको पूर्ण सफलता अवश्य मिलेगी हो। परिवार बाले या भिन्नों की ओर से विशेष यहोगे प्राप्त नहीं होगा एवं आप अपने ही प्रयासों से आगे बढ़ेंगे। इस मास प्रेम प्रसंगों में भी सफलता मिलेगी। और अधिक अनुकूलता हेतु 'गुरु छत्रवस्त्र साधना' संपन्न करें। इस मास की अनुकूल तिथियाँ १, ३, ८, ११, १५, १७, २० और २८ हैं।

मक्तु

(ओ. जा. जी. खू. खे. खो. वा. वी.)

मान सम्मान के लिए आप हमेशा प्रयत्नरत रहते हैं, इस मास आपको समाज में पूर्ण सम्मान प्राप्त होगा। नीकरी में भी प्रगोष्ठन का योग है। उग्र आप व्यापार करते हैं तो इस मास आशानीत लाभ होंगे परंतु व्यवसाय में प्रतिक्रियाएँ एवं साझेदारों से सावधान रहें। आध्यात्मिकता में भी इस मास

ज्योतिष की दृष्टि से फाल्गुन २०५८

यह मास राजनीति की दृष्टि से विशेष वरदान का है। दलों में फटबडेगी और अस्थायी सरकारें ही बनेंगी। व्यापार के लिये यह मास उचित नहीं है, महगाई में विशेष वृद्धि के योग है। भारत के अपने पड़ोसी गण्ड से सम्बन्ध और भी अधिक खराब होंगे। उत्तराव का प्रभाव बढ़ने से किसी राष्ट्रनेता के जीवन पर भी व्यतरा है, कृषि स्थिति अनुकूल रहेगी।

लचि बढ़ नह कर रहेगी। इस माह 'शनि साधना' करें। इस माह की शुभ तिथियाँ ३, ७, १०, १६, २५ और २८ हैं।

कुम्भ

(वू. वे. गो. सा. सू. से. सो. दा.)

धन प्राप्ति हेतु यह माह अति उत्तम है, स्कृत हुआ धन भी प्राप्त हो सकता है। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें अन्यथा रसायन पर अन्यथिक व्यय हो सकता है। जीवन साथी के स्वास्थ्य के कारण भी चिंता हो सकती है। व्यवसाय बढ़ने सा नये व्यवसाय भारे में करने या नीकरी प्राप्ति हेतु यह माह उत्तम है और अधिक सफलता हेतु 'सरस्वति साधना' करें। इस मास की अनुकूल तिथियाँ ४, ६, १०, १२, १४, १८ और २२, २५, ३० हैं।

मीठा

(वी. द्र. व. ज. वे. दो. वा. ची)

जीवन में आप वह सब कुछ प्राप्त करने की ओर अग्रसर हैं जो कि पिछले कुछ समय तक आपका लक्ष्य रहा है। इस मास आपको आकस्मिक लाभ होने के योग है। परिवार एवं समाज में मान सम्मान भी प्राप्त होगा। शत्रु चाहते हुए भी आपको हानि नहीं पहुंचा पाएंगे।

इस मास आप 'गुरु साधना' संपन्न करें। इस मास आपकी अनुकूल तिथियाँ २, १०, २५, ३३, ३५, २६ और २५, २८ हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्योहार

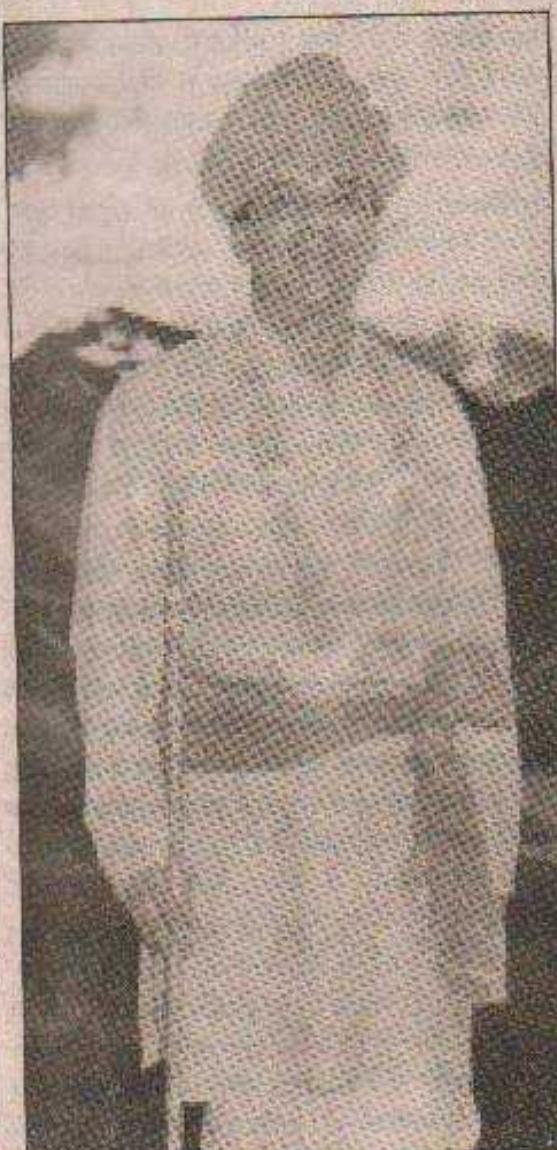
- ६ मार्च काल्युन कृष्ण पक्ष तिथि-६- दुष्प्रवार- वी शनिवारी
- ८ मार्च काल्युन कृष्ण पक्ष तिथि-१०- गुरुवार- दयानन्द रात्रस्वती जयन्ती
- ९ मार्च काल्युन कृष्ण पक्ष तिथि-११- शनिवार- विनाया एकाशमी
- ११ मार्च काल्युन कृष्ण पक्ष तिथि-१३- लोमवार- लोम प्रताप व्रत
- १२ मार्च काल्युन कृष्ण पक्ष तिथि-१४- भैशलवार- मडाशिव रात्रि
- १६ मार्च काल्युन कृष्ण पक्ष तिथि-२- शनिवार- रामकृष्ण जयन्ती
- २५ मार्च काल्युन कृष्ण पक्ष तिथि-११- सोमवार- आमला एकाशमी
- २८ मार्च काल्युन कृष्ण पक्ष तिथि-१५- गुरुवार- हालिका पर्व

सोमाया हुं

लायक, पठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह अप बहां प्रस्तुत है, जो किसी भी व्यक्ति के लिए मैं उत्तीर्ण का कार्य होता है तथा जिन्हें जान कर आप इसमें अपने लिए उत्तीर्ण का मार्ग प्रशंसन कर सकते हैं।
 जीवनी वर्ष सारणी में समय को प्रेष्ठ अप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, बौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो भवया जन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस प्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके मालिय में छाँकित हो जायेगा।

बहु मुहूर्त का समय प्रातः ४.२४ से ६.०० बजे तक ही रहता है।

चार/दिनांक	प्रेष्ठ समय
शनिवार (३ १० १७ २४ मार्च)	दिन ०६.०० से १०.०० तक रात्रि ०६.४८ से ०७.३६ तक ०८.२४ से १०.३० तक ०३.३६ से ०६.०० तक
सोमवार (४ ११ १८ २५ मार्च)	दिन ०६.०० से ०७.३० तक १०.४८ से ०१.१२ तक ०३.३६ से ०५.१२ तक रात्रि ०७.३६ से १०.०० तक ०१.१२ से ०२.४८ तक
मंगलवार (५ १२ १९ २६ मार्च)	दिन ०६.०० से ०८.२४ तक १०.०० से १२.२४ तक ०४.३० से ०५.१२ तक रात्रि ०७.३६ से १०.००, १२.२४ ८ ०२.००, ०३.३६ से ०६.०० तक
बुधवार (६ १३ २० २७ मार्च)	दिन ०७.३६ से ०९.१२ तक ११.३६ से १२.०० तक ०३.३६ से ०६.०० तक रात्रि ०६.४८ से १०.४८ तक ०२.०० से ०६.०० तक
गुरुवार (७ १४ २१ २८ मार्च)	दिन ०६.०० से ०८.२४ तक १०.४८ से ०१.१२ रात ०४.२४ से ०६.०० तक रात्रि ०७.३६ से १०.०० तक ०१.१२ से ०२.४८ तक
शुक्रवार (१ ८ १५ २२ मार्च)	दिन ०६.४८ से १०.३० तक ०४.२४ से ०५.१२ तक रात्रि ०८.२४ से १०.४८ तक ०१.१२ से ०३.३६ तक ०४.२४ से ०६.०० तक
शनिवार (२ ९ १६ २३ मार्च)	दिन १०.३० से १२.२४ तक ०३.३६ से ०५.१२ तक रात्रि ०८.२४ से १०.४८ तक ०२.०० से ०३.३६ तक ०४.२४ से ०६.०० तक



उत्तु ग्रान्ति का ही विषय उन्मित्ति का है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भवन रहती है, कि वह कार्य सफल होगा या नहीं, अफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित वही हो जायेंगी, परन्तु नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह लब्ध के तबाहतहित कर यादेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिससे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल हर आनन्द युक्त बन जावा। कुछ ऐसे ही उपाय आपके रागका प्रस्तुत हैं, जो बहानेमिटर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रन्थों से लंकित हैं, जिन्हें वहाँ प्रत्येक दिनस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर उपर्युक्त के तबाहतहित कर यादेगा।

आच

1. नमक की पांच देशियों बनाकर, पांचों पर पूजा, अधात, कुंकुम चढ़ाकर जाएँ।
2. काला लिल दान में दें, कार्य में उपस्थित होने वाली बाधाएं न्यून होंगी।
3. प्रातः काल सूर्य देव को जल चढ़ाकर ही बाहर जाएँ।
4. प्रातः काल उठने ही पांच बार गायत्री मंत्र का जप करें।
5. छनुमान जी के विश्रह के समान लेन का दीपक प्रज्ञवलित कर कार्य पर जाने से सफलता की संभावना बढ़ेगी।
6. पांच लोग एकत्र कर, उन्हें कागज में ब्रांघकर अपने कार्य की सफलता के लिए प्रार्थना कर किसी संदिग्ध में चढ़ा दें।
7. आज शाम स्नान कर गुरु विश के समान आरती करें, शयन पूर्व गुरु मंत्र का जप करें, शुभ परिणाम होंगे।
8. इष्ट का ध्यान करते हुए अपने मन्त्रक पर तिलक करें, दिन में शुभ समाचार मिलेंगे।
9. घर से बाहर जाने के पूर्व गुड़ खा कर जाना शुभ रहेगा।
10. बाहर जाने से पहले 'मैं समय हूँ' छारा शुभ काल देखकर जाएं, अनिष्ट नियारण होगा।
11. आज प्रातः गुरु पूजन के बाद गणवान शिव का स्मरण करते हुए पांच मिनट 'उन्मम् शिवाय' का जप करें।
12. 'हनुमान चालीसा' करने से मन में साहस का संचार होगा, और अनुकूलता प्राप्त होगी।
13. आज प्रातः दुर्गा के ही एक स्फलता 'विन्द्यवासिनी' का स्मरण कर गुरु चित्र के समान एक लाल पूज्य चढ़ाएं।
14. आज अपने क्रोध पर नियंत्रण रखते हुए कार्य करें।
15. चुटकी भर हींग को अपने सिर पर से टीन बार धूमा कर दक्षिण दिशा में फेंक दें।
16. सरसों के तेल का दीपक लगाकर अपने बगीचे में रख दें।
17. बाहर निकलने से पूर्व एक इलायची लधा एक लोग भगवती दुर्गा के चरणों में अपित करें।
18. प्रातः काल रोटी पर गुड़ रख कर उसे किसी मिखारी को दान कर दें या गाय को खिला दें।
19. तुलसी में जल चढ़ाएं। शुभ रहेगा।
20. अपने दिन का आरम्भ करते समान जब बाहर निकलें, तो पहले आप दाहिना पाव बाहर रखें।
21. गुरु जन्म दिवस के रूप में प्रातः निखिलेश्वरानन्द स्नान का पूर्ण गाठ करें, विवरा पत्रेला गुरु चिन्तन करें।
22. भगवान गणेश को दूरी चढ़ाकर ही बाहर जाएँ।
23. प्रत्येक कार्य से पूर्व पांच बार 'ॐ शं शं शं' का उच्चारण करें।
24. प्रातः काल नृथोदय से पहले ही पूजा स्थान में कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर उस पर जल से भरा कलश स्थापित करें।
25. घर से बाहर जाते समय दूध से बने किसी पदार्थ का सेवन कर के जाएं, कार्य में अनुकूलता मिलेगी।
26. भोजन करने से पूर्व गाय को कुरु खाने की अवश्य है।
27. सफेद वस्त्र धारण करना आज के दिन शुभ रहेगा।
28. एक सफेद रुमाल में बोडी भिट्ठा काला लिल व नमक, ब्रांघकर घर से बाहर फेंक दें, शान्ति अनुभव होगा।
29. गणपति मूर्ति अथवा चित्र के सम्मुख गणपति मंत्र का जप करें।
30. बाहर जाते समय काली गाय को रोटी अवश्य दें।
31. एक माला गुरु चेतना मंत्र का जप अवश्य करें।

जीवन छाई

यों तो किसी भी सोग के शब्द हेतु आज चिकित्सा विद्वान के पास अचूक इताज है, परन्तु मंत्रों के गाएँग से चिकित्सा के पीछे धारणा यह है, कि सभी रोगों का उद्भव मनुष्य के मन से ही होता है। मन पर पड़े कुछ प्रश्नों की विधि मन्त्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए, तो रोग स्थायी रूप से शाक्त हो जाते हैं।

१. क्या आप हमेशा कुसर्दा से बचनीय रहते हैं?

आप हमेशा दूसरे व्यक्तियों से दरते रहते हैं। जो व्यक्ति ज्यादा बलशाली है उसके सामने तो हर कोई द्युकता है पर इसका महत्व यह नहीं, कि आप हर व्यक्ति से बचनीय रहें। आपके अन्दर भी पर्याप्त शक्ति है, उसका एक बार प्रयोग तो करें। यह प्रयोग अत्यन्त साहस, बल पराक्रम प्रदान करता है और उपने साधक की डर तरह से रक्षा करता है।

किसी पात्र में 'वीर सिद्धि गुटिका' को रविवार की शति १० बजे घर के एकांत कक्ष में दक्षिण में मुख दो, काले ऊनी आसन पर बैठ जाएं। जमीन पर चन्द्रन से स्वस्तिक बनाकर उसमें गुटिका को स्थापित कर दें। और उसके चारों दिशाओं में तेल के चार दीपक जलाएं और निम्न मंत्र का जप ४५ मिनट तक करें-

मंत्र

॥ॐ अचिते अपसरिते अमायाय फट॥

जगते रविवार नके दूसरे दिन की नियमित रूप ये करें तथा प्रयोग की समाप्ति पर इस गुटिका को नदी में विसर्जित कर दें।

लाभना सामग्री एकेट ६०/-

२. क्या विवाह के पश्चात जीवन में नीरसता आ गई है?

विवाह के पश्चात जीवन में जो उमंग, उत्साह पति और पत्नी के मध्य देखने को मिलता है, वह कुछ माह के बाद ही कम होने लगता है और तनाव, झगड़ा, समस्याएं उभर कर आने लगती हैं। इससे उनका पारिवारिक जीवन दिखावे के रूप में तो चलता है, लेकिन आनंदरिक रूप से उनमें आपस

में कोई प्रेम या लगाव नहीं रह जाता है। वह एक दूरारे से अलग होते जाते हैं और आपस में ठीक से बोल भी नहीं पाते हैं, जिससे कि परिवार टूटने लगता है।

यदि आपके सामने भी इस प्रकार ने समझा आ रही है, तो आप इस अद्वितीय प्रयोग को अवश्य सम्पूर्ण करें-

किसी पात्र में 'वृहन्त' को स्थापित कर उसका कुकम, पुष्प, धूप, दीप व आक्षत से पूजन करें। तदुपरान्त उसके समस्त निम्न मंत्र का २१ मिनट तक जप करें। यह ११ विन का प्रयोग है, इसको प्रातः, काल सम्पूर्ण करना अधिक योग्य रहता है।

मंत्र

॥ॐ श्री वर्ली अवृत्तालिवी फट॥

प्रयोग समाप्ति पर 'वृहन्त' को जलमें विसर्जित करें।

सामग्री लाम्हा - १०/-

३. क्या आपको लगता है कि आप सही साधक नहीं हैं?

साधक का अर्थ यह नहीं, कि धोनी धोनी पढ़िन ली, गुरु मंत्र की चादर औढ़ ली, आख बंद कर पूजा पाठ किया और बन गए साधक। साधक का अर्थ है, जो अपने तन व मन को साध सके, ज्ञान को एकाग्र कर सके। यदि आप ऐसा नहीं कर पा रहे हैं, तो आप अच्छी सही शर्थों में साधक नहीं बन पाए हैं, किर साधनाओं में सफलता की सम्भावना न्यून ही रहती है।

सबसे पहले तो आपको 'गुरु दीक्षा' अवश्य प्राप्त करनी चाहिए और नियमित रूप से गुरु प्रदत्त मंत्र का प्रातः, काल जप करना ही चाहिए। इसके बाद आप 'विद्वत् माला' से एक

माला से निम्न मंत्र का जप करें-

मंत्र

ॐ हृषीकेशव अपुष्याय पिदवे वगः॥

मंत्र जप के बाद माला को गले में धारण कर आंख बन्द कर शांत भाव से गुरुदेव के स्वरूप का ५-६० मिनट तक ध्यान करें। धोरे धोरे ध्यान व जप द्वारा आपको वह चेतना, वह नेत्रस्थिता स्वतः, प्राण होने लग जाएगी और आप सही अर्थों में साधक कहना सकेंगे।

इस प्रयोग को किसी भी दिन से प्रारंभ किया जा सकता है और हरे एक माह तक नियमित रूप से करना चाहिए। प्रयोग समाप्ति के बाद माला को जल में विसर्जित कर दें।

लाभना सामग्री - ₹१०/-

६. कथा आप अपने को उत्साहीन मठसूस करते हैं?

कई बार न चाहते हुए भी व्यक्ति अपने आप में ही उदास रहने लग जाता है, उसका क्या कारण होता है, सोचने पर भी ठीक से स्पष्ट नहीं हो पाता है। अपने कार्यों को तो वह करता रहता है, परंतु एक बोड़ा समझ कर, एक थोपा हुआ कार्य समझ कर। थोड़ा सा कार्य कर भी वह अपने को थका हुआ महसूस करने लगता है। ऐसे में वह कभी दूश्वर को दोष देता है, और कभी अपने घर के सदस्यों को और कभी अपने सहकर्मियों को, परंतु कारण तो स्वयं उसके अन्दर ही छिपा होता है। और यह कारण होता है, जोश की कमी, उत्साह की न्यूनता जो आपको अन्दर से तोड़ कर रख देती है।

और जब मन ही मर जाए, तो व्यक्ति भी एक तरह से मृत ही हो जाता है, ऐसा व्यक्ति जीवन के किसी भी क्षेत्र में एक कदम भी आगे बढ़ नहीं सकता, और न ही उसे समाज में कोई सम्मान या यश प्राप्त होता है। मन में उत्साह का संचार उतना ही आवश्यक है, जिसना कि शरीर के लिए नियमित खोजन।

इस प्रयोग द्वारा मन में नवीन जोश, नवीन उत्साह का संचार ही जाता है, जिससे मन प्रफुल्लित रहता है, और कार्य के प्रति लगन लग जाती है, और जीवन में किर से आशा की एक नई किरण दिखने लगती है, फिर सफलता उससे दूर नहीं होती। इसके लिए अपने साथ लाल रंग का बरड़ छिड़ा कर उस पर किसी थाली में काजल से ३० बनाएं। उस पर कुंकुम, अक्षत एवं पुष्प उर्पित करें। फिर उस पर 'बहुधिनी' को स्थापित करें। अपने मासन के नीचे भी एक 'ॐ' बना लें। काजल से अपने मस्तक पर तिलक लगाएं। अब 'स्फुरे हकीक माला' से निम्न मंत्र की ५ माला ७ दिन तक नित्य करें।

मंत्र

॥ॐ ही ही हृषीकेश॥

आठवें दिन माला व वरुणिनी को किसी निजीन स्थान में डाल आवें।

लाभना सामग्री - ₹१०/-

६. कथा आपका पठन में मन नहीं लगता है?

विद्यालय जने वाले बालक बालिकाओं के लिए यह यह एक आम समस्या ही गई है। इसका एक कारण तो होता है, बालक के जीवन में उधित मार्गदर्शन का अभाव, और दूसरा उसके कीमत चिन पर दृष्टिवालाओं का तीव्र प्रभाव। इन ही कारणों से उसका मन पुस्तकों में कम, टॉवी, बीडियो फ़िल्म, पत्रिकाओं, और किकेट आदि में अधिक लगने लगता है। परंतु अति किसी भी चीज़ की हो, परिणाम विपरीत होते हैं। परिणाम होता है, कि बच्चा अपनी कक्षा में पिछड़ने लगता है, माता-पिता की नज़रों में एक अपराधी सा बन जाता है, इसके अन्दर इतनी कम उस में ही कुछ धर कर लेती है।

इसका वायित्व सही कहा जाए, तो बच्चे का न होकर माता-पिता का ही होता है, कि उन्होंने सही समय पर अपने बालक का ध्यान नहीं दिया। या तो वहाँ दिया ही नहीं अथवा अधिक लाल प्यास दे दिया, अनुशासन नहीं बरता। कारण कुछ भी ही यदि सरस्वती साधना को सम्पन्न किया जाए, तो लाला अवश्य ही मिलता है।

इसके लिए बालक को चाहिए कि वह 'सरस्वती यंत्र' (धारण करने वाला) जाले थाएं में विरोक्त किसी सोगवार के दिन धारण कर ले। नित्य। १। बार निम्न मंत्र का नुस्खा चित्र के साथ उच्चारण करें।

मंत्र

॥ॐ ही ही हृषीकेश॥

फिर धारण किए यंत्र को उतार कर अपने दोनों नेत्रों व ललाट पर स्पर्शी करावें, प्रार्थना करें, कि गुरुदेव मेरा पक्षाई में मन एकाश ही सके जौर में विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सके। ऐसा बोलकर पुनः यंत्र को गले में धारण कर ले। ऐसा दो माह तक नियमित करने से बालक की बुद्धि तोषण होने लगती है एवं उसका ध्यान अपने कार्यों में लगने लगता है।

यदि बालक छोड़ा है भीर स्वयं गोक से नय नहीं कर सकता है, तो बालक के स्थान पर उसके माता-पिता बालक के नाम से संकल्प लेकर उसके नाम से मंत्र जप कर सकते हैं और बाद में यंत्र को बालक के गले में पहना सकते हैं।

लाभना सामग्री - ₹१०/-

रहने
वाले
यह
वेष्या
और
आंशुल
बाल
सां

वस
सेव
आ
प्रेरि
की
मर
कृ
से
क
नि
मे
ति
दि
कृ

क्यों धर्मराते हैं आप श्वेत दाग से

आयुर्वेदिक वार्षिक उपचार प्रियांगिनी छुप्पी

श्वेत दाग को साप्रान्यतः कुष्ठ रोग मान लिया जाता है और जिन्हें यह दाग होने प्रारम्भ हो जाते हैं उन्हें निराशा होने लगती है और एक हीन भावना उत्पन्न होती है। वास्तव में श्वेत दाग ऐसी कोई बीमारी नहीं है जिसका इलाज संभव नहीं है। प्रस्तुत लेख में श्वेत दाग के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी दी जा रही है, जिसके कारण आप स्वयं उसका इलाज कर सकते हैं। उसके लिए धोखेबाज, लालची डॉक्टरों के चक्र में न पड़ें और अपना इलाज स्वयं करें।

सफेद दागों का उद्भव

आयुर्वेदानुसार मनुष्य के शरीर में त्वचा की छुप्रत होती है जिसमें तीसरी त्वचा से चरक ने श्वेतकुष्ठ की उत्पत्ति भानी है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार त्वचा की स्वरूप अपरी प्रत एपिड्रिमिस में मेलानिन नामक एक रंगक (त्वचा को रंग प्रदान करने वाला) तत्व होता है जो कि त्वचा की सामान्य (गेहूंभा, सांबला या काला) रंग प्रदान करता है। किसी भी कारणबश 'मेलानिन' नष्ट हो जाने या नहीं बनते या इसकी कमी हो जाने से त्वचा जगह-जगह सफेद होने लगती है और सफेद दागों का उद्भव होता है। श्वेतकुष्ठ ने 'मेलानिन' की उत्पत्ति का नियन्त्रण पिण्डुटी ग्रन्थि से उत्पन्न होने वाले एक हार्नीन 'मेलाटोनिन' से होता है। त्वचा के अतिरिक्त शरीर के काले आलों का सन्तुलन भी 'मेलानिन' के कारण ही ज्ञात रहता है।

श्वेतकुष्ठ का फैलना

ये सफेद दाग धब्बे धीरे धोरे फैलने लग जाते हैं और कभी-कभी सम्पूर्ण त्वचा श्वेत हो जाती है, बीच में काले, लाल आ गुलाबी धब्बे रह जाते हैं। अक्सर सफेद दाग पुराने हो

जाने पर प्रभावित स्थान की त्वचा कुछ उभर जाती है तथा उस स्थान के बाल भी सफेद हो जाते हैं। दागों के पुराने ही जाने पर रसर्शी-जान भी कुछ कम जो जाता है। इस रोग का पहले ये पता नहीं चलता। जिन किसी रसष्ट्र कारण के, श्वेतकुष्ठ किसी भी आयु से हो सकता है और जो और पुस्त्र दोनों की समान रूप में हो सकता है। सफेद दागों की शुरुआत प्रायः हींठ, आंखें, देहरे और गर्दन व अंगूलियों के पीरों में देखी जाती है। प्रायः मैं चान्दी पर सपेत्र धारियां भी बनती हैं। अथवा हींठ-हींठ बिन्दु या बाने उभरते हैं। बाद में ये बढ़ते लगते हैं और गोल या आण्डाकार धब्बों का जाकार गड़पा कर लेते हैं। हींठ, आंखें, माथा, सिर, चेहरा, गर्वन, डाथी-पीरों की उगलियां, हाथ-पैर, बाँड़ और टांगों पर दाग अधिकतर उभरते हैं।

दागों का घटना-बढ़ना

ये सपेत्र दाग कभी जल्दी और किन्हीं रोगियों में देर से बनते हैं। कुछ रोगियों में एक बार जहां सपेत्र दाग हो गए हैं, जिन घटे बढ़े किसे ही रह जाते हैं। कई बार यह रोग वर्षों तक

रहने के पश्चात एकाएक दूर हो जाता है। इस रोग के कारण जबान लड़के लड़कियों कि शादी में बहुत कठिनाई होती है। यह धारणा गलत है कि सफेद दाग नेजी से फैलते हैं। कई बार देखा गया है कि एक दाग बीसियों साल तक वैसा ही रहा है और उसके बाद नेजी से सारे शरीर में फैल जाता है। सिर, आंखों के अर बाले स्थान पर रोग हो जाने से इन स्थानों के बाल भी सफेद हो जाते हैं।

सफेद कुष्ठ के कारण

आद्युवेद में इस रोग का प्रमुख कारण विकृष्ट और बेमेल वस्तुओं का सेवन बताया गया है जैसे वृथ के साथ मछली का सेवन, आजकल कोढ़ लीवर आयल और दृथ से भी। विकृष्ट आडार विहार के अतिरिक्त अन्य निम्नलिखित हैं:- १. जीर्ण पेचिश २. आंतों में कोढ़ ३. आंतों से सम्बन्धित तथा कीटाणुजनित बीमारियाँ ४. सोराइसिस एजिमा जैसे चर्म रोगों की प्रतिक्रिया तथा चर्मरोग दबाने के लिए नेज लोशन और मल्ट्स आदि का प्रयोग ५. इंजेक्शनों और टीकों का दुष्प्रभाव ६. शक्तिशाली एन्टीबायोटिक और कूमिनाशक दवाओं धड़ल्से में प्रयोग ७. नेज औषधियों की प्रतिक्रिया जैसे टायफायड में कलोरीमाइसेटिन का, दुरुपयोग ८. कई प्रकार की बिन्दी, सिन्दूर, छन्नीचिंग जैसे सौंदर्य-प्रसाधनों का दुष्प्रभाव ९. फैशनेशन वस्तुओं जैसे नायलन के जुराब या रबड़ के सम्पर्क में ज्यादा आने का दुष्प्रशिणाम १०. नशा का दुष्प्रभाव ११. किसी पदार्थ से उत्पन्न जलनी १२. खाद्य सामग्री की मिलावट १३. सिर्ज मलाने, तली चीजें, चिकनाई युक्त खाद्य पदार्थों का अधिक मात्रा में सेवन १४. अधिक नमक का सेवन १५. बिंगड़े फोड़े १६. बिंगड़ी चोटें, रगड़ या जल जाने के कारण टीक न हो रहे निशान १७. हार्मोन की गडबडी १८. दस्तवरक्यूलर इन्सेक्शन १९. लीवर में खराबी या पित्त की खराबी २०. गड़रा वृक्ष या मानसिक आद्यात २१. प्राकृतिक देग जैसे बम्म, मल, मूत्र आदि को रोकना २२. चहायासे सम्बन्धी गलनियाँ तथा धीमन के तुरन्त बाद सहवाल २३. वंशानुगत तपेशिक, दमा, एकिनिमा, मधुमेह, लीवर सम्बन्धी डिक्कायत आदि का होना २४. उपर्युक्त दोष - हम प्रकार श्वेतकुष्ठ के अनेक कारण गिनाये जा सकते हैं। प्राकृतिक चिकित्सा में अन्य रोगों की तरह सफेद दोगों का भी मुख्य कारण अवश्यक पदार्थों का शरीर में अभाव तथा अनावश्यक पदार्थों का शरीर में संग्रह

और इन पदार्थों से उत्पन्न शरीर में अम्लता, कृषि, कृष्ण लोकर आदि अंगों का असंतोषजनक कार्य माना गया है।

श्वेतकुष्ठ के बारे में प्रमाणिक जानकारी आधुनिक खोज के अनुसार

१. सफेद दाग वास्तव में कुष्ठ नहीं है। न्यूकोडरगा और लेप्रोसी में कोई सम्बन्ध भी नहीं है। इसे कोढ़ के समान कहना भी गलत धारणा है।

२. यह सम्पर्क से फैलने वाली बीमारी भी नहीं है। यह मानव गलत है कि वह छुत की बीमारी है।

३. सामाजिक यह खानदानी बीमारी भी नहीं है। रोगी के परिवार में उसके माता-पिता, दादा-दाढ़ी, नाना-नानी आदि में से किसी को सफेद दाग हो ली, यह आवश्यक नहीं। कभी कभार अपवाद मिल जाना अलग बात है।

४. सफेद कुष्ठ न हो रोगाणुजन्य है और न ही इस रोग में किसी भी जबस्ता में किसी प्रकार का साव अवलोकन है जबकि कोढ़ विषाणु से होता है जो सम्पर्क से फैलता है तथा कोढ़ में कुछ वहना है अर्थात् रोगशस्त्र अंग से पतला या चिकना-सा साव निकलता है।

५. सफेद दाग में कोढ़ की तरह त्वचा की संवेदनशीलता (महसूस करने की शक्ति) नहीं होती है। श्वेत कुष्ठ ठीक होने लायक है अथवा नहीं? इस बात का निदान रोगी के दाग की जगह सुई चुभोकर किया जाता है। यदि रोगी के दाग की जगह सुई चुभाने पर त्वचा से खून निकले और वर्द महसूस हो तो रोग साध्य है और पानी जैसा द्रव्य निकले और संवेदनशीलता का अभाव हो तो रोग असाध्य माना जाता है।

६. श्वेत कुष्ठ में रोगी को कोई शारीरिक नकलीफ नहीं होती और न ही जलन या खुजली या किसी प्रकार का साव। सिर्फ दाग ही रहते हैं, जिनकी कुरुपता की बजाए से रोगी को मानसिक तनाव बना रहता है। अपने सफेद दोगों को देखकर या शरीर की अस्वाभाविक अवस्था का झूयाल कर बहु अपने भीतर एक प्रकार की हीनता की भावना से गमिन होने लगता है और जीवन में नीरसता एवं तिरस्कार का भय पालने लगता है जबकि इन दागों से न ही शरीर के किसी अंग पर कोई कुप्रभाव होता है और न ही स्वास्थ्य को किसी प्रकार की हानि ही और न ही किसी प्रकार का मानसिक विकार ही

आयुर्वेद के अताखुशार कोई भी शोभा असाध्य नहीं होता है और श्वेत दाम तो बहुत छोटी लीमाई है जो केवल आहुरी त्वया को प्रभावित करती है। यदि शेषी धूतप्रसारी छिक्या द्वारा श्रीडक शुद्धिकरण कर अस रोग का ड्विलाज करता है तो उसकी यह लीमाई बहुत जख्ती ठीक हो जाती है। इसके अतादा पाठ्यों से शांत हुए विष हर लीमाई के लिए इत्योपेतिक उपचार के हिट नहीं जाने। शब्दों पहले अपने रत्नपान की शुद्धता इसी और आयुर्वेद को अपनाएं।

होता है।

श्वेत दाग निवारण - विशेष उपचार

श्वेत दाग निवारण हेतु मध्ये उपयुक्त औषधि बावची है, जिसे बुकुबी, सोमराजी भी कहा जाता है। इसका वनस्पति शास्त्र में नाम (Psoralea Corylifolia Linn) है, यह बरसाती दीधे से गोलियों से निकलने वाले बीज हैं, जोकि किसी भी एसारी की दुकान पर रुग्माना से मिल जाते हैं। २०० ग्राम बीज लेकर काले रंग की गाय के मूत्र को छान कर एक बोतल में भर ले, उसके पश्चात एक गिर्टी के बर्तन में जोगूत और उसमें 'बावची' के बीज मिल दें। इसे तीन दिन तक गिरोए रखें जब ये बीज पूल जाएं तो इन्हें निकल लें तथा छान लें, जिससे कष्ट में वा छलनी में केवल बीज रह जाएंगे।

उसके पश्चात इन कूले द्रुढ़ बीजों को खरल में अचवा किसी अन्य उपाय से पोस कर बाईंक पेस्ट बना लें और इसकी चम्पों के आकार की गोलियों बनाकर छाया में साफ कष्ट पर सुखा दें। सूखने पर इन गोलियों को किसी साफ शीशी में मुरक्कित रखें।

सेवन विधि - प्रतिदिन सुबह शाम खानी पेट एक-एक गोली पानी के साथ लें। विशेष ध्यन रखने की आवश्यकता है कि

गोली लेने के दो घण्टे पहले और दो घण्टे बाद कुछ भी आहार ग्रहण नहीं करना है केवल पानी भी यकृते हैं। ४-६ महीने तपचार करने पर यह रोग जह से समाप्त हो जाता है।

बाह्य रूप से इस औषधि का सेवन करने हेतु गोमूत्र में पीसे बीजों का गाढ़ा लेप नित्य प्रातः जहां-जहां सफेद दाग है वहां-वहां लगाएं।

इसमें नित्य नया लेप तैयार करने की आवश्यकता नहीं है यदि लेप दूसरे दिन सूख जाता है तो उसमें गोमूत्र छानकर गोड़ा मिलाकर उसे गीला बनाकर लेप कर सकते हैं। बावची के बीज उष्ण प्रकृति के होते हैं और जिन व्यक्तियों की त्वचा को माल प्रकृति की छोटी है तो इस कारण छाले या फफ्ले भी हो सकते हैं लेकिन उससे घबराने की आवश्यकता नहीं है ऐसी अविभावित में लेप लगाना बन्द कर छालों को जल से धोकर शुद्ध धी और कामुक मिलाकर लगा दें इससे जलन और धाव शीघ्र नहीं होते हैं। छाले ठीक होने पर लेप का प्रयोग पुनः प्रारम्भ कर सकते हैं।

इसके अलावा बावची का तेल और नीम का तेल मिलाकर रोग यस्त भाग पर दिन में दो बार लगाने से भी लाभ प्राप्त होता है। रोगी के लिए एक छोटा चम्मच बावची का सूर्ण सुबह आम पानी के साथ सेवन करना हितकर रहता है।

श्वेत दाग पर तुलसी का रस मलते रहने से भी कुछ समय बाद ये दाग मिट जाते हैं, इसके साथ ही काली तुलसी के ११ पत्ते पीसकर गोली बनाकर प्रतिदिन शात को ताम्बे के पात्र में रखे हुए बासी गानी के साथ सेवन करने से भी आराम प्राप्त होता है।

बथुए को उबाल कर उसका पानी निचोड़ कर इस पानी से रोगाना सफेद दागों को धोएं इसके साथ ही नित्य बथुए की सब्जी दोनों समय सेवन करें।

इसके अलावा ग्वार पाठा (धृत कुमारी) लाकर चाकू से छिलकर कटे निकाल दें, छिलने के बाद गृहे को किसी ठंडे घोड़े बर्तन पर रखकर रोगी नींवे पांव उस पर खड़ा हो जाए और कोई सहारा लेकर ग्वार पाठा के गृहे को नींवे पैरों से कुचलता रहे। जब तक उसके मुँह का स्वाद कड़वा नहीं हो जाता। १५-२० मिनट में ही मुँह कड़वा होने लगता है। धीरे-धीरे ४-५ मिनट बाद मुँह में कटवाहट आती है उस समय यह किया रोक दें। इससे भी कई रोगियों का श्वेतकोष्ठ तीन-चार महीने में

नष्ट होने देखा गया है।

२०० शाम काले चने, १५ शाम विफला चूर्ण के साथ १२५ शाम पानी में प्रातःकाल भीगो दें, २४ घाटे शिशने के बाद दूसरे दिन भूख जब चने फूलकर अंकुरित हो जाएं तो प्रातःकाल नशने के लम्बे एक-एक चना छिनके सहित गूब्रा चबा-चबा कर खाएं। करीब ४० दिन तक ऐसा करने से श्वेत दाग मिटने प्रारम्भ हो जाते हैं, इसके साथ ही इससे कब्जा इत्यादि भी दूर होती है और भूख बढ़ती है तथा रक्त शुद्ध होता है।

उपरोक्त उपचय इनरों रोगियों द्वारा आमनाएं गए हैं और इलाज की सफलता की जांच यह है कि सफेद दाग धोरे थीरे गुलाबी या धूरे होने लगे तो यह निश्चित समझे को रोग ठीक हो रहा है।

आयुर्वेद शास्त्र में परहेज अर्थात् पथ्य-अपथ्य का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है। खान पान का परहेज रखने से विशेष सफलता प्राप्त होती है।

इवेत कुष्ठ के रोगियों को विशेष परहेज सामान्य परहेज क्षया रखना चाहिए और विस प्रकार का पथ्य ग्रहण कर सकते हैं इसका विवरण आजे स्पष्ट किया जा रहा है।

अपथ्य (ग्रहण नहीं करने योग्य चीजें)

(अ) विशेष परहेज - अण्डा, मांस, मछली, तेल, अलडा धी, लाल मिर्च, शराब व नशीली चीजें, तेल खटाई, इमली, आंबला, अज्ञानास, टमाटर, संतरा, अनार, अमरुद, खटटे कल, केला, फूल गोभी, अरबी, पिंडी, खीरा, ककड़ी, मूली, उडव व मसूर की दाल, काजू, दूध, दही, लस्सी आदि सफेद वस्तुओं का सेवन।

(ब) सामान्य परहेज

खटटी वस्तुएं	: इमली, अमचूर, नीबू, टमाटर।
मिर्च ग्रसाले	: लाल मिर्च।
गरिष्ठ भोजन	: तले पदार्थ।
लेसदार पदार्थ	: अरबी, धिंडी, कटहल।
सफेद वस्तुएं	: दूध, दूध से बनी वस्तुएं, दही, लस्सी, छाछ, चावल, केला, काजू।
अनाज और तिलहन	: चावल, मूँगफली।
शाले	: मसूर की दान, उडव, राजमा।
फल	: खटटे (साइट्रस) फल,

अज्ञानास, संतरा, अनार, अमरुद, नीबू, आंबला जैसे चिटामिन 'सी' वाले पदार्थ।

सुखे मेवे	: काजू।
शाक-मसली	: फूलगोभी, ब्रेंगन।
नशीली वस्तुएं	: शराब, तम्बाकू।
मांसाहार	: अण्डा, मछली, नीस।
विरुद्ध आहार	: जैसे दूध और मछली।

पथ्य (ग्रहण करने योग्य चीजें)

(अ) सीमित मात्रा में लें : चावल, आलू, नारियल, मीठा सेब व मीठा आम। सफेद वस्तुएं जैसे दूध, दही, छाछ, केला, चावल आदि लेना तो तो हल्दी द्वारा रंगीन करके ले ताकि सफेद वस्तुएं सीधे भीतर न जा सके। चावल में हल्दी और दूध में चाय की पत्ती मिलाकर ले सकते हैं। तली चीजें या पकोड़ी आदि नहीं में एकाध बार।

(ब) विशेष पथ्य : बेसोक-टोक लिए जाने वाले पदार्थ - काला चना, चुकन्दर, गाजर, पीपीता, अंजीर, खजूर आदि। काले तिल, चोकर सहित आटे की रोटी पाचन शक्ति के अनुसार, चने की रोटी या बेसर की रोटी शुद्ध यी डालकर खाना, चिंचडी, मूँग, बादाम, किशमिश, मीट। सन्तरा, अनार, परबल, करेला, तोरई, लीकी, हरी मिर्च, बशुआ, पारसली, सीलेरी, सलाद, मूली, अनमोद, केसर, चन्दन, हल्दी, छोटी हरड, विजयनार, अमलतास का गूदा, भूंगरास, चिफला, शहद, नीम की कोमल वत्तियां भी सामान्य पथ्य हैं। बिना दूध के चाय भी पथ्य सिद्ध हुआ है। इस रोग में खान-पान सात्विक और शुद्ध रखना चाहिए।

वास्तव में कोई भी रोग असाध्य नहीं है। आयुर्वेद के अनुसार बात, पित्त और कफ का संयोजन बराबर नहीं होने से रोगों की उत्पत्ति होती है, ऐसोपीयिक द्वाइयों में साइड इफेक्ट बहुत अधिक होता है जबकि आयुर्वेद का इलाज थोरे अवश्य होता है लेकिन रोग को नहु से मिटा देता है।

आप ऊपर लिखे इलाज अपने परिवार के सदस्य अथवा किसी अन्य के लिए अवश्य करें लेकिन विशेष बात का ध्यान रखें की खान-पान की शुद्धता अवश्य रहनी चाहिए औन्यथा अच्छे से अच्छा उपचार भी बेकार हो जाता है। अपने अनुभव परिका कार्यालय को अवश्य भेजें।

**कुण्डलिनी जागरण, समस्त चक्र
जागरण एवं सहस्रार जागरण की
दीक्षा प्राप्त कर चुके साधकों के लिए भी
एक महत्वपूर्ण लेख.....**

कुण्डलिनी जागरण की प्रत्यावर्ती दीक्षा

सहस्रार मेवज, कुण्डलिनी जागरण दीक्षा थादि योग
का इशान है तो प्रत्यावर्ती दीक्षा उसका विकला।

.... और विज्ञान भी तो यही कहता है कि एक वज्र
के सम्पूर्ण हीते पर विशुद्ध प्रवाह की सतर्कता है।

यदि मैं यह कहने का साहस करूँ, कि कुण्डलिनी जागरण की
क्रिया अपने अथ से इति तक के ब्रह्म भाव यात्रा है तो क्या योग
के अध्येता मुझे क्षमा करें? मैंने इसे भाव यात्रा की संज्ञा के ब्रह्म
इस कारणवश दी है, क्योंकि कुण्डलिनी जागरण की प्रथम
स्थिति में व्यक्ति का जो ब्राह्म स्वरूप रहता है, वही अंतिम
स्थिति के ब्राह्म भी रहता है, जो परिवर्तन होता भी है वह के ब्रह्म
आंतरिक एवं भावनात्मक ही होता है न कि शारीरिक अथवा
भौतिक। किन्तु कुण्डलिनी जागरण के प्रथम चरण में व्यक्ति
का जो मानसिक वित्तन रहता है वह अंतिम चरण तक निश्चित
रूप से परिवर्तित हो जाता है, भले ही अन्यान्य स्थितियों में
कोई विशेष परिवर्तन न आया हो। अतः जो साधक चक्रों, उन
पर स्थित पद्म बलों, उनकी पंखुडियों की संख्या आदि को ही
कुण्डलिनी का पर्याय मानते हैं उन्हें कुछ खिलना अवश्य हो

सकता है। कुण्डलिनी जागरण किसी अनुभूति, रीढ़ की छड़ी
में सनसनी, उन्माद या गुदगुदी का पर्याय नहीं है यथापि अनेक
साधक ऐसी अनुभूतियां न होने पर खिलते हो जाते हैं, कि उनकी
तो कुण्डलिनी जाग्रत हो ही नहीं रही। ये कुण्डलिनी जागरण
के ब्रह्म में आने वाली तुच्छ और हव वशाय हैं जिनका 'अनुभव'
दृढ़ स्नायुमंडल के साधक अथवा दृढ़ मानसिक शक्ति एवं
आत्मबल के साधक प्रायः नहीं कर पाते हैं।

मैं यह भी कहने का साहस करना चाहता हूँ, कि कुण्डलिनी
शक्ति व्यक्ति के गुदा स्थान के समीप कुण्डली मार कर बैठने
वाली कोई सम्पीड़ा भी नहीं है। मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर
इत्यादि चक्रों की अवधारणा का कारण मात्र इतना है, कि इनके
रूप में व्यक्ति के जीवन की विधि स्थितियों की कल्पनाएवं
विवेचना की गई है। उदाहरण स्वरूप मूलाधार जहां व्यक्ति की

उस आध्यात्मिक साज का
अर्थ ही क्या? जो पुल जीवन में प्रवेश न कर
रहा हो, जिससे साधक ही कैबल आया।
भीतिक जीवन संवाद सके बरत् समाज में
लग्यों—हाथ लेयों का सार्विरक्ति कर
एक... कृष्णलिङ्गी जगरण की प्रत्यावर्ती
दीक्षा द्वारी की एक सफल चेष्टा होती है।

सामान्य जीवन यापन की स्थित है वहीं स्वाधिष्ठान उसके प्रजनन क्षमता की। मणिपुर यदि सांसारिक इन्हों की स्थित का नाम है तो अनाहत वह बिंदु है जहां से व्यक्ति की आध्यात्मिकता प्रारंभ होती है। प्रत्येक स्वीकृति का अर्थ यह होता ही है किसी में सुन समझ्या में किसी में जागत में। अनाहत ही वह स्थान है जहां से भोग एवं योग में अंतर स्पष्ट होता है। विशुद्ध चक्र, जिसका स्थान अनाहत के बाद माना जाया है, वही व्यक्ति भोग से कुछ विरक्त होकर योग की ओर बढ़ने लगता है तथा आज्ञा चक्र जीवन की वह स्थित है जब व्यक्ति भोग से भी कुछ विरक्त हो जाता है किन्तु योग के माहे में (अर्थात् योग की सिद्धियों, शक्तियों आदि के मोह में) आबद्ध होने लगता है। यह स्थिति भी पूर्ण नहीं मानी जाती है।

योग का मोह भी एक प्रकार से मोह ही तो है अतः सदगुरुदेव इसके भी ओग सहस्रार चक्र तक की यात्रा अपने शिष्य एवं साधक को सम्पन्न करवाते हैं।



सहस्रार ही कृष्णलिङ्गी जगरण की प्रथम और अंतिम स्थिति है। यह सम्पूर्ण क्रिया मन्त्रिष्ठक मंडल में ही चरित होती है और यही कारण है, कि साधक किसी भी चक्र के जगरण की स्थित में क्यों न हो, अथवा कृष्णलिङ्गी जगरण का कोई भी चरण दीक्षा में क्यों न हो, अथवा कृष्णलिङ्गी जगरण का कोई भी चरण दीक्षा में क्यों न ग्रहण कर रहा हो, पूनरपादगुरुदेव उसके आज्ञा चक्र एवं सहस्रार मंडल को ही अपने अंगुष्ठ-स्पर्श, पदाधात या दृष्टिपात से लग्या करते हैं।

जिस द्वाण साधक मूलाधार से आज्ञा चक्र तक की मन स्थिति सम्पूर्ण कर लेता है तब उसके अन्तर्मन व बाह्य मन में एक प्रकार का विस्फोट जैसा होता है, क्योंकि तब तक उसकी समस्त चेतना, उर्जा एवं मनोभावनाएँ परिवर्तित होकर उस अद्वितीय तत्त्व से एकात्मता अनुभव करते लगती है जिसे ब्रह्म, ब्रह्मानन्द, निर्विण एवं इसी प्रकार से अन्यान्य संज्ञाएँ एवं विश्लेषण द्विए गए हैं और जो मूलतः एक निश्चाकाय निरपेक्ष तत्त्व ही है। इसे ही समाधि भी कहा जाया है। सहस्रार जगरण की इसी अन्तीक्रियक स्थिति का वर्णन शास्त्रकारों ने इस प्रकार ले किया है, कि तब व्यक्ति सहस्र दल पदम से निश्चरित अमृत का पान करने लगता है। वस्तुतः तब साधक अपने आप में छिपी अनेत शक्ति, जान व आनन्द के रहस्य एवं उद्घाम के अन्तर सम्मोप होताहैं और इसी के आहार में वह तुम, संसार से विरक्त, निरुपूर्ण और ग्राह्य जड़ भी हो जाता है।

किन्तु सदगुरुदेव की क्रिया मात्र इतना है नहीं होती कि वे

प्रत्यावर्ती दीक्षा अथवा जो जीवन के प्रति आवार्तित हो साधक को मोक्ष व दोषों ही उपलब्ध कराने ने समर्थ हो....

अपने साधक को ब्रह्मानन्द का अनुभव करा दें, वरन् वे उस स्थिति का स्वरूप कराकर पुनः उसे वास्तविक एवं व्यवहारिक जीवन में वापर लाने की क्रिया भी समर्वज्ञ करें हैं। यदि वे ऐसा न करें तो कोई गृहस्थ साधक फिर कुण्डलिनी जागरण का व्याप ले ही नहीं सकता, क्योंकि वह सबसे तो ब्रह्मानन्द में निमग्न हो जाएगा और उसका पाश्चात्यिक जीवन छिन्न-भिन्न हो जाएगा। न केवल गृहस्थ साधक वरन् सन्तान साधक भी कुण्डलिनी जागरण की सहायता दशा में अधिक समय तक अवस्थित नहीं रह सकते क्योंकि वह तो नितिकल्प समाधि की वह दृश्य होने है जिसके विषय में मठापुरुषों का कथन है, कि उस दृश्य में देह इन प्रकार से पात्र दिन में समाप्त हो जानी है, जिस प्रकार पेड़ रो भूम्बा पता गिर जाता है।

अनेक साधकों को, जिन्होंने कुण्डलिनी जागरण दीक्षा, सम्पूर्ण चक्र जागरण दीक्षा अथवा सहसार जागरण दीक्षा कई माह या वर्ष पूर्व नी है, यह जिजाता ही सकती है कि उन्होंने तो उपरोक्त दशा का प्रत्यक्षीकरण नहीं किया। इसका समाधान कठात्तिन यही ना सकता है, कि प्रथमले, तो गुरुदेव ने अपने घोगबल से ऐसी स्थिति किन्हीं विशेष कारणों से भी संतुष्टित कर रखी है, द्वितीयतः, सहसार जागरण आदि दीक्षाएं प्राप्त करने वाले साधक भी उसी विद्यार्थी की ही भाँति हैं जिसे उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश लो मिल गया है किन्तु जो आभी उत्तीर्ण नहीं हुआ है।

कुण्डलिनी जागरण की प्रत्यावर्ती दीक्षा उसी प्रकार की उत्तीर्ण होने की क्रिया है, क्योंकि जिस शक्ति का जागरण या समुद्रण व्यक्ति के मन-मन्त्तिक में ही ढुका है, उसे किस प्रकार रचनात्मक मोड़ दिया जाए, यह समझाना और सम्पादित करना

पुनः गुरुदेव की ही क्रिया ही राखनी है। अत्यन्त प्रकृति के साधकों में वे ये क्रियाएँ असेहे उन्होंने रूप से सम्पूर्ण करते हैं अथवा सहसार जागरण तक की स्थिति के बाद दिना साथक को किस चक्र पर पुनः वापस ले जाना है, इसका निर्वाचन वे ही करते हैं। सरल उदाहरण के रूप में इसे यूं भी समझा जा सकता है, कि जिस प्रकार पहले पानी को उचाव देकर आरं चढ़ा दिया जाता है और उसके बाद ही उसका नमान रूप से नोड प्रवाह के साथ उपयोग किया जा सकता है, उसी प्रकार अन्तरिक अस्ति को पहले द्वाव के द्वारा थेहता व उचाता प्रदान की जानी है आरं पुनः वही अस्तित्व वेग और प्रवाह के साथ सभी ओर समान रूप से वितरित हो सकती है। कुण्डलिनी जागरण का यही रहस्य है। यही कारण है, कि कुण्डलिनी जागरण की क्रिया से युक्त व्यक्ति के लिए जीवन के यभी पक्ष न केवल नहान ही जाने हैं वरन् येठ भी ही जाने हैं। किन्तु इसके लिए आवश्यक है कि व्यक्ति कुण्डलिनी जागरण, या इसी कोटि की अन्य उच्च दीक्षाओं के बाद कुण्डलिनी जागरण की प्रत्यावर्ती दीक्षा से भी युक्त हो। प्रत्यावर्ती दीक्षा वास्तव में आध्यात्मिक शर्तेयों से युक्त होकर पुनः भौतिक एवं सांसारिक जीवन में थेष्टा व प्रामाणिकता के साथा प्रवेश करने की विश्व घटना है।

अंत में इस बात की चर्चा करना भी अमीचीन गहना कि क्योंकि पूज्यमातृ गुरुदेव प्रायः दीक्षा प्रदान करने के उपरान्त भी अनुभूतियों को स्वत्तमित कर देते हैं? इथान रहे कि गुरुदेव शक्ति के प्रवाह को स्वत्तमित नहीं करते वरन् केवल तत्त्वसम्बन्धी अनुभूतियों को ही स्वत्तमित कर देते हैं जिससे साधक के विकास का कम आवश्यक न हो जाए। करोगान में जबकि अनुभूतियों द्वारा किसी स्वाधाना अथवा दीक्षा में सफलता जा पायी जा सकती है, साधकों द्वारा यह येठ युक्त भी अवश्य जाय सकता है, किन्तु अन्ततोगत्वा यह होता है शिष्य के लाभ के लिए ही। केवल उसी प्रकार से शिष्य को अध्यात्म के उत्तरोत्तर विकसित होते आयामों से परिचित कराया जा सकता है अन्यथा क्षुद्र अनुभूतियों को प्राप्त कर तो योग की उन्नतम स्थितियों पर आकृद साधकों द्वारा भी पतिन छोते देखा जावा है।

ऐसा करना ठीक उसी माली की क्रिया की भाँति है जो असमय कि वृक्ष पर फल आ जाने पर उसे तोड़ देता है जिससे वृक्ष का पूर्ण विकास हो सके।

होली महापर्व पर आह्वान सद्गुरुलदेव का

कस्तुम आजाओ

मार्च १८ की होली और सद्गुरुलदेव ने आह्वान किया था शिष्यों को, उनके साथ सशारीर होली पर्व हेतु, उस आह्वान में जो पत्रिका के मार्च १८ के अंक में आया था उन्होंने बातों ही बातों में कई बातें कह दी जिसे उस समय शिष्य समझ नहीं पाए कि वह महानिर्बाण से पहले की आखिरी होली है, वह आह्वान पूरे मन आत्मा शरीर को लकड़ीर बेने वाला है, वही आह्वान माज पुनः आपको किया जा रहा है कि आप जोधपुर गुरुदाम आकर गुरु परिवार के साथ होली साधना पर्व सम्पूर्ण करें। सद्गुरुलदेव द्वारा दिए गए इस महान आह्वान के एक-एक शब्द को ध्यान से पढ़ें, समझें और एक-एक शब्द को हृदय में उतार लें-

मेरे प्रिय शिष्यों,

शुभार्थीयों !

आज पुनः गयोग उपस्थित हुआ है, कि मैं तुमको, तुम सभी को सम्बोधित कर रहा हूँ। यूं तो मैंने तुम में से प्रत्येक को अपने जीवन के प्रत्येक धारण में सम्बोधित किया है। कभी तुमने मेरा स्वर सुना है, तो कभी अनन्युना कर आये बढ़ गए हो, किन्तु मैं इन सभी धारों को छाड़ जो कुछ कहने के लिए इन पत्रों के माध्यम से तुम्हारे भ्रमश आ रहा हूँ, उसे अनन्युना मत कर देना, क्योंकि वह संयोग व अवश्यर उपस्थित हुआ है होली जैसे महापर्व के सभीष आ जाने से और होली पर तो सभी सम्बन्ध क्षीण पड़ जाने हैं, मर्यादा भी कुछ विश्राम लेने चली जाती है, और रह जाता है तो मेरे व तुम्हारे मध्य रसेह का, अपनत्व का एक कोमल सा तंतु, जो केवल इस जन्म से ही नहीं पिछले कई-कई जन्मों से जुड़ा है और तुम चाहो या न चाहो, जुड़ा ही रहेगा। कम से कम मेरी ओर से तो इसमें कोई

व्यवधान न आएगा, शेष जैसी तुम्हारी भावना.....

होली का पर्व तो तुमने मेरी उपस्थिति में कई बार मनाया है और भीजे हो रहों में, खिल उठे हो गुलाल में आखों में चुनि भर गई है अबीर की। साधनाएं भी सम्पूर्ण की हैं तुमने, इस चेतन्य रात्रि में उत्सव भी मनाया है, सर्व की स्वर्णिम रथियों को भी कुछ धूमिल करते हुए मेरे साहचर्य में, अपने हृदय के उद्घाटके साथ। आशा करता हूँ, कि कोई भी क्षण विस्मृत न हो सका होगा तुम्हारी स्मृति से, क्योंकि व मात्र वह नहीं थे।

रंग में भी उनके तुम्हारे जीवन के सामाजिक क्षण थे।

ग्रन्थ कह रहा है तुम्हारे सामाजिक क्षण वे वे, जो योकि अपने हातों संन्यासी शिष्यों को उन धरणों से एक प्रकार से कहूँ तो विचिन करने उन क्षणों का तुम्हारी समृद्धि की अनमोल पूँजी बनाने की चेष्टा की थी। चेष्टा की थी, कि मैंने अपने हृदय की समस्त आवाजों, अपने समस्त आशाह, अपनी उच्छ्रवास और साथ ही साथ अपने तप अंडे को जूलाल सुम झरी के अन्तर्गत पर मल दिया है, वह गणिता व ऐश्वर्य की आभा बनकर तुम्हारे कपोलों पर राता-सर्वदा के लिए रिश्वर हो जाए। मेरी तो वह भी आज्ञा थी, कि मैंने अपने प्रेम के रंग में तुम्हें जो स्वराधार कर दिया है, वह अशुद्धवाह बन तुम्हारे नेत्रों से तुम्हार हृदय में वति-टेस के रंग की सी गुणवत्ती धूप हो जाए, तो वही गुरु के प्रति प्रेम रूपों टेस की सुगंध प्रत्येक ज्ञान-प्रवृत्ति के ग्राफ आ-जा कर न केवल तुम्हें वरन् तुम्हारे आत्म-पाता के समस्त दानावरण को भी सुखभित कर सकेंगी और ऐसा सब रामब बाने पर फिर यह असंभव ही न होता, कि तम रथय मुद्दास मिलने के बहाने न खोजने लग जाते। मझे इस प्रकार कहने-बुलाने की विवशता न रह जानी।

मैं नहीं जानता, कि तुम्हारी विवशताएं क्या हैं? वे तुम्हारे भावितक जीवन की विवशताएं हैं अथवा स्वयं तुम्हार ही द्वारा निर्धारित तुम्हारे भनन की विवशताएं, किन्तु कहीं न कहीं कोई न कोई अटकाव तो है ही अवश्य। तुम मेरे जूलाले पर यदि आते हों तो बेजान से, उदास ने, डिटके हुए एक और खड़े रह जाते हो। अधिक ये अधिक यहीं कर पाते हो, कि मेरे चरण स्पर्श कर फिर पाना नहीं दुखों की कान भी गटारी मिर पर लाए, पांवों को घराटत हुए वास्तु उर्सी जीवन में खो जाते हो जहां मैं तुम्हें खींचता हूँ। होली का उल्लासमय पर्व सम्मुख है, ये यह यदि कह कर तुम्हारी उदासी को समर्नता की ओर बहाना नहीं चाहता और यह तो यह है, कि ऐसा सब कुछ तुमसे भी अधिक मेरे लिए उदासी की बात है, मेरी खिचता और चिन्ता की विषय वस्तु है।

मैं समझ नहीं पाता, कि आब और क्या करूँ, कि तुम्हारे चेहरे पर स्पृश रहने वाली मुख्लियत को मैं निहार सकूँ..... तुम्हारी मुख्लियत ही मेरे जीवन की पूँजी है, यह बात आथवा तुम आज न समझ सकते। यदि ये यह हो तो मेरी इस बात पर कभी विवार बदले नहीं देता। कभी जीवन में इनमें अवकाश निकालना, कि मेरी इस बात को समझ सको।

जहां तक मेरे पद्म की बात है, मैंने तो इस बात पर अपने जीवन के प्रत्येक धारण में विचार किया है और अग्रे भी करता

रहूँगा, कि वे क्षण उपाय हों, कि मेरे शिष्यों के जीवन में पूर्व समृद्धि, पूज्वर्य, विन्नन और सबसे बड़ी बात यह, कि तुम्हि आ सके। तुम्हारा गुरु होने के नाते यह मेरा वाचित्य और कर्तव्य भी है और इनसे भी बढ़कर मेरे हृदय की पीड़ा भी बर्योकि यदि आज तुम मेरी उपस्थिति में यह कला न सीख सके, जीवन के प्रत्येक क्षण को पूँजी आनन्द के साथ जीने का रहस्य न जान सके, तो कल किसने देसा है? मैं भी तुम्हारी ही भानि अपनी गुरु-आज्ञा से बहु एक शिष्य हूँ। बन मेरे गुरुदेव मुझे क्या आज्ञा दे देंगे कल वे मुझे कहा भेज देंगे अथवा अपने समीप सिद्धाश्रम आने की आज्ञा दे देंगे, इसके विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

यह तो उनकी ही कोई इच्छा है और जीसा कि मैंने प्राप्तम से कहा, तुम सभी का सामाजिक है, कि मैं तुम्हार मध्य हूँ। ऐसा कह कर मैं अस्त्र प्रशंसा की चेष्टा नहीं कर रहा, किन्तु कभी न कभी तुम्हें मेरी इस बात के मर्याद अहंकार होनी थी। विधि का पता नहीं क्या विधान है, कि जब हमारे जीवन में किसी बात का अधार दो जाना है, तभी उसकी उपस्थिति का महत्व अंक पाते हैं, भानो ऐसा अभाव ही मूल्याकृत कर मापदंड है।

किन्तु विधि का जो भी विधान हो, काल बड़ा ने जो कुछ भी अंकित कर रखा हो, मैं उत्से आबद्ध व्यक्ति नहीं हूँ। यदि मैं यह कहता हूँ, कि मैं तुम्हारा केवल इस तन्मय में ही नहीं, पिछले कई कई जन्मों से गुरु रहा हूँ, तो यह भी कहने की क्षमता रखना हूँ, कि तुम्हारी दुर्भाग्य लिपि को मेटने की क्षमता भी मेरे पास है। तुम्हारे जीवन के अभाव, निराव, दुख, दैन्य, पीड़ा या जो कुछ विसंगति जैसा तभी श्वय ही निर्धारित कर रखा है, उसे भी समाप्त करने की किया भेज पा है। तुम्हें बाह-बाहर अपने समीप बुलाने का कारण ही मात्र इसना है, कि मैं तुम्हें कुछ प्रदान कर सकूँ।

कुछ प्राप्त करने के लिए चलकर तुम्हें ही तो गुरु के द्वारा नक आना होगा न? यदि तुम स्वयं को भेज शिष्य मानते हो तो इस शिष्य के कर्तव्य का पालन तो तुम्हें ही करना पड़ेगा। मैं तो तुम्हें अधिक से अधिक इस कर्तव्य का पालन करने के लिए सचेत कर सकता हूँ, तुम्हें आवाज दे सकता हूँ, शास्त्रोक्त भव्यादा का उल्लंघन करा स्वयं तो तुम्हारे समीप नहीं आ सकता। और यदि तुम केवल इनमें ही कर्तव्य का पालन कर लो, तो किर लौटते समय तुम्हारे पांग उस तरह नहीं विस्ट रहे होंगे जिस तरह से चलकर तुम मेरे पास आए थे, तुम्हारे चेहरे पर वह बुझा-बुझा सा भाव नहीं होगा, जो तुम्हारी भानों निर्धारित बन गई हो, किन्तु मैंने तुम्हारी इस शियति को बदलने

विशेषकि जब तक स्निग्ध न होगा तुम्हारा मन तब तक
मेर द्वारा की गई प्रेम की वधा भी कहां टिक पाएगी?
वह तो तुम्हारे दग्ध मन पर पड़ बायज बन बार बिलोन
हो जाएगी।

एक नये दंग से, एक नये रूप में, एक नवीन परम्परा
में होली मनाने के लिए बुला रहा है, मैं तो तुम सभी
को! बहुत हो चुकी कृतिम रंगों को धारी मैं घोलकर
एक दूसरे पर कंक रेने की होली। बदल तम को लिंग
वेन की होली। अब तो जो होली होगी, जिस में तुम
सभी के बीच सुनित करना चाहता हूँ, विस होली की
परम्परा का प्राप्तग्रह करना चाहता हूँ, उसमें जो रंग
होंगे उनमें छूली-मिली होगी शील व संतोष की
कल्पर..... और जग तो इस जगत में संतोष ने एक ही
रहा है- प्रेम का रंग। अंतर केवल इनना ही गया, कि
हमने उसमें शील व सताग्रा की कल्पना भूला
दिया और वही तुम्हारी अत्यन्ति का मूल कालण भी है।

प्रेम क्या है, प्रेम क्या होना है, प्रेम कसा होना
चाहिए, मैंने कह क्या कहा अब आज कहने का बात
नहीं, प्रेम तो अनुभव करने की बात होती है विन्तु
उग्रों के साथ जो अत्यन्त कठिन, सुखीन व
स्निग्ध होती है। यह तो एक कल्पना है और इस वर्ष होती पर मैं
तुम्हें यही कला सिखाना चाहता हूँ।

साधना-सिद्धि के जाल में मन उलझना। वे सब तो मेरे
समझ क्षणांश की बातें हैं। मूल्य बात तो इस कला को
साखने-सिखाने की है, विशेषकि जब यह कला शीख जाएगा
तभी तो मेरे द्वारा तुम्हारे मन पर पही प्रेम व प्रीति की
पिंचकारी का तुम्हें कुछ कुछ अनुभव ही पाएगा, जबकि
जहां शील होगा फिर वहीं संतोष भी होगा, वहीं प्रेम की
स्निग्धता का अनुभव भी होगा तथा वहीं साधना-सिद्धि को
का वास भी हो सकेगा। यह तो एक क्रम की संरचना जैसी की
बात है। केवल कुछ माला चुमा देना ही साधना नहीं होती
और मैं तुम्हें साधना का अब सामर्पण कर दी बना देना चाहता
हूँ। यह क्रम में पहांच के साध्यम से न बना जावगा। इसके
लिए तो तुम्हें आगा होगा और मेरे सभीप बढ़ कर मेरे हाँगिनों
को समझ कर आत्मसात करना होगा.... जिस प्रकार ये मैं
तुम्हें आत्मसात करने वो आतंर हूँ।

तो तुम आ रहे हो न? मुझे तो सदैव तुम्हारी प्रतीक्षा रही
है और सदैव रहेगी भी.....

तुम्हारा ही
तुम्हारा ही

की मन में ठान लो ह और चहोरे पर मली स्थान कालिख के
स्थान पर गुलाल की आमा स्थायी कर डेन के लिए ही तो इस
होली पर तुम्हें आपने सभीप बुला रहा है। एक नये दंग से तुम्हें
निर्मित करने के लिए और एक नये दंग से होली का वर्ष मनाने
के लिए भी....

हर बर्ष होली की तहर इस वर्ष भी तुम्हें केवल अधररात्रि में
कुछ लकड़ियां जलाकर संत्रवत उसके चारों ओर धूमकर अगले
दिन बेजान तरीके से रंग केकाने के लिए जब मैं स्वयं उपस्थित
हूँ तब तो तुम्हें बस थे रंग आपने तन में भी अधिक अपने मन
में उतार लेने हैं। तुम्हें लकड़ियां जलाकर उसमें आपने पाप-
ताप जलाने की भी आवश्यकता नहीं है। वह तो तुम जब मेरे
सभीप ज्ञानोंगे नव भर ही अंतर निरंतर प्रबन्धित योगांशि
में जलकर भरम हो जाएगा।

बहुत जल चुके तुम इस जगत की विषमताओं में, अब
उसको कोइ आवश्यकता नहीं है, तुम्हें तो बस आना है
चन्द्रमा की स्निग्ध आधा में और कर लेना है अपने तन-मन
को शीतल, हो जाना है शुभ्र और पवित्र मेरी ही दृष्टि से धर्षित
होती सभा किरणों में, नृत्य के साथ, संजीत के साथ, हृदय के

द्वांकुल बारिकु द्वांकुल द्वांकुल

शिव महिमा स्तोत्र

पुर्य दंत ने भगवान् शिव की आराधना करते हुए जिस विशेष स्तोत्र को इच्छा वह स्तोत्र शिव साधना का एक अभिन्न भाग है आज भी लद्धाभिषेक शिव महिम्न स्तोत्र के बिना अधूरा माना जाता है यदि इस स्तोत्र को सम्बोध गाया जाए तो अत्यधिक आनन्द की अनुभूति होती है, शिव महिमा को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता लेकिन शिव महिम्न स्तोत्र वास्तव में अद्वितीय स्तोत्र है जिसके पाठ करने साम्राज्य में मानसिक शांति एवं शारीरिक दृष्टि से बल प्राप्त होता है, यदि नित्य इसका पाठ नहीं कर सके तो प्रत्येक सोमवार को अपने घर में भगवान् शिव के विभग्न पाठद शिवलिङ्ग को स्थापित कर उस पर जल, दूध और बिल्व पत्र चढ़ाकर पंचोपचार पूजन कर इस स्तोत्र का पाठ अवश्य करें-

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यथसदृशी
स्तुतिर्व्यादीनामपि तववस्त्रास्त्वयि गिरः ।
अथादाच्यः यवं स्वमतिपरिणामावधि गणन
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥१॥
अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाग्मनसयो-
रत्वव्यावृत्त्या यं चक्रितमभिधते श्रुतिरपि ।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वांचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥२॥
मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् कि वाग्मि सुरगुरोविस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपृणेन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमध्यनवृद्धिव्यवस्थिता ॥३॥
तवेऽवर्ये यत तज्जगद्यवरक्षाप्रलयकृत
त्रयीवस्तुव्यस्तं तु सृषु गुणपित्रासु तनुषु ।
अभव्यानामस्मिन् वरये रमणीयामरमणी
विहन्तु व्याकोशी विदधत इहैके जडधियः ॥४॥

किमीहः कि कायः स खलु किमुपायस्त्रभूक्नं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ।
अतवर्ये शवर्ये त्वत्यनवसरदः स्थो हतधियः
कतकोऽयं काश्चिन्मुखरथति मोहाय जगतः ॥५॥
अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं कि भवविधिरनादत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद भूवनजनने कः परिकरो
यतो मनदास्त्रां प्रत्यमरवर संशोरत इमे ॥६॥
त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैच्छणवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पश्यमिति च ।
रुचीनां वैच्छिन्यादृनुकु टिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमपि पश्यसामर्णव इव ॥७॥
महोक्षः खटवांगं पशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चतीवत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धि वधति च भवद्भूप्रणिहिनां
नहि स्वात्मासामं विषयमृगतृष्णा भमयति ॥८॥

धूवं कणिचत सबं सकलमपरस्त्वदधूवमित्रं
 परो धीव्याधीव्य जगति गदति व्यस्तविषये ।
 समस्तेऽप्यततिष्ठन् पुरमथन तैरित्स्मित इव
 स्तुवजिहमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मखस्ता ॥१॥
 तदेश्चर्य यत्नाद यदुपरि विरचिर्विरधः
 परिच्छेत् यातावनलभनलस्कन्धवपुषः ।
 तसो भक्तिशक्तापरगुणादभ्यां गिरिश यत्
 अव्ययं तप्ये ताभ्यां तत्र किमनुवित्तिर्व फलति ॥२॥
 अवत्नादापाय त्रिभुवनमवैर-व्यतिकरं
 दशास्यो यह बाहूनभूत रणकण्ठूपरवशान् ।
 शिरः पदश्च एवीरचित्तचरणाऽभ्यो रुहबले :
 स्थिराद्यास्त्वदत्तेऽन्तिपुरहर विमुक्तिर्विदम् ॥३॥
 अमृष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
 बलान कैलासेऽपि स्वदधिवसतो विक्रमयतः ।
 अलभ्या पातालेऽप्यलभन्तितां गुश्चिरसि
 प्रनिष्ठा त्वय्यासीद शुभमपवित्रो मुद्दति खलः ॥४॥
 यदुद्दिनं सुत्राम्णो वरद परमो च्छ्रूपिणी
 मध्येश्चके वाणः परिजनविदेयस्त्रिवभुवनः ।
 न तत्त्वित्रं सम्यग्विविभितरि त्वच्चरणयो-
 ने कल्पाश्चुन्नत्ये भवति शिरस्त्वग्यवनतिः ॥५॥
 अकाण्डब्द्याप्तं तदेवासुरकृष्णा-
 विधेयस्यासीद यस्त्रिवनयनविषयं संहतवतः ।
 स कल्पापः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
 विकारेऽपि श्लाघ्यो भुवनभयमंगव्यसनितः ॥६॥
 असिलाश्र्वा नैव वविधिपि सदेवासुरनरे
 निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखा ।
 य यश्वर्णीश त्वामितरस्त्रभाधारणमभूत्
 स्परः स्पर्त्यन्यात्मा न हि वशिष्यु पर्यः परिभवः ॥७॥
 मही पादाधाताद ब्रजति सहसा सशयपदं
 पर्य विष्णोभृत्यन्दूनपरिवरुणग्नं हणग्नम् ।
 मुहुर्द्यौर्त्तिस्थयं यात्यनिभूतजटाताडिततटा
 जगदशायै त्वं नटसि तनु वामेव विभुता ॥८॥
 वियदव्यापी तारागणगुणितफेनोदगमस्त्रचिः
 प्रवाहो वारां यः पृष्ठतलघृदृष्टः शिरसि ते ।
 जगव द्रीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
 त्यनेनवोचेयं शृतभिग्म दिव्यं तव वपुः ॥९॥
 रथः शोणी यन्ता शतभृतिरमेन्द्रो धनुरथो
 रथांगे चन्द्राकर्णे रथचरणपतिः शर दति ।
 दिधक्षोस्त्वं कोऽयं त्रिपुरनृणमाडम्बरविश्वि-

विष्णोऽग्निभूत्यो न खलु प्रतन्नाः प्रभुषिः ॥१८॥
 हरिस्ते साहसं कमलबलिमाधाय पदयो-
 र्यविकारे तस्मिन् निजमूदहरवेवकमलम् ।
 गतो भक्तव्युद्गेकः परिणतिमासी चक्रवपुषा
 त्रयाणां रक्षाये त्रिपुरहर जगतिं जगताम् ॥१९॥
 क्रतौ सुमे जायत्वमसि फलयोजे क्रतुमतां
 क कर्म प्रध्वस्तं फलति पूरवाराधनमृते ।
 अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य कृतवृक्षं फलवानप्रतिभूवे
 श्रुतो श्रद्धां बद्ध्या दुष्परिकरः कर्मसु जनः ॥२०॥
 क्रियादक्षो वशः कृतपतिरधीशस्तनभूता-
 मृषीणामात्विज्यं शरणव सवस्यः सुरगणाः ।
 कृतुभूषस्त्वतः कृतफलविधानव्यमनिनो
 धूवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥२१॥
 प्रजानायां नाथ प्रसभमधिकं रुद्धं दुहितरं
 जतं रोहिदभूतां रिरमायिषुभूष्यस्य वपुषा ।
 धनुष्याणेयान्तं दिवमपि सपत्राकृतममू-
 खसन्ते तेऽयापि त्वजति न मृगव्याधरभसः ॥२२॥
 रुद्धावण्याशंसाधत्वधनुषमहाय तुणवत्
 पुरः प्लुष्टं दृष्टा पुरमथन पृष्ठायुधमपि ।
 यदि स्त्रेण देवी यमनिरत देहार्थवटना-
 दवैति त्वामद्वा बत वरद मृग्या युवतयः ॥२३॥
 अशानेष्वाकीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
 जिताभस्मालेपः सगपि नृकरोटीपरिकरः ।
 अमंगलयं शीलं तव भवतु नामैवयस्त्रिलं
 तथापि स्मर्त्यां वरद परमं मंगलमसि ॥२४॥
 मनः प्रत्यक्ष चित्ते सविधमवधायात्तामस्तः
 प्रहृष्यद्वामाणः प्रमदसलिलोत्सगितदृशः ।
 यदालोक्याद्वारं हव इव निमज्यामृतमये
 दधन्यनस्तत्त्वं किमपि यमिन्नतवित्तभवान् ॥२५॥

अर्थ- पुष्पदल्लतावार्य शिव की प्रार्थना करने लगा - हे हर!
 जो तुम्हारी महिमा का वर्णन नहीं कर पाना, उस मनुष्य की,
 की हुई प्रार्थना जो तम्हाँ योग्य न हो, वे तो ब्रह्मा उद्गितेवता
 भी तुम्हारी प्रार्थना नहीं कर सकते हैं। इसमें सब मृग्या व
 देवता अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार प्रार्थना कर सकते हैं।
 इस कारण हे दुर्घटहरण! इस स्नोऽर्थ से इस जी भी स्तुति का
 प्रारंभ दोषरहित हो । ३।

हे महेश्वर! आपकी महिमा वाणी और मन की प्रवृत्ति से

बाहर है, इन वीणों की प्रवति अर्थात् संसार के सब पदार्थों में होती है, अर्थात् हे शिव! आप से अलग की वस्तुओं को सब कोई जान सकता है, वेद भी सन्देह से ही आपका वर्णन करता है, इसी प्रकार वेद का भी सामर्थ्य नहीं है कि वह आपका प्रत्यक्ष कर सके, तो कौन आपको विनय कर सके या गुण जान सके ॥२॥

‘हे ब्रह्मान्! देवताओं के गुरु ब्रह्मपति की भी प्रार्थना क्या तमको कुछ विच्छय करा सकती है? क्योंकि यह अमृत के तुल्य मधुर और अलंकार सहित वाणियों के करती है। यदि उनका यह रीति है, तो मेरी क्या प्रभुता है? हे त्रिपुरदहन! मैं केवल पवित्र हो जाऊँ, इसी निप ही तुम्हारे गुणों का स्परण किया है ॥३॥

‘हे वह देनवाले शिवनो! आप विश्व की सुष्टि, पालन एवं संहर करते हैं। ऐसा क्रवेद, यजुर्वेद, सामवेद (वेदव्यादी) निष्कर्षस्त्रपत्र से वर्णन करते हैं। इसी प्रकार तीनों गुणों से विभिन्न त्रिमतियों (ब्रह्मा-विष्णु-महेश-) में ब्रह्मा हुआ जो इस ब्रह्माण्ड में आपका वह प्रख्यात (रचनात्मक, पालनात्मक एवं संहारात्मक) ऐश्वर्य है, उसके विषय में खण्डन करने के लिये कुछ बड़लियि अकल्याणभागी (गन्धों) अभागों (नासिरिकों) को भर्तोहर लग्नेवाला पर वास्तव में अशोभनीय या इनिकारक व्यर्थ का मिथ्याप्रलाप (बकवाड़) उठाते हैं।’ ॥४॥

कुछ महापूर्व संसार के अज्ञान निमित्त यह कुतक करते हैं कि यह ब्रह्मा किस इच्छा से, किस शरीर से व किस उपाय और किस कारण से तीनों लोकों को उत्पन्न करता है? क्योंकि तुम्हारे ऐश्वर्य में संसार उत्पन्न करने के लिए कोई सामग्री कुरुक्षेत्र नहीं है ॥५॥

‘हे भगवान्! मूर्खाविज्ञानी जो सात लोक हैं, वे सावधव हैं। इनकी उत्पत्ति क्या किसी से नहीं है? जो अवधव सहित है, वे उत्पत्ति सहित है। किन्तु ईश्वर की कृपा के संसार की रचना सम्प्रव नहीं हो सकती और वहि विना ईश्वर के संसार की उत्पत्ति है तो उत्पत्ति में क्या सामग्री आवश्यक है, जिस प्रकार मूर्ख मीमांसक ईश्वर के होने में संदेह करते हैं, अर्थात् आपके होने में कुछ संदेह नहीं है ॥६॥

‘हे भगवान्! तीनों वेद, सांख्यशास्त्र, योग शास्त्र, शेषमत, और वैष्णवनन इन गांधों के अलग-अलग मार्ग हैं। अपनी-अपनी इच्छा के समूह सार इन मार्गों पर चलने वाले मनुष्य को फल में पहुंचाने योग्य एक तुम्हीं हो - जैसे सौधे वा ठेठ मार्ग में बहती हुई नदियों का सास्त एक समुद्र ही है ॥७॥

हे वरद! आपके घर की वस्तु केवल इतनी ही है। महोक्त अर्थात् ब्रह्म बैल, खटबोग अर्थात् खाट की पाटी, ब्रह्म का कपाल, फरसा, स्त्रिहचर्म, भस्म और सर्प, परंतु देवता ही केवल आपकी कृपा कटाक्ष से वी दुई कुलियों को भोगते हैं, जो विषय रूपी मृगतृष्णा (रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्दरूपी मृगतृष्णा, ब्रह्मप्राप्त मनुष्य को ध्रम में नहीं डाल सकती) ॥८॥

हे त्रिपुराणि! कोई कोई ब्रह्मान इस संसार को स्थिर और कोई अस्थिर और कोई स्थिरास्थिर (मिला हुआ) कहते हैं। इस संसार के स्थिर और अस्थिर और स्थिर होने में प्रमाण न मिलने से बड़े ध्रम में पड़कर मैं तुम्हारी बराबर स्तुति करता हुआ लजित होता हूँ, फिर भी मेरी बकवास डिठाई कर रही है ॥९॥

हे गिरीश! (हे कैलाशवासी शिवजी!) आपके ऐश्वर्य का अन्त देखने को बड़े बत्तन से विष्णु तो पाताल और ब्रह्मा आकाश को गए तो भी आपके स्वरूप को न प्राप्त कर सके। पश्चात बैठकर भक्ति और श्रद्धा से जब आपकी स्तुति करने लगे तो प्रत्यक्ष हुए। क्या आपकी येवा निष्पत्त होती है? नहीं सर्वदा सफल ही होती है ॥१०॥

हे त्रिपुरासुर को मारने वाले शिव! रावण ने आपने शिररूपी कमलों की माला रचकर आपके चरणों का पूजन किया। इस दृढ़ भक्ति के प्रताप से ही तीनों लोकों को बिना परिश्रम से बिना शब्द का कर अर्थात् निष्कण्टक करके अपनी भुजाओं की जो हर समय संग्राम को ढाढ़ती थी, धारण किया ॥११॥

हे भगवन्! जिस रावण ने आपकी सेवा से बड़ी बलवान मुजाओं का समूह प्राप्त कर आपके निवास स्थान कैलाश को भी उठा लिया, फिर जब आपने स्वभाविक पांच के अंगूठे से पर्वत को ढाया तब रावण को पानाल में भी विश्र रहना मुश्किल हो गया। मूर्ख मनुष्य बड़प्पन पाकर अभिमान को प्राप्त होते हैं ॥१२॥

हे वरदेनवालो! आपके चरणों के प्रताप से विभूति को वर्णाभूत करके परम उच्च इन्द्र पद को मी ब्राह्मसुर ने छोड़ दिया तो कोई आश्चर्य नहीं है, क्योंकि आपके सामने जो सिर द्युकाता है वह सब प्रकार से बृद्धि के अधिकारी ही होते हैं ॥१३॥

हे विलोचन! निष्पत्त समय समूद्र मन्थन से हलाहल विष निकला, उस समय वैता और राक्षसों को भय हुआ कि कहीं असमय में ही संसार का नाश न हो जाए। तब कृष्ण कर उनकी रक्षा के लिए जो

आपने काल के समान विष को पान किया, वह विष भी आपके कण में अत्यन्त शोभा दे रहा है। संसार के भय को पूर करने वालों का विकार (नीलिमा) भी अच्छा लगता है॥१८॥

हे ईश! जिस कामदेव के बाप ऐसे प्रबल हैं, देवता, राक्षस, मनुष्यों से व्याप्त इस संसार में बिना आपना कार्य सिद्ध किए कभी खाली नहीं होते हैं, हे शिव! कामदेव आपको भी देवताओं के तुल्य-साधारण लेखने से उस का नाम मात्र ही बाकी रह गया। अर्थात् नेत्राभिन से उसका शरीर भस्म हो गया। जितेन्द्रियों का अपमान बरना लाभवायक नहीं होता है॥१९॥

हे भगवान्! आप तो संसार की रक्षा के लिए नृत्य करते रहते हो अर्थात् राक्षसों को नृत्य के आनन्द में मञ्ज कर उनसे कराते हों। और नृत्य के समय पैर की धमक से पृथ्वी भी संवेद करती है कि 'मैं टूटी जाती हूँ वा पानाल में धूसी जाती हूँ' जिस प्रकार भूजाओं के घूमने से विष्णु के स्थान (आकाश) के तारागण ढुकडे-ढुकडे हो जाते हैं। उसी प्रकार लम्बी-लम्बी जटा को बार-बार झटकारने से देवलोंके मार खाकर कठिनता से धमा रहता है। हे शिव! आपकी प्रभुता बड़ी विचित्र है॥२०॥

हे शिव! तारागणों से चमकता हुआ आकाश गंगा का जल स्मृह जो आकाश पर्यन्त व्याप हो रहा है, यो आप के लिए पर सूखम जलकणों के समान विखता है, परंतु आप ने उन्हें ही जल से समुद्र की तरह इस महाद्वीपाकार संसार की चारों ओर से घेर लिया है, सो हे भगवान्! आपके दिव्य शरीर का महत्व विस्तार इसी दृष्टान्त से अनुमान करने योग्य है॥२१॥

हे भगवन्! नृणालुल्य त्रिपुरासुर को जलमें के लिए आपने इतना आड़वर अर्थात् पृथ्वी का रथ, सारथी ब्रह्मा जी, हिमालय पर्वत का धनुष, रथ के पङ्किये चन्द्रमा और सूर्य, श्रीविष्णुस्ती बाण रचा है। तो क्या त्रिपुरासुर स्त्री तृण तोड़ने को भी हनमे कठिन साधन आपने किए? जबकि संसार का संहार क्षणमात्र में ही कर सकते हैं। समर्थ लोग आपने आधीनों के साथ खेलने से पराधीन नहीं माने जाते हैं॥२२॥

हे विपुरान्तक! श्री विष्णुजी सहस्र कमल तेकर आपके चरणों का पूजन करते समय एक कमल कम रहा देखकर दृढ़ भक्ति से उन्होंने अपना नेत्र निकाल कमल की नगड़ बेकर पूजन पूर्ण कर दिया। श्री विष्णु जी की यह दृढ़ भक्ति सुरक्षित चक्र का सूप होकर तीनों लोकों में रक्षा कर रही है॥२३॥

हे भगवान्! आप ही को यज्ञ का फल देने वाला नानकर और देवताओं में दृढ़ विश्वास कर मनुष्य कठिनख होकर कर्मों

को करते हैं, क्योंकि जब कार्य समाप्त होता है तो आप ही विद्यमान रहते हो यदि कहो कि नह वर्म ही कल देता है तो निश्चय है कि चैतन्य पुस्तकों उपासना के बिना नह कर्म ही फल देने वाले नहीं होते। अपान कर्म मात्र के कलदाता आप ही हो॥२०॥

हे शरणभत्तरका यज्ञ की किया मैं कुशल दक्ष प्रजापति जैर्य यजकान्तर्यज्ञान और निराकरभगवान् ब्रह्मादि देवताओं का समूह और विष्वलदर्शी ऋषि जिसमें यज्ञ करने वाले थे। इन्हें परं भी यज्ञ विगड़ गए तो अश्वर्य है, योहे भगवान्! आपको उश्छ्वा ही से यज्ञ का नाश हुआ। क्योंकि यज्ञ के पलनदाता आप ही हैं। आपकी श्रद्धा में जो किया जाए वह सब नफल होगा॥२१॥

हे नाथ! जिस समय ब्रह्मा लाम के बश ही रमण की इच्छा से अपनी पुत्री के बीछे दीडे नव वह कन्द्या पाप के दर से मृगी बनकर भाग चली। उस समय ब्रह्मा ने भी मृग का रूप धारण कर उसका पीछा किया। उस समय आपने ऐसा अनीति देखकर मृग पर धनुष डाय में लेकर शिकार का उत्ताह किया तो वह ब्रह्मा स्वर्ग तक भागे परन्तु आपके धनुष ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। आपका धनुष ब्राह्म अन्यायियों का पीछा कभी नहीं छोड़ता है॥२२॥

हे भगवन्! आपने धनुषधारी कामदेव को जीव ही भस्म किया, उसका आधा शरीर पैदा कर आपने शरीर में धारण किया। यह लोला देखकर निज स्वरूपाभिमानी पावती जी आपको स्त्री पर आसकत रहमझती है, क्योंकि कामदेव को भस्म किया और किर उत्पन्न कर उपने शरीर में धारण किया। परंतु हे भगवन्! आपने यह देखलगाना यद्यार्थ में सत्य नहीं, क्योंकि यहांने स्त्री अधोरियों होती है, उसके कहने में क्या लज्जा है॥२३॥

हे मध्यन-दहन! जिनके देखने वा सुनने से म्लानि तथा मध्य होता है। जैसा कि यमराज तो खेलने का स्थान खिलाड़ी भूल-पिऊच आदि, आमृतण विता का प्रस्तु शरीर में लगा हुआ, मनुष्य खोपडियों की माला पहने हुए ये सब अमंगल पदार्थ हैं तो भी हे वरद शिव! स्वरण करने वाले का आप सर्वदा मंगल ही करते हो॥२४॥

हे भगवन्! योगीजन प्राणयाम कर और आत्मा को इवद के बीच ठहराकर जिसका वर्णन नहीं किया जा भवना ऐसे सत्त्व को देखकर आनन्द प्राप्त करते हैं। जिससे उनके रोंग स्वें हो जाते हैं और नेत्र तृप हो जाते हैं, भनो असुनस्य तालब में स्वरान कर रहे हैं। वह अनिवंचनीय तत्त्व आप ही का स्वरूप है॥२५॥

हुल्द्यान दिव्यांशी

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रबोग और असंख्य दीक्षाएं
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्धि पैतृव दिव्य शुभि -

पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है। इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाभ्यास' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम ६ से ८ बजे के बीच सम्पन्न होती है। यदि अद्वा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

20.3.2002 बुधवार शेष विवारण कायाकल्प देवघराश प्रयोग

भगवान् शिव का एक नाम वैद्यनाथ भी है। भगवान् शिव के लालश व्योतिलिंग है, जिसमें से वैद्यनाथ धाम एक प्रियद्व शिल्पीठ है। एक बार रावण की घोर नष्टिया में अमन्त्र होकर भगवान् शिव ने उसका एक विवरण त्रिवान किया था। देव आणविश यह उस शिवलिंग विहार के एक देव से जाल लेकर नहीं ले जा सका, और इस तरह वही भूमि में धूम भया और वह रथाम वैद्यनाथ धाम के नाम से विख्यात है। इन भी वैद्यनाथ धाम में अनेक रोमा नित्य दूर दूर से जल लाकर उस पर चढ़ाकर रोगमुक्त होने की कामना करते हैं।

यह भगवान् शिव के वैद्यनाथ स्वरूप की ही माझता है, जिसे साधक स्वयं अपने अथवा किसी रक्षन्त्र के लिए संपन्न कर सकता है। भगवान् वैद्यनाथ की कृपा से व्यक्ति के रोगों का शरन होता है, और काया ऊबालभ्य नाभ का पास होता है। शरीर की पीड़ा, शेष ऐष्ट्र दुर्बलता ये ग्रसा व्यक्तियों के लिए यह कायाकल्प ब्रह्मण है,

जिसमें शरीर हण्ड-पूष समृद्ध नहीं नाता है।

इन दीनों दिवसों पर साधना में माय लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम भव्य होते हैं। १. अपने किसी दो शिष्यों वशीष व्यवहार को (जो एकत्रिक के वशव्यापी है) भ्रष्ट-त्रै-यन्त्र विज्ञान प्रयोग का वार्षिक वदन्त वनकर दिल्ली ग्राम्यमें सम्पन्न होने वाले एक शेष में भरने लाने होते हैं। विज्ञानी सदस्यता वा एक वर्षीय युक्ति २३५/- ही पर्याप्त भवति है। शेष में व्यक्तिगत प्रयोग नव तिक्त, प्रयोग-प्रतिक्रिया भास्त्री (एच. गुटिल वार्दि) आमको दिशानक उपकरण भी जाएगी।

२. यदि अपने विज्ञान सदर नहीं है, तो आप स्वयं तत्त्व अपने जैवी एक शिव के लिए एकिक वार्षिक सदस्यता भवति कर उपरोक्त विलोक्य साधन में भाग ले लेने होती है।

३. प्रवेशका वदन्त वनकर किवें एक एकत्रिक को अद्वा प्रयोगमा जो इस साधन साधनात्मक आन धारा से बोडकर एक पुनीत एवं पुरुषार्थी लव्य करते हैं। वैष्णव प्रयोग से एक वर्षिकर में वशवा कर्त्ता विषयों में ईशारीग विनाश, साधनात्मक विनाश वा लाल है, जो यह वशवा के वशवता वा ये उपरोक्त है। उपरोक्त उपरोक्त वा गर्भी विशुल्क है और एक कृपा द्वाया ही वशवन वशवाम साधक को प्राप्त होते हैं। प्रवेशक की व्यालिकर रक्षि को अपने के वशवता में नहीं होते रहते।

ग्रन्त हुल्द्या दीक्षा

२० ऐसे २५ मार्च तक होती है।

आप यात्रेते विधिविलिंग दिवसों से पूर्व ही अपने व्यालों एवं व्योलिकर वशी कार वैक दुर्गाट (भ्रष्ट-त्रै-यन्त्र विज्ञान के लिए ११५०/- भी इन विवरोंपरहोत्रेवासी दीक्षा की प्राप्ति वाले सकते हैं)। आपका व्यालों वशी वार्षिक सदस्यीय प्रते दिल्ली वैद्यनाथ को वापस ग्राम्यतामें लाने, उस देन्द्रु आप ग्राम्या का शीघ्र-अद्वीतीय भवति। प्रश्न विवेष्मत से मिलने पर वीरा साधनात्मक हो जाएंगे।

21.3.2002 अस्त्रवार शिल्पाश्रम दरशनी। संस्कृति साधना

चिन्हाएँ दिलाये रखने पर्याप्त रूप से दिया रखती है, जहाँ पहुंच पाने वेळाओं के लिए भी अलग और दर्शन है। ऐसे ही तप-घुत चिन्हाओं में योगिराज चिह्नित रखना जो विद्यमान है, आज भी उहाँ उन्नी, कण्ठात, जीवन, भारद्वाज, पुलत्रय ये उच्चकोटि के ऋषि, शक्ति नाथ, मुकु गोरखनाथ जैसे विद्यमान विष्णुलिंग, गणेश और जगत् याति अनेक दिव्यालयों पर उत्पन्न हैं। यहाँ रात वैर्धों कोई थी न नहीं हानी, योनियों के शलील ने निकलने वाल प्रकाश व वहाँ सर समय दिव्य आत्मों बन रखा है। इन्द्र-उत्तर भौतिक वर्गवर्गनाम जैसे नामों की शिखियों के उन्नी शिला पर बेठ वह समधानों के गहनम भूक्ति में विद्यान बदलते हैं, उन्हें आत्मा अन्न जारी बत्त्वा से आनन्दालित करते हैं। चिन्हागत दील, जार कल्पवृक्ष उपने आप में ही कथाकल्प व समस्त इत्तम गीतों को पूर्णर्थ करने वाले हैं। इस प्राप्ति पर विद्युष साधन जी एवं शून्य कुवा से जो शूद्रम रुप में पहचा न सकता है। ऐसी विद्युष कीनि भूमि के दृश्य कक्षा ही नीवन का पृष्ठाना कहा गया है, क्योंकि विद्युष ही वही व्यक्ति लक्ष्य करता है।

22.3.2002 સુફ્રાર શાલેવર લાલી રથાપગ શાધગ

साबर मंत्रों की शक्ति और तीव्र प्रभाव के लिए मैं राखी जानते हैं। ये ऐसे मंत्र होते हैं, जो हमें तो हैं अतपर और बेहो से, परन्तु अल्प ऐसा करते हैं, जो कि अच्छे-अच्छे वैदिक मंत्र भी नहीं कर सकते। नाय समाज के वेगियों के मध्य साबर मंत्रों का लिंगश प्रबन्धन है।

बंजारों की तरह पूमन-फिरने वाले इन नाय योगियोंके पास ऐसे-ऐसे दुलभ
मंत्र होते हैं, लहमी को आवाह करने के लिए-ऐसे अचूक तोतके होते हैं, जो
लहमी को साथक के घर में बास करने के लिए बाध्य होना ही पड़ता है।
यह प्रयोग ऐसा ही प्रयोग है, जिसमें लहमी स्थायी रूप से साथक के
घर में बास कर सके और जीवन में आर्थिक अपाव ऐसी स्थिति पुनः व्याप न
हो।

• दीक्षा जात के सुन में एक प्राचीन लिपि उपर ईशानामार्ग की लंगड़ूरों को प्राप्त कर लीजे ता, जीवन के अन्य तरी अपेक्षित को दूर कर दें ता, जीवन में अद्वितीय बल, साधन, विश्व एवं विभिन्न प्रकार के लाभ लीजे ता, वज्ञान में विभिन्न विद्याएँ लीजे ता।

कुन्त प्रदत्त असिंहाला द्वारा दिला जिये
जावे देखि वाच कीवा प्राप्त आया है। नाम
दियुमना प्राप्त कर लिया है, असीकर कर
अप्पाजान भी। बोलना प्राप्त करने पर
प्राप्त हुआ गया है।

वीरा में आ लेने वाले सभी साक्षकों का जल से जागू आजेतो यह वाले के उपराजन विषय शिलिपाद प्रबल विषय जारू। वह वीरा हुए गोवे विदेशी तो आप ए बोगे प्रदान की जारू। देखा कि उपराजन की बड़ी उत्तेजिती में वह प्रदान विषय जारू।

पीजना क्यन इन दिनों के लिए
छिप्पी पांच व्यक्तियों
की दर्शक उनका बनाकर
उनका डाक भेज लिया जाए
उपकार स्वतंत्रप है पीजना आप
हिंदुओं परम अस्ति उनका

नव दिव्य की यह बोधहाजारा है, कि भगवान् के बिना जीवन में अन्य कुछ भी नहीं है, समस्त साधनाओं और विद्याओं के अधार माल स्फूर्तिव ही है, तो वह अपने हृदय को पक-पक रख में ही उन्हें उत्तर लेना चाहता है। उरके शब्द हात से, कि शह छान में वह गुरुदेव में निमन हो जाए। यह एक प्रश्नार की टट्टपटाल होती है, विरह की चाल परिवा होती है, और यह ये युसु इन्द्रवत्थ धारण विश्वा वही कार्य करती है, जो व्यास को पानी ढापे होते भैन। इस दोषके उत्तराणि विद्या को यह नहीं लगता कि गुरुदेव भूमये दूर हैं। इस दोषके से जब गुरुदेव हृदय में ही रखा जित ही जाते हैं, तो जिस दृढ़ता में लिने वैष्ण श्री विद्या का कल्पायक करने रखते हैं। बसन्त विद्या जीवन का ग्रामपति तो गुरु दोषक से होता है, वरन् इस दोषका लिए बिना गुरुदेव से पर्यं स्वप्न से उठने की किया समर्पण हो नहीं पाती। एक तरह से यह दोषका गाक्षात् गुरु कृपा ही होती है, जो नहीं प्राप्त हो पती है, गव भाईक के अन्दर गृह के प्रति श्रद्धा पूर्ण लोगों का निवारण हो चुकी होती है।

શાલીયત અને ક્રિકેટ

गुरु हृदय धारण दीक्षा

235x5
=Rs. 117.5/-

समर्पित दिनांक 30/07/2018 द्वारा दिल्ली अधिकारी द्वारा दिल्ली - 34 नंबर - C11-7122243 देशी फ़ोन : 011-7196700

गुरुकृपा से प्राण रक्षा

गुरुकृपा से प्राण रक्षा

गुरुकृपा से जिवों की रक्षा पहने में पत्रिका में पढ़ा करता था और आश्चर्य होता था कि गुरु कैसे रक्षा करते हैं। मैं हीली के पवर पर गुरुभास जोधपुर पहुंचा। वहां पर गुरुतेव द्वारा प्रदान की गई नहानल्लुजय दीक्षा एवं त्रिशक्ति दीक्षा प्राप्त की जिस दिन इच्छा होता था उस दिन मूँहे ज्ञेन पर बुलाकर माता जी के चरणस्पर्श का दी नीमाम्ब प्राप्त हुआ। जोधपुर से वापस वर नाने स्थान रासन में हम अन्य गुरु भाईयों के साथ गुरु चर्चा डी करते रहे, मैं पेशी से डाकबॉर हूँ। २० मार्च को मैं सोमा मैं आपने एक लाशों के साथ अपने अस्पताल के लिए ल्वाईयों लेने चला गया। वहां पर हमें दवाई दरीदरे-खरीदते काफी लेट हो गया। हम यहां से गान को बरीच १०.३५ पर कार द्वारा मकर के लिए वापस चल पड़े। मैं डाकबॉर के साथ बाली सीट पर बैठ गया।

अभी हम १५ किलो बले थे कि सामने से एक सुमो गाड़ी आर्ही चिखाई दी। ड्राइवर डिप्पर का प्रयोग करके उसको पास करवा दिया। नेकिन जल अपनी कार की लाइट नेज करके कार निकालने की लोधिया की तो सामने एक ट्रक इसी नजदीक रुहड़ा था कि कार की बोक लगते-लगते ट्रक के गोचे हमारी कार द्वारा गड़ी मेरा रिसर कार के लीडों में लगा और लीडों दूर गया जो आगे के आगे अड़ेर छा गया और कुछ दिखाई नहीं

पड़ रहा था। आगे से कार का इंजन बिलकुल रबरम हो गया और कार की छत जोर से टक्कर लगते टूट कर गोचे लग गई। मैं और ड्राइवर कार में ने मुश्किल से निकले और भडक पर जाकर रुहड़े हो गए। मेरे नाक से खून बह रहा था और रिसर मी सूज गया। मैं यह सारा दृश्य बेखकर बरबर ही आखों में आंख बहने लगे और सीध रहा था कि हे गुरुदेव यह आपकी कथा लीला है। इनना जबर्दस्त हातमा और चोट गमनुरो। कार की हालत बेखकर कोई कह नहीं सकता था कि हमारे कोई जिदा बचा होगा। योहो दूर पर हम एक अस्पताल में पहुंचे और वो घटि बाड़ ही पहुंची बैगरह बांधकर छुट्ठी भिल गई। वह तो चमत्कार ही है मैं नन ही मन गुरुतेव जी त्राश प्रदत्त महामृत्युज दीक्षा का प्रत्येक प्रभाव देख रहा हूँ। हम समय गुरु की याद आती रहती है। मैं गुरुदेव जी को भहरत नमन करता हूँ और यह प्रार्था लेता हूँ कि सर्व जिवों गुरु चरणों में समर्पित रहेगा।

आपका शिष्य

डा. गोवर्धन दास, मकर्यु
निला फिराजपुर-पनाव

गुरु कृपा से पंचांगुली साधना दीक्षा द्वारा अनुभूत फल

सन १४ में धरमपूर्ण भद्रगुरुसेवा से मैंने पंचांगुली दीक्षा सात चरण पक साथ ली थह मेरा अहोगमन था कि उन्होंने



मुझे यह दीक्षा प्रदान की बाद में उनकी अलानुसार दूर रोज मंत्र जप और साधना करता रहता है। नव-जन भी मन में थोड़ा उचाई भाव आ जाता है तो जोधपुर जाकर गुरु श्रिमति का आशिवाद प्राप्त कर साधना करता रहता है।

नववर्ष २००२ में कलकत्ता में हुए अंतर्राष्ट्रीय ज्योतिष परिषद में आगंतिन किया गया वह पर मुझे भास्त धृष्ण अथाई प्रदान किया साथ ही ज्योतिष शास्त्र में की गई विशेष सेवा के लिए रत्नपालक दिया गया नथा नववर्ष २००३ में होने वाली विश्व ज्योतिष परिषद में शमिल होने के लिए कहा गया।

मैं तो यही मनता हूँ कि गुरुदेव ने ज्यो-न्यो साधना और श्रीकांडी उसका ही कहन है कि मुझे यह सम्मान प्राप्त हुआ। ऐसी पूरी जिन्दगी भर शुभतय का मुझे आशिवाद प्राप्त हो। कृपादृष्ट बोने वाले प्रमुखण्डों में प्राप्त हो।

- डी.एम. शेख
न्यू पन्थेल जिला रायगढ़

महाराष्ट्र

तत्र बाधा से मुक्ति

मैं गुरुदेव ने मे प्रत्येक रूप ये अप्रैल २००० में इंटीर शिविर से गुडा उसके बाद मैंने अगस्त २००० में कमला दीक्षा ली। जिससे ६ माह से बन्द भावक पुनः गुरु द्वारा इसके बाद मैंने भैरव साधना और गणपति साधना की लेकिन शत्रुओं द्वारा किये गये तत्र प्रयोग के कारण सफल नहीं हुआ। इसके पश्चात नववर्ष में मैंने तत्रबाधा निवारण दीक्षा ली और अब मेरे कार्य में उल्लिखारण हुई। नये और पुराने दीक्षाओं से इस्त शरीर प्रतिदिन उब मुझसे भिन्न रहे हैं। तथा अपना ईलाज गुरुदेव करवाते हैं। वरन पहले तो मुझे पहले भी नहीं थे। इस इनाम में शरण नी ददाई खा-ल्वाकर लोग परेशान हो चुके हैं तथा ईलाज भी देंगे जो नहीं हो पाना था। गुरुदेव से मेरा विनम्र निवेदन है कि मेरे परिवार पर इसी प्रकार कृपा बनाए रखें जिससे इस शैरिक और सञ्चारिक उल्लिकर सके।

आपका शिष्य
- डाक्टर भगवानी साहू
गणितावन्न जिला रायगढ़

गुरुकृपा से शेष मुक्ति

मैं पिछले तीन साल से काफी बोमार रहा। उसके बाद अपनी ओटी नन्द के माध्य से शाइनहां पुर के एक गुरु भाई से मिला। मैंने अपेक्षा करने पर जोधपुर पर लिख नथा मुझे कलाला नालिनी

साधना का निर्देश दिया गया। वर्ष २००० से मैं मंत्र-यज्ञ विज्ञान से जुड़ी हूँ। गुरु मंत्र एवं ज्ञाना मालिनी साधना से मैं बिलकुल ठीक हो गई अब हमें कोई बीमारी नहीं है। सन २००१ के अगस्त में निविलेश्वरमन्दि सिक्कि साधना प्राप्ति की जिससे मन में बहुत शांति है, हमें सद्गुरुस्वरूप जी का ही सहारा है वे हमारे ऊपर बूपा बनाये रखें।

- श्रीमती तपेश्वरी भारद्वाज
पोस्ट नहिल, जिला शाहजहानपुर

गुरु कृपा से परिवार रक्षा

जीवन में कभी कभी ऐसे प्रक्षेप लुड़ जाते हैं जिन पर भड़का विश्वास करना कठिन हो जाता है युग देव अव्यक्तन मन के माध्यम में कृपा करने हैं अभी गर्भियों की बात है जो खुले अस्तमान की ठंडक पाने के लिए छल पर एक कुर्मी पर बैठ गया, उन असंख्य तरीके के ब्राच प्रभु निखिल की एक छुड़ि बनाने लगा। मन कभी भागकर शिविर में चला जाता था वहाँ चारों ओर गुरु के सानिध्य में पीताम्बर ओढ़ गुरु भाई-बहन नाचते-गाते हथोल्नाम करते नमर आते। वहाँ उन्होंना लगता था कि गुरु द्वारा हमारे न्योहार हैं और उस अस्त्रह मस्ती का करण भी शिर्फ वे हो हैं। मन के इसी क्रम में समय का कुछ पता ही नहीं चला। एकाएक मुझे लगा कि चारों ओर आपके लपटे उठ रही हैं।

मन में ऐसा विचार आने हो छल रो उत्तरकर नाचे जाने का विचार किया नीचे उत्तरकर जैसे ही अपने कमरे में गया तो दिल घक रह गया। पत्नि और बच्ची दोनों गड़बी नींद में थीं, वहाँ पर केशीसान मेल का लैम्प और शिविर जल रहा था लैम्प और पत्नि के बीच बिंक चार-पाँच हजार का पासला था। यदि वह एक कर्यवट भी लेती तो भयंकर हादसा हो जाकता था। मैंने भीर से पत्नी को उठाया और लैम्प को नर ले लिया। यह दृश्य आज भी मेरे मन में अंकित है जो अवश्यक करने वाला है। हुआ थुं शा कि विजली गुल हो जाने के कारण लक्ष्मी लैम्प जलाकर पढ़ रही थी पर नींद आ जाने के कारण ये उसे जलता छोड़कर यो गई है। दूसरी ओर गुरु चरणों में नदामलनक हो गए किम्ब श्वेत उन्दीने छल से ग्रेनाइट देवकर नींद खेला थी। परिवार जो बचा निया। प्रभु ये हमारा निवेदन है कि अपने अभी शिर्षी पर बूपा बना। हमें जिलम् उनका विश्वास और जारूर हो सके। भीर तो अनुभव कर सक कि वे जितने चेतन्य रख रखते गुरु के शिष्य हैं।

- जितेन्द्र नाथ गवि,
फीर मुहमानी पटना-३

Amazing Yantras

The science of Yantras is very great in itself. In the ancient times only when a disciple became perfect in the Shastras, Tantra, Karmakand and Vedas did the Guru impart to him the knowledge of Yantras. This was because only through perfect knowledge could one become capable of not just inscribing mystical figures on pieces of copper and silver but also instilling into them the power of deities. For doing this one needs to be perfect in Mantras and at the same time one needs to have the power of soul in a state of activeness.

A Yantra in fact is not just an inscription with certain geometrical figures. It is a spiritual device that is imbued with the divine powers of a particular deity and it serves the purpose of bringing about the desired result. But most texts prescribe very tough Sadhanas and rituals for making the Yantras powerful and energised, a feat that is virtually impossible for the common man.

Keeping this fact in mind real Gurus themselves get special energised Yantras prepared on auspicious occasions.

There is no need to worship these Yantras daily rather just placing them in the home or shop or business centre brings about propitious results.

Presented here are some very powerful Yantras that have been prepared in astrologically and spiritually very good moments. One can procure any one or all Yantras as the need be.

Kanakdhara Yantra

The most powerful form of Lakshmi, the Goddess of wealth and prosperity, is Kanakdhara. Through Her divine grace Bhagwatpada Shankaracharya made gold rain in the home of a poor woman. Her Yantra is capable of banishing poverty and bringing prosperity in one's home.

Putradha Yantra

Wealth in the house is worthwhile only when there are children to enjoy and make the best use of it. Chil-

dren are considered to be gifts of God and their presence makes a real family. This amazing Yantra placed in the worship place helps the childless bear good children.

Sadhana articles - 300/-

Aarogya Yantra

Even more important in life than wealth is health. If suffering from a grave ailment place this Yantra in the worship place and bathe it with water. Then make the patient consume this water. This is truly a very precious gift for those in the clutches of chronic diseases.

Sadhana articles - 150/-

Vijaya Praapti Yantra

If one is involved in some court case or some dispute with enemies then this Yantra comes as a divine gift. One could carry this Yantra to the court. This turns the case in one's favour and also prevents excess monetary loss.

Sadhana articles - 240/-

Shatru Beadhaa Nivaaran Yantra

Enemies can destroy the peace and happiness of one's life forever. To end all enmities and to prevent the foes from harming the self or one's family this is a very powerful instrument. Just place it at home and become tensionless.

Sadhana articles - 240/-

Vyaapaar Vriiddhi Yantra

Losses in business and stiff competition can lead to loss of peace of mind besides monetary losses. To boost trade and business place this wonderful device in your shop or business centre and see its effect for yourself.

Sadhana articles - 300/-

From the vast list of Yantras we have presented here some chosen few that could prove helpful to everyone. One need not do any Sadhana once these Yantras have been placed at home.

BHAGWATI DURGA SADHANA

Courage and Strength



Man and Nature are not two different entities. Sadhana is just a means of linking oneself to nature and benefiting from the divine powers that exist all around us.

Sadhana also means to activate the divine power that is within and use the same to solve problems of life and rise spiritually.

Also Sadhana does not mean that one has to give up family life or accept a simple poverty ridden existence. In fact Sadhanas are meant to overcome the problems of life like poverty, tensions, enemies, and diseases. Sadhanas not just help overcome problems rather they also instil knowledge, intelligence, happiness in life.

Any person can try Sadhanas and there is no restriction of caste, religion, age, sex or creed.

Among all Sadhanas the rituals of Mother Shakti are considered as most powerful and boon bestowing. This is because the divine mother is easily pleased and she cannot resist the pleas of her children to help them.

All ancient Indian texts prescribe that a person troubled by enemies, problems from state side, court cases and tensions should worship and perform Sadhana of Goddess Mother Durga.

Goddess Durga is an incarnation of kindness and grace whose powerful form destroys evil and all enemies.

This is a Tantra Sadhana and for this one needs special Mantra energised Sadhana articles.

At night after 9 pm on a Thursday have a bath and sit in the worship place on a woollen mat. On a wooden seat place the *picture of the Goddess Durga*. Make a mark of vermillion on the picture.

On a mound of black sesame seeds place a

Chandi Yantra. On its left side place a copper tumbler and over its mouth place a coconut. Near the Yantra place a *Bhelav Gutika*. Light a ghee Lamp and offer Kheer (sweet porridge of rice and milk) to the Goddess. Sit facing the South in the Sadhana.

Then concentrating on the divine form of the Goddess chant thus.

*Om Hrah Om Soum Om Hroum Om Shreem
Kleem Shreejayam Jaya Chandikaa Chaemunde
Chandike Mam Sakal Manoratham Dehi
Sarvopdravam Nivaaray Namoh Namah*

Then all around the Yantra place **21 Taantrokt Phals** in a circle. Then each time chanting the above Mantra offer some black sesame seeds, mustard seeds and vermillion on the Tantrokt Phals.

Then with a *Chandi rosary* chant 11 rounds of the following Mantra

Om Ayeem Hreem Kleem Phat

Chant the Mantra loud and clear. When the Sadhana is over, go to the Goddess for her protection and consume the Kheer. The next day go to some unfrequented place and bury the Tantrokt Phals, Bhelav Gutika, sesame seeds and mustard seeds in the earth. Let the Yantra and rosary remain in the worship place.

There is no place for the weak in this world. Whether one wants to lead a family life or rise spiritually courage is important and this particular Sadhana does just this i.e. instil courage and power in the Sadhak to help him take on all challenges of life with confidence and strong spirit.

Sadhana articles - 450/-

एक दृष्टि में:

लाधना शिविर एवं दीक्षा समारोह

11-12 मार्च 2002

आकाश (आरस्पष्ट)

प्रहाणिव शत्रि साधना शिविर

शिविर स्थल - मनदूर मेदान सिटी सेंटर, मनदूर ४ बोकारो इस्पात
नगर, आरस्पष्ट - 827004

आयोजक - * शीलेन्द्र कुमार 06542-46209, 9835194782 * डॉ.
संयोग कुमार 06542-57362 * प्यास. जा 06542-60514 * डॉ. डॉ.
स्वर्गी 06542-21026 * सनोम डाक्टर 47983 * प्या. प्या. सिन्हा
06542-60017 * प्या. कुमार 20089 * प्या. के. सिंह 0-9835116370
* प्या. कुमी 0-9835123007 * आर. कुमार 06542-79786 * प. के.
सिन्हा 06542-20242 * ओकार 06542-22135 * ए. के. सिंह 06542-
71711 * आर. आर. सिन्हा 06542-79442 * आर. प्रसाद 06542-
49104 * जे. पी. सिंह 0326-273718 * डॉ. प्या. नव 0326-273411
* प्या. के. सिन्हा, एस. सुमन 0326-273705 * आर. के. रघु 0326-
273124 * गुरुदाम साव, पी. आर. भाव 0326-462803 * हरदीप सिंह
0657-439539 * डॉ. प्या. देव, लाल 06546-37802

27-28 मार्च 2002

जोधपुर

होली महोत्सव एवं साधना समारोह

फ्रम पूज्य गुरुबेव डॉ. नाशवण दत श्रीमाली जी की कृपा तले एवं
यत्कलीन माता शगवानी के चरणाशविन्दी तले जोधपुर की विष्वतम
भूमि में आप सभी गुरु भाईहों को ध्यार भरा आमंत्रण, हम तो
केवल आपने हृदय के धारों के द्वारा आप ये निवेदनकर सकते हैं, आप
सभी गदगुलेत्र के आत्म अंश हैं आप अवश्य ही आएंगे। - समस्त
जोधपुर स्टाफ

13-14 अप्रैल 2002

लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

चैत्र नवरात्रि साधना शिविर

शिविर स्थल - जहाज मला पांडे, जोधपुर नद, लखनऊ
आयोजक - * डॉ. नीरा सिंह 0522-372010 * रमेश सिंह 0512-
612016 * नितिन चालिया 0512-359453 * डॉ. पी. शुक्ला 0522-

321541 * दृष्टा कुमार सिंह 0522-761948 (प्या) * डॉ. रघु कुमार,
लखनऊ * प्या आर. मीर्था 0522-731731 * संतोष कुमार नाथक 0522-
763216 * बसन्त श्रीवास्तव 0522-3051630 * आदिश कुमार मीर्था
* अनंद कुमार लखनऊ, * सत्य प्रकाश शर्मा 0522-224838 * संनय
कुमार सिंह, लखनऊ * डॉ. के. सिंह लखनऊ * विनेन्द्र कुमार साहू,
लखनऊ * राजकुमार लखनऊ, दीनापुर * डॉ. के. ठंडन, गाँगरामपुर,
सन्दील कुमार ठंडन, 05842-27217 * डॉ. डॉ. चतुर्वीदी, टडा * गण सिंह
शठील, लखनऊपुर शिविर * डॉ. रामेश्वर गुरुना, बाराबंकी * अच्छे लाल
यादव, कैनाबाद * राजेश भवारिया, रायबरेली * प्या. सौ. सिंह,
रायबरेली

19, 20, 21 अप्रैल 2002

निखिल जयन्ती समारोह एवं महाभाष्या शक्ति साधना शिविर
शिविर स्थल - चिवरणी सामुदायिक भवन आर. डॉ. ओ. आफिस के
पांडे, व्यापार विहार, बिलासपुर, (छत्तीसगढ़)

आयोजक - * सर्वश्री आर. डॉ. सिंह 07818-33343 * लैकेश
शठील 07752-44995 * आर. आर. साहू 07752-52273 * प्या. आर.
विनेन्द्र 07752-44015 * राजकुमार शुक्ला 07752-44429 * के. के.
निवारी 0771-242680 * तिलेश नेही 0771-534279 * गंगाराम बाहू
* सेवाराम बर्मा 7721-64348 * धूब बन्द्राकर 07742-333718 *
राधेश्याम साहू * आर. के. बोनी * अखिल बैस 07759-21636 *
बा. नेवार 07759-24430 * चंतोप सोनी 07819-45845 * डॉ. के.
जपा 07759-42230 * स्वामा चन्द्रा * लैकेश के. अवस्थी 0771-
323003 * तुवराम पटेल * विनोद साहू * डॉ. डॉ. डॉ. सिंह 07818-
33311

11-12 मई 2002

कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश)

द्रजेश्वरी साधना शिविर

शिविर स्थल - नगर पालिका मेदान, कांगड़ा हिमाचल प्रदेश

आयोजक - * आग प्रकाश शर्मा, नगरोदाय शुरिया 01893-65174 *
आर. प्या. मिन्हास, पालमपुर 01894-38356 * आर. प्या. वधवाल
01992-22945 * जान चन्द्र एडवेक्ट, पुमारी 01918-55283 * के.
डॉ. शमा, मंडो 01907-66930 * कुमाल सिंह गुलेश्वरा, नगरोदाय शुरिया
01893-65184 * कनल घर्माला 9817015520 * शीलेन्द्र बेरी
(उली), बिलासपुर 01978-44500 * चन्द्रेश्वर पंडि पाटी, लोनन
01972-48661 * सोहन लाल, धुमारवी

रजिस्ट्रेशन नं. 35305/81

With Registrar Newspapers of India
Posting Date 14-3-2002

A.H.W.

Postal No. RJ/WR/19/65/2002

Licence to Post without Pre payment

Permit No. RJ/WR/PP04/2000

माह : मार्च में दीक्षा के लिए निधारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न निर्दिष्ट दिवसों पर साधकों से गिरेंगे व. दीक्षा प्रदान करेंगे।

इच्छुक साधक निधारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

निधारित दिवसों पर ये दीक्षाएं प्राप्त: 11 बजे से 1 बजे के

मध्य तथा साथं 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जायेंगी।

दिनांक

20-21-22 मार्च 2002

स्थान

सिद्धाश्रम (दिल्ली)

दिनांक

24-25-26 मार्च 2002

स्थान

गुरुदाम (जोधपुर)

वर्ष — 22

अंक — 2

संपर्क

ग्रन्ति-तंत्र-विभाग, द्वीप श्रीमती मार्ग, हॉटेल सेट लॉन्गेज, जोधपुर-342001 (राजस्थान), फोन: 0291-432209 टेली फ़ोन: 0291-432010

सिद्धाश्रम, 306, अंडेहाट एवलेप, वीतमपुरा, जड़ लिली-34, फोन: 011-7162248, टेली फ़ोन: 011-7195700



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

